--अक्षत शर्मा 'अन्वेषक'

विषयानुक्रमणिका

भूमिका

"सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥" (ऋग्वेद १०/१९०/३)

विधाता अर्थात ईश्वर ने सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, अंतरिक्ष और अन्य समस्त लोकों को जैसा पहले की सृष्टि में रचा था वैसे ही इस कल्प में रचा है। अर्थात ईश्वर कल्प कल्पान्तरों में ऐसे ही सृष्टि की रचना करते हैं। ईश्वर अनादि और अनन्त है।

विषय से पूर्व भूमिका देना सहायक होता है जिससे पाठक और लेखक का एकाकी सम्बन्ध मिलता है। जो लेखक कहना चाहता है वही पाठक समझे यही उसकी अभिलाषा होती है उससे कुछ अन्य नहीं। हालांकि यह विवाह का विषय कुछ क्लिष्ट और जटिल है तो भी प्रयास करता हु सरलता से सब महत्वपूर्ण बिंदु समेट सकूँ। मै बिलकुल कोई विद्वान् नहीं हूँ, अपितु मैंने केवल खोजकर्ता का कार्य किया है और जिससे हर पत्र के हर विषय के कर्ता पर मैंने 'अन्वेषक' नाम डाला है अर्थात खोजकर्ता। उसी रूप में मेरा दर्शन करें।

यह लेख किसी स्वार्थ या द्वेष भाव से नहीं केवल सत्य असत्य की व्याख्या की गयी है, आप पर कोई बात थोपने का प्रयास नहीं है पर अपने विवेक का सहारा लेना और सत्य तक पहुंचना, की ये ही श्री कृष्णा और श्री राम का उपदेश भी है और उनके मानने वालो को भी अनुसरण करना ही उचित है अन्य का नहीं।

जो कार्य मैंने किया वह न बताने का अपराध अवश्य मुझसे हुआ पर अन्य घटक अगर देखे जाए जो इसके साथ समाज मुझसे जोड़ेगा उनमे जो मेरा अपराध मानते है वह सत्य का पक्ष नहीं है. यह सब उपदेश देने का मुझे क्या अधिकार है?

स्मृति शास्त्र का वचन है -

न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न च बनधुभिः। ऋषयश्डक्रिरे धर्मं योऽनूचानः स नो महान ।। ***(मनुस्मृति २.१२९)***

न अधक वर्षो का होने से, न श्वेत बालो के होने से, न अधिक धन से, न बड़े कुटुंब के होने से मनुष्य बड़ा होता है, (ऋषय: धर्मं चक्रिरे) किन्तु ऋषि-महातमाओ का यही नियम है की (यो न: अनुचान: स: महान)जो हमारे बीच में वेद और विद्या - विज्ञान में अधिक है, वही बड़ा अर्थात वृद्ध है।

इसका अर्थ ज्ञान किसी आयु का अपेक्षित नहीं होता वह पुरुषार्थी और अन्वेषक को ही मिलता है और उस सत्य के मिलने से आत्मा को अत्यंत संतोष लाभ होता है.

प्रायः व्यक्ति कहते हैं की यह धर्म उपदेश कलियुग में नहीं चलते. ये तो केवल सतयुग का कार्य है. प्रत्युत यह सीनेमा देखे 80 के दशक के लोगों की ही है जो सत्य-असत्य का निर्णय टी.वी. के डब्बे से करते है. धर्म का उपदेश का अब लाभ नहीं यह मानसिकता समाज को और अन्धकार में ले जाती है.

सत्ये प्रतिष्ठिता लोका धर्मः सत्ये प्रतिष्ठितः । उदधिस्सत्यवाक्येन मर्यादां न विलंघते ।। ***(पद्म पुराण श्लोक 1.18.396)***

भावार्थ: संसार सत्य में स्थापित है और धर्म सत्य में स्थापित है. सत्य से ही सागर अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं करता.

सत्य जब समझौता कर लेता है तब समाज में दुष्ट और बढ़ते हैं जिससे समाज में ही सबका सबसे अविश्वास सा पैदा होता है. जब पहला मनुष्य अपने स्वार्थ से दुष्ट बनता है तो बाकी भी अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए उसे अपना

सहयोगी बनाते है, अपराध से अभय ऐसे गुट फिर अपनी ही अलग राजनीति आरंभ कर देते है.

अपराध का भाग इन दुष्टों से कहीं अधिक उनका होता है जो अधर्म देखकर भी शांत रहते है. यही वे सत्य के दलाल इन दुष्टों से आंशिक स्वार्थ अपना भी सिद्ध करते हैं. यह शांत रहने वाले लोग कौन हैं? लोग अधिकांशतः समझते हैं समाज दोईभाग में बटा है, जिन्हें वे सज्जन लोग और दुष्टलोग पर विभक्त कर अंत समझते हैं. यह उनकी भूल है. बीच में एक समाज और है जिसे 'दिखावा समाज' कह सकते हैं.

सारा संकट इन्ही का बनाया है. ये अपने को सत्यवादी दिखना अवश्य चाहते हैं पर इन्हें स्वार्थ भी पूरा करना है, इसलिए पीछे से कुकर्म करते हैं. अधर्म देखकर भी शांत रहते हैं और प्रसिद्ध धारणा में बहते हुए यश की कामना वाले ये अवसर आने पर धर्म का द्रोह भी करने में उद्यत होते हैं. आज समाज में 90 प्रतिशत से ज्यादा यही 'दिखावा समाज' वर्तमान है, क्यूंकि आर्थिक रूप से यह मध्यवर्गीय समाज ही यश की कामना सबसे अधिक करता है और भारत में भी यही वर्ग सबसे अधिक है(32%).

अतः, धर्म को दुष्ट नहीं मारते, सत्य से समझौता करने वाले वो दलाल मारते हैं जो सत्य का चोला ओढ़े रहते हैं पर उसके नीचे केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि किया करते हैं.

फिर पलटकर वह मारा हुआ धर्म भी -

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः

तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत् ॥

मनुस्मृति 8.15

मरा हुआ धर्म मारने वाले को ही नष्ट कर देता है- (हतः धर्मः एव) मारा हुआ धर्म निश्चय से (हन्ति) मारने वाले का नाश करता है और (रक्षितः धर्मः) रक्षित किया हुआ धर्म (रक्षति) रक्षक की रक्षा करता है (तस्मात्) इसलिए (धर्मः न हन्तव्यः) धर्म का हनन कभी न करना चाहिये, यह विचार कर कि (हतः धर्मः) मारा हुआ धर्म (नः मा अवधीत्) कभी हमको न मार डाले ॥ १५ ॥

मनुष्य उसी को कहते हैं तो अच्छा-बुरा, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म का निर्णय कर सके. उसे मनुष्य नहीं कहते जिसका लक्ष्य भोग है, वह तो जानवर का बड़ा भाई कहाता है.

इश्वर रचित व्यवस्था में अंत सबका होता है और सबके कर्म संचित भी होते हैं. कोई सोचे इस समाज में अपना नाम बना लेवें तो लोग हमको जानेंगे हमें पूछेंगे हमारा सम्मान और यश मिल ही जाए बचा यह किस मध्यम से प्राप्त होगा वह आगे-की-आगे देखी जायेगी तो यह उसे उस व्यक्ति को समझ लेना चाहिए एसा नहीं हुआ करता. कोई इश्वर की व्यवस्था में सोचे की भक्ति से, योग से, चढ़ावे से, या अर्जी लगाकर पाप मुआफ करदिया करेगा? एसा नहीं होता. हर पाप या पुण्य का प्रतिफल अवश्य मिलता है, यह उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर का प्राणीमात्र को दृढ संकल्प है.

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममान एति। अनूनं पात्रं निहितं न एतत्पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति ॥

अथर्व १२/३/४८

अर्थ- "कर्मफल के विषय में कोई त्रुटि कभी नहीं होती और किसी की सिफारिश भी नहीं सुनी जाती, ऐसी बातें नहीं होती। यह भी नहीं है कि मित्रों के साथ सङ्गति करता हुआ जा सकता है। कर्मफल रूपी तराजू पूर्ण है बिना किसी घटा-

बढ़ी के सुरक्षित रखी है। पकाने वाले को पकाया हुआ पदार्थ, कर्मफल के रूप में आ मिलता है,अवश्य प्राप्त हो जाता है। "

मंत्र अथर्ववेद से है

मतलब; आपके द्वारा बोए गए बीजों को वापस देने में कभी कोई त्रुटि नहीं होती और न ही आपकी विनती (क्षमा की) सुनी जाती है, इस तरह की चीजें नहीं होती हैं। यहां तक कि अगर आप अच्छे लोगों में रहते हैं, तो भी आपके कार्य आपके पास वापस आ जाएंगे (या तो इस जीवन में या दूसरों में)।

कुछ भी नहीं भुलाया जाएगा, कुछ भी माफ नहीं किया जाता

प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः। केनापि देवेन हृदि स्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।

गर्गसंहिता अश्वमेध 50। 36

(दुर्योधन कहता है) 'मैं धर्मको जानता हूँ, पर उसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं होती और अधर्म को भी मै भलीं-भांति जानता हूँ, पर उससे मेरी निवृत्ति नहीं होती। मेरे हृदयमें स्थित कोई देव है, जो मुझ से जैसा करवाता है, वैसा ही मैं करता हूँ।'

दुर्योधन द्वारा कहा गया यह 'देव' वस्तुतः 'काम' (भोग और संग्रह की इच्छा) ही है, जिससे मनुष्य विचारपूर्वक जानता हुआ भी धर्मका पालन और अधर्म का त्याग नहीं कर पाता।

अधिकांश लोग अपने स्वभाव का निरीक्षण नहीं कर पाते और जो कर लेते है, वह भी वह राग और प्रयोजनवश स्वीकार नहीं करते, यह आपसी द्वेष का कारण है, मेरे इस लेख के बनाने का प्रयोजन सत्य का अर्थ प्रकाश करना है- अर्थात जो सत्य है उसे सत्य और जो मिथ्या है उसे मिथ्या ही प्रतिपादित करना सत्य अर्थ समझा है.

जो पक्षपाती मनुष्य होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दुसरे के के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत होता है, इसलिए वह सत्य को प्राप्त नहीं होता, सत्य का ग्रहण और असत्य मिथ्या का त्याग करके ही सदा आनंद होता है, क्योकि असत्य से कभी सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती.

उदाहरण रूप- बहुधा लोग भी अपने सुख को दुसरो के कार्यों पर आश्रित मानते हैं और उपेक्षा होने से दुःख सागर में गोते खाते हैं. यह असत्य धारणाएं भ्रम और दुःख का कारण है. इससे यही कथन उचित है– उत्तम सुख सत्य में ही है, वही असली सुख 'संतोष का सुख' है.

अंत में, मनुष्य का आत्मा सत्य-असत्य का जानने वाला है, फिर भी अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्या अदि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है, परन्तु इस लेख में ऐसी बात नहीं रखी है, पर जिससे सभी पक्षों विपक्ष की उन्नति और उपकार हो सत्य असत्य समझकर, सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करे क्योकि सत्य उपदेश के बिना मनुष्य जाति की उन्नति का कोई अन्य कारण नहीं है. एसी बाते सोचकर मैंने यह पत्र-लेख पर परिश्रम किया है, प्रथम प्रेम से देखकर सत्य-असत्य तात्पर्य जानकर कृतज्ञ करे.

-अक्षत ***बी.ए.द्वितीय वर्ष***

॥ इति भूमिका ॥

****

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । यो सावादित्ये पुरुषः सो सावहम् ।

ओ३म् खं ब्रह्म॥ (यजु. ४०. १७)

हे मनुष्यों, मेरे द्वारा देदीप्यमान रक्षक शाश्वत कारण, पदार्थ के चेहरे को ढक देता है। सूर्य में जो आत्मा है, वह जो आत्मा है, वह मैं हूं। मैं आकाश के समान विशाल हूं, गुण, कर्म और स्वभाव में सबसे महान मैं हूं।

'ओम' मेरा नाम है.
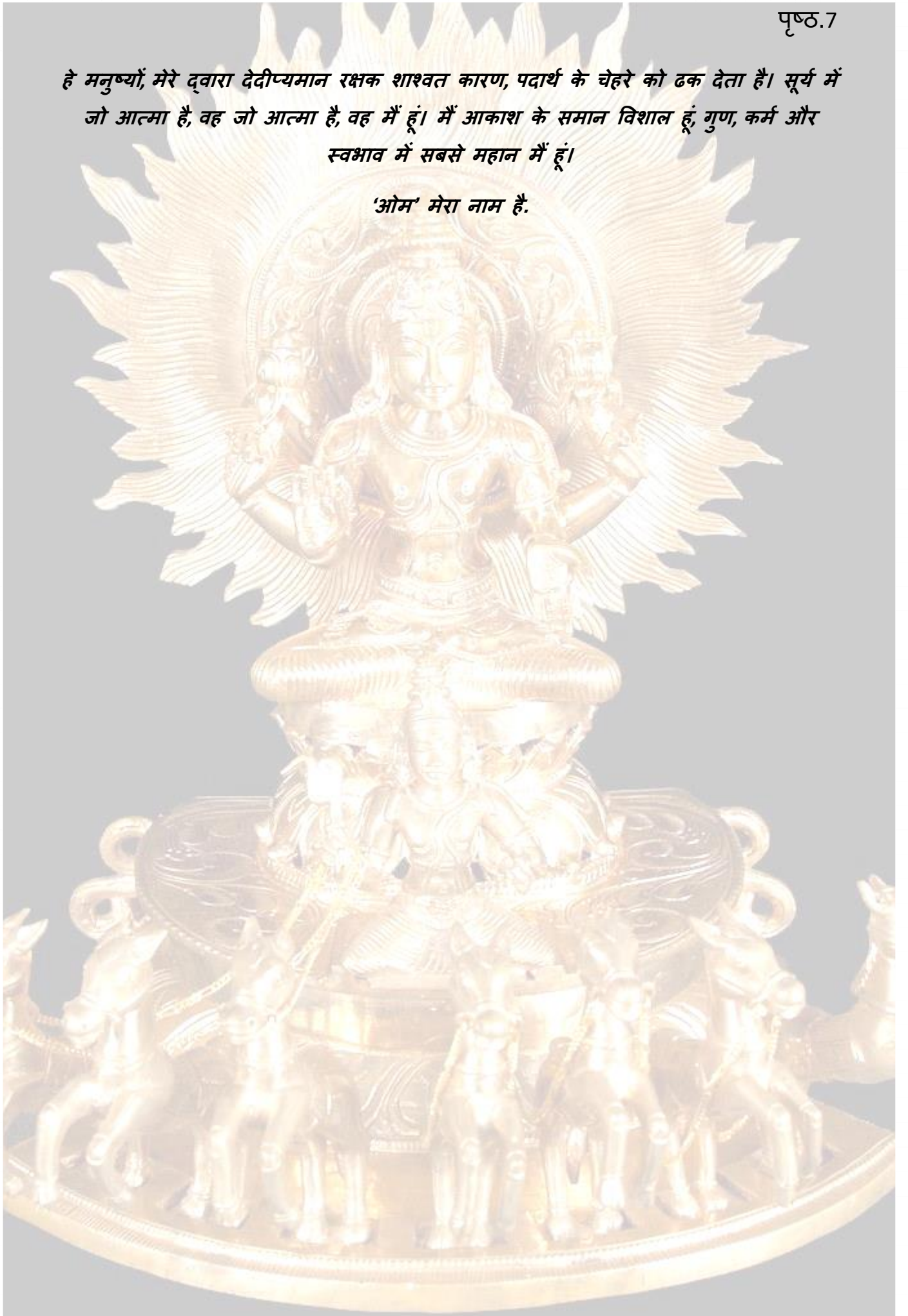
इतिहास ग्रन्थ में स्वयंवर का प्रमाण

खंडः१

इतिहास ग्रन्थ में स्वयंवर का प्रमाण-

१. **सीता स्वयंवर-** इन्हें 'वीर्यशुल्का' भी कहते हैं। इनके पिता ने शर्त रखकर विवाह किया था। पूर्वपक्षी कह सकता है की यहाँ तो पिता की आज्ञा से विवाह हुआ है, तुम क्या बकवाद करते हो? तो इसका उत्तर यह है की उनके पिता ने प्रतिज्ञा- प्रत्योगी के बल के आधार पर रखी थी, क्योंकी वे सीता जी को सामान्य नहीं मानते थे। यहाँ विवाह का आधार बल-पराक्रम था जाति-प्रतिष्ठा नहीं। एक किवदंती यह भी है लंका का राजा रावन एक समय इस धनुष को उठाने आया था पर असफल हुआ।

मेरी कन्या वीर्यशुल्का है, अतः बिना पराक्रम की परीक्षा लिए मै अपनी कन्या किसी को नहीं दूंगा। (राजा जनक)

(बालकाण्ड सर्ग 25 श्लोक 26)

अब कोई कहे यहाँ तो राजा ने राजा से ही विवाह किया, दोनों सामान जाति के हैं। इसे दुसरे प्रमाण से जानते है की इसका रहस्य क्या है? क्या विवाह में जाति का आधार सच में है भी या नहीं? इसका उत्तर नीचे है-

२. **द्रौपदी स्वयंवर-** महाभारत में पांचाल(उत्तरप्रदेश का मैनपुरी क्षेत्र) के राजा द्रुपद की बेटी द्रौपदी के लिए, उम्मीदवारों को धनुष और बाण से मच्छली की आंख पर निशाना साधना था। यह मछली तेल से भरे तवे के ऊपर रखे घूमते पहिये की एक छवि मात्र थी। दावेदारों को तेल में मछली के प्रतिबिंब का उपयोग करके लक्ष्य बनाना था।

"जो उत्तम कुल, सुन्दर रूप और श्रेष्ठ बल से संपन्न वीर यह महान कर्म कर दिखायेगा, आज मेरी यह बहन कृष्णा(द्रौपदी) उसी की धर्मपत्नी हो जाएगी।" (द्रिष्टद्युम्न)

(महाभारत आदिपर्व अध्याय 200 श्लोक 60-61)

पाण्डव स्वयं ब्राह्मणों सहित बैठ गये।

(महाभारत आदिपर्व अध्याय 200 श्लोक 23)

पाण्डु के पुत्र क्रमानुसार पांचाल पहुँचकर, कुम्हार के समीप में अपना घर बना लिया। वहां उन्होंने समाज से भिक्षा ली और ब्राह्मणवादी व्यवसाय अपनाया

(महाभारत आदिपर्व 200 श्लोक 5-7)

"जब सब राजाओं ने उस धनुष पर प्रत्यंचा चढाने के कार्य से मुँह मोड़ लिया, तब उदारबुद्धि अर्जुन ब्राह्मणवेश में ब्राह्मण मंडली के बीच से उठकर खड़े हुए।"

(महाभारत आदिपर्व अध्याय 203 श्लोक 1)

और आगे की कहानी में अर्जुन मच्छली की आँख को भेद देता है। कोई कह सकता है की वह था तो क्षत्रिय ही न? पर यह न भूलें की वहाँ सभा में किसी को इसका पता नहीं था की ब्राह्मण युवक असल में है कौन, क्यूंकि पांडवों का अज्ञातवास चल रहा था, अतः स्वयंवर की शर्त पूरी होते ही द्रुपद ने अपनी पुत्री का विवाह ब्राह्मण वेश धारण किये अर्जुन से करवा दिया।

इसके पश्चात जब सभा में उपस्थित अन्य क्षत्रिय इससे क्रुद्ध हुए और अज्ञात ब्राह्मण से युद्ध को उद्यत हुए तो श्री कृष्ण जी ने सबको यह कह कर समझा दिया की उन्होंने ***"धर्मपूर्वक द्रौपदी को प्राप्त किया है"***। इस प्रकार समझाकर उन क्षत्रियों को रोक दिया।

(महाभारत आदिपर्व अध्याय 187)

हमने यहाँ सीता स्वयंवर से पाय की जाति-जन्म कोई विवाह का आधार नहीं है, और द्रौपदी के विवाह से जाना की ब्राह्मण क्षत्रिय का भी विवाह हो सकता है, एवं विवाह में जाति वर्ण तक का भेद हुआ जिसका श्री कृष्णा ने तक समर्थन किया। तो फिर विवाह का आधार क्या है? यह आगे देखेगे पर सामान्य-साधारण का अंगूठे का नियम यह है की जो कोई वेदविद्या का ज्ञाता, और बल से पुष्ट अच्छे कुल का हो वह श्रेष्ठ है मानना चाहिए।

अब आगे और प्रमाण देखिये

३. **राजा भोज द्वारा कुंती का स्वयंवर-** इसमें विवाह की अभिलाषा वाले भारतवर्ष के युवाओं को पंक्ति में रखकर राजा भोज की सभा में कन्या कुंती ने राजा पंडू को पंक्ति से चुन लिया

निर्दोष अंगों वाली कुन्तिभोजकुमारी शुभलक्षणा कुंती स्वयंवर की रंगभूमि में नरश्रेष्ठ पांडू को देख कर मन-ही-मन उन्हें पाने के लिए व्याकुल हो उठी।

(महाभारत आदिपर्व अध्याय 121 श्लोक 6)

फिर कुंती ने लजाते लजाते राजा पांडु के गले में जयमाला डाल दी। तब उसके पिता राजा कुंतीभोज ने [शास्त्रोक्तविधि के अनुसार पांडु के साथ] कुंती का विवाह करा दिया।

(महाभारत आदिपर्व अध्याय 121 श्लोक 8)

(महाभारत सातवलेकर एवं BORI –अध्याय १०४ श्लोक १-२ पेज. ५७७)

(महाभारत गीता प्रेस द्वारा अध्याय ११२ श्लोक ८ पेज ८१३)

कोई कहे की ये तो राजपुरुष हैं इनका क्या है, जो चाहे सो करे। तो इसका उत्तर गीता में हैं की क्यों समान्य जन का केवल धनादि, सामर्थ्य कम है धर्म, विद्या और अधिकार एक राजा से बिलकुल नहीं।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरा जनः । स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।

भाग्वद्गीत अध्याय 3 श्लोक 21

अर्थ: श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार बरतने लग जाता है ।।21।।

४. काशिराज की पुत्री अम्बा- (महत्वपूर्ण प्रमाण)

भीष्म काशिराज की तीन कन्याओं को अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए अपहरण कर लाये थे। जब उस काशिराज की ज्येष्ठ कन्या अम्बा ने सुना की भीष्म अपने छोटे भाई से उन तीनो का विवाह करेगे, तो उसने भीष्म से यह कहा:

"धर्मात्मन! मैंने पहले से ही मन-ही-मन मेरे गृह वाराणसी पूरी में ही राजा शाल्व को पतिरूप में वरण कर लिया है। इस बात को सोच-समझकर जो धर्म का सार प्रतीत हो, वही कार्य कीजिये।"

(काशिराज की पुत्री अम्बा)

(महाभारत आदिपर्व अध्याय 109 श्लोक 63-64)

[उसके एसा कहने पर]

"धर्मज्ञ भीष्म ने वेदों के पारंगत विद्वान् ब्राह्मणों के साथ भलीं-भाँती विचार करके काशिराज की ज्येष्ठ पुत्री अम्बा को उसी समय शाल्व के यहाँ जाने की आज्ञा प्रदान कर दी"

(महाभारत आदिपर्व अध्याय 109 श्लोक 68)

भीष्म और ब्राह्मणों के परामर्श के पश्चात तत्काल ही कुरु सम्राट राजा विचित्रवीर्य ने अम्बा की ओर देखा और पारंपरिक न्यायशैली में तुम्हें एक ही बार में, जैसी इच्छा हो, मुक्त कर दिया जाता है अम्बा को राज्यादेश दिया

(महाभारत आदिपर्व अध्याय 109 श्लोक 73)

इस प्रमाण से पूर्ण रूप से सिद्ध किया जा चूका है की सत्य क्या है. आज के ब्रामण यद्यपि ब्रह्मचारी भीष्म और उस समय के वेद के पारंगत ब्राह्मणों से संभवतः कुछ अधिक ही चतुर होंगे?

दामयंती-

महाभारत का एक और प्रसिद्ध स्वयंवर दमयंती की कहानी में मिलता है, जिसने देवताओं की सभा में नल को अपने पति के रूप में चुना था।

(महाभारत वन पर्व अध्याय 53 श्लोक 1-18)

ईरान की कितायुन-

ईरानी साहित्य में कितायुं: फ़िरदौसी का शाहनामा पूर्व-इस्लामिक ईरान में एक ऐसी ही परंपरा को दर्ज करता है, जिसमें कॉन्स्टेंटिनोपल के सम्राट की सबसे बड़ी बेटी कितायुन ने ईरानी गुश्तस्प का चयन किया था। रुम के कैसर(सम्राट) की एक बेटी थी, जिसका नाम कितायुन है, और वह उसके लिए एक पति ढूंढना चाहता है। जब कैसर देश के रईसों को दावत पर आमंत्रित करता है, तो

कितायुन की मुलाकात गुश्तस्प से होती है और वे प्यार में पड़ जाते हैं। कैसर इस विवाह का विरोध करता है, हालांकि, रूम में महिलाएं अपने पति को चुनने में स्वतंत्रता थी एवं रूम के **बिशप**(ईसाईयों का धर्मगुरु) ने कैसर को चेतावनी दी कि उनका विरोध इस प्रथा के विपरीत है। कैसर के पास इस शादी को स्वीकार करने के अलावा कोई रास्ता नहीं है, इसके बाद कैसर ने गुश्तस्प से उसे अपने दामाद के रूप में स्वीकार न करने के लिए माफ़ी मांगी।

केयूमर का दरबार, शाह तहमास्प के शाहनामे से सुल्तान मुहम्मद द्वारा लघुचित्र। आगा खान संग्रहालय

फिर कोई कहे ये राज्यपुरुष हैं, तो फिर वही बात है की सामान्य व्यक्ति का सामर्थ्य कम है- अधिकार और जिम्मेदारियां नहीं, कथा राज्य पुरुषों की मिलती हैं क्यूंकि सामान्य जन सामान्य ही है।

रुम सल्तनत-

वर्तमान तुर्की देश

रुम सल्तनत (तुर्को-फारसी सुन्नी मुस्लिम राज्य) की प्रथा के अनुसार, जब एक राजकुमारी विवाह योग्य उम्र तक पहुंच जाती है, तो सभी राजकुमार और रईस एक सभा भवन में इकट्ठा होते थे, जहां राजकुमारी अपनी दासियों के साथ प्रवेश करती थी और राजकुमारों में से एक को अपने पति के रूप में चुनती थी।

इतने प्रमाण देकर यह सिद्ध किया जा चूका है की स्वयंवर भारतवर्ष की ही नहीं विदेशों में भी एक उच्च श्रेणी की उत्तम व्यवस्था थी जिसमे कन्या की सहमती से ही विवाह किया जाता था।

इतिप्रथमपाठः

****

वेद और अवैदिक शास्त्र प्रमाण

[जाति, वर्ण, और विवाह के सत्य शास्त्र प्रमाण उनके सभी सन्दर्भ सहित]
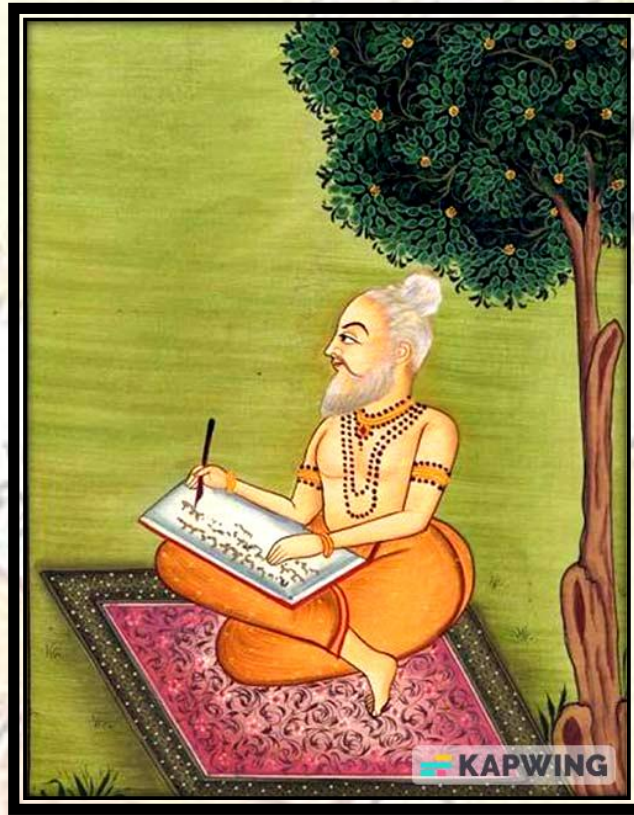
ऋषि वाल्मीकि

-अन्वेषक

खंड:२

वेदादि इतिहास और अन्य अवैदिक शास्त्रों से भी प्रमाण

इस खंड में शास्त्रों में जाति, विवाह और अन्य के प्रमाण है- प्रथम प्रीती से
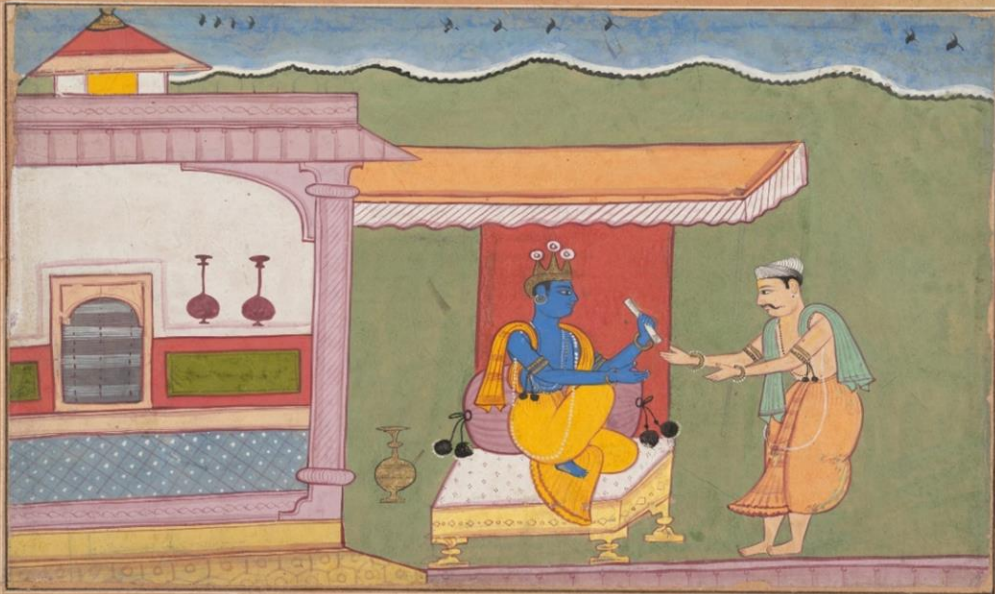
देखकर स्वीकार करें।

ब्राहमण कृष्ण को रुक्मिणी का विवाह करने को इच्छित पत्र देता है। (1610 ईस्वी के बिखरे हुए एक भागवत पुराण के पृष्ठ की पेंटिंग)

जाति में से शास्त्र प्रमाण देख लेवें

सर्वप्रथम श्री राम के आराध्य मनु के बारे में उनके विचार देख लें

शक्यं त्वयाSपि तत्कार्यं धर्ममेवानुपश्यता । श्रूयते मनुना गीतौ श्लोकौ चारित्रवत्सलौ। गृहीतौ धर्मकुशलैस्तत्तथा चरितं मया।

वाल्मीकि रामायण 4.18.31

मनु ने राजोचित सदाचार का प्रतिपादन करने वाले दो श्लोक कहे हैं, जो स्मृतियों में सुने जाते हैं और जिन्हें धर्मपालन में कुशल पुरुषों ने सादर स्वीकार किया। जिन्हें स्वयं मै भी अनुसरण करता और इस प्रकार मेरा यह बर्ताव हुआ।

(श्री राम का बाली के वध उपरान्त उसे उत्तर देना)

जन्मना जायते शूद्रः कर्मणा द्विज उच्यते। शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम । क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥

मनुस्मृति 10. 65

अर्थात् -- पृथ्वी के प्रथम विधानकर्ता **"श्री राम के आराध्य, जिनके विधान का श्री राम भी अनुसरण करते हैं"-** राज-ऋषि मनु इस श्लोक में कह रहे हैं की जन्म से सभी शूद्र होते हैं। कर्म के अनुसार ब्राह्मण शूद्रता को प्राप्त हो जाता है और शूद्र ब्राह्मणत्व को। इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य से उत्पन्न संतान भी अन्य वर्णों को प्राप्त हो जाया करती हैं।

एक सरल उपनिषद् से आत्मा, शरीर और जाति को समझने का प्रयास करते हैं-

वज्रसूचिका उपनिषद्

चार जातियाँ हैं, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

यह पूछने की इच्छा होती है कि ब्राह्मण कौन है, उसका नाम क्या है, उसका जीव क्या है, उसका शरीर क्या है, उसकी जाति क्या है, उसका ज्ञान क्या है, उसका कर्म क्या है और उसका धर्म क्या है?

यदि जीव ब्राह्मण है, तो ऐसा नहीं है।

चूँकि जीव(आत्मा) का अतीत और भविष्य में कई जातियों के शरीरों में एक ही वह जीव(आत्मा) रूप होता है, चूँकि वह एक के कई शरीर संभव होते हैं, और चूँकि सभी शरीर में जीव(आत्मा) का एक ही रूप हैं।

अतः जीव(आत्मा) ब्राह्मण नहीं है।

यदि, फिर, शरीर ब्रह्म है, तो ऐसा नहीं है।

चूँकि नीच-उंच, अचंडाल और अन्य सभी जातिओं के मनुष्य का शरीर पाँच भौतिक रूप में सबका एक ही है- जिसका अंत बुढ़ापा और मृत्यु है। यदि शरीर ब्रह्म हो तो जब पिता और अन्य लोगों के शरीर जलाए जाते हैं, तो ब्राह्मण का पुत्र क्या ब्रह्म हत्या के दोषी हैं?

यदि, फिर, ज्ञान ब्रह्म है, तो ऐसा नहीं है।

ज्ञान ब्रह्म नहीं है। क्या ज्ञान को ब्राह्मण माना जाए? क्योंकि बहुत से क्षत्रिय (राजा जनक- जिन्हें बुद्धि में भगवान् गणेश के सम कहा है) आदि भी परमार्थ दर्शन के ज्ञाता हुए हैं (होते हैं)।

अस्तु, ज्ञान भी ब्राह्मण नहीं हो सकता

यदि, फिर, कर्म ब्राह्मण है, तो ऐसा नहीं है।

सभी प्राणी अपने आरंभ, संचित और भविष्य के कर्मों में अंतर देखकर(अपने कर्मों के अनुभव के आधार पर) भक्तजन कर्मों से प्रेरित होकर कर्म करते हैं। जब सभी का यही स्वभाव है, तो क्या सबसे कठिन परिश्रम करने वाले श्रमिक को क्या ब्राहमण माना जाए?

यदि, फिर, वह एक धार्मिक ब्राह्मण है, तो ऐसा नहीं है।

क्षत्रियों जैसे अनेक स्वर्ण दानी होते हैं। ऋष्यश्रृंग मृग्य से, कौशिका कुश से, जम्बूक जम्बूक से, वल्मिका वल्मिका से, व्यास कैवर्तक से।

तो ब्रह्म का नाम क्या है?

वह जो स्वयं को शांत करता है, अद्वितीय, जाति, गुण और कर्म से रहित, छह तरंगों, छह प्राणियों आदि जैसी सभी त्रुटियों से मुक्त, सत्य, ज्ञान, आनंद का अनंत रूप, विकल्प से रहित, शास्त्र, स्मृति, इतिहास और पुराणों का अर्थ है कि जो व्यक्ति नशे से युक्त, ईर्ष्या, तृष्णा, आशा, मोह आदि से रहित है और जिसका मन अभिमान, अहंभाव आदि से अछूता है और जिसके इस प्रकार वर्णित लक्षण हैं। एक ब्राह्मण है।

अन्यथा, ब्राह्मण होने की कोई पूर्णता नहीं है। उपनिषद कहता है कि व्यक्ति को स्वयं, एकमात्र ब्रह्म, सत्य और आनंदरूप परमात्मा का ध्यान करना चाहिए।

ॐ शांति, शांति, शांति।

॥ इति वज्रसूचिका उपनिषद् समाप्त ॥

यहाँ एक सरल भूमिका खींच दी है, अब आगे

वर्ण और जाति में भेद

वर्ण क्या है- वर्ण शब्द 'वृञ्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'चयन करना' या 'वरण करना'।

यास्क मुनि निरुक्त में लिखते हैं-

'वर्णो वृणोतेः' (निरुक्त 2. 3)

अर्थात् - वर्ण उसे कहते हैं जो वरण अर्थात् चुना जाये।

वर्ण शब्द के अर्थ से ही स्पष्ट है कि यहाँ व्यक्ति को स्वतंत्रता दी गई है कि वह किसी भी वर्ण का चुनाव कर सकता है।

न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदं जगत् । ब्राह्मणाः पूर्वसृष्टा हि कर्मभिर्वर्णतां गताः ॥

(महाभारत शान्तिपर्व 988. 90)

सारा मनुष्य जगत् एक ही ब्रह्म की सन्तान है। वर्णों में कोई भेद नहीं है। श्रीब्रह्मा जी के द्वारा रचा गया यह सारा संसार पहले पूर्णतः ब्राह्मण ही था। मनुष्यों के कर्मों द्वारा यह वर्णों में विभक्त हुआ।

एक वर्णामिदं पूर्व विश्वमासीद युधिष्ठिर ।कर्मक्रिया विभेदेन चातुर्वण्यं प्रतिष्ठितम् । (महाभारत) गायत्री का अधिकार और अनाधिकार - Akhandjyoti April 1960 :: (All World Gayatri Pariwar) (awgp.org)

वर्ण - विकिसूक्ति (wikiquote.org)

श्रीमद्भागवत का प्रमाण आरंभ में दिया जा चुका है। अथ वर्णभेद के विषय में महाभारत की सम्मति सुनिए—

एकवर्णमिदं पूर्वं विश्वमासीद् युधिष्ठिर।
कर्मक्रियाविभेदेन चातुर्वर्ण्यं प्रतिष्ठितम्॥
सर्वे वै योनिजा मर्त्याः सर्वे मूत्रपुरीषजाः।
ऐकेन्द्रियेन्द्रियार्थाश्च तस्माच्छीलगुणैर्द्विजः॥
शूद्रोपि शीलसम्पन्नो गुणवान् ब्राह्मणो भवेत्।
ब्राह्मणोपि क्रियाहीनः शूद्रात् प्रत्यवरो भवेत्॥

हे युधिष्ठिर! इस संसार में पहले एक ही वर्ण था। गुण और कर्म में भेद पड़ने से चार वर्ण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र माने गये। क्या ब्राह्मण, क्या शूद्र सब मनुष्यों की उत्पत्ति मूत्र और पूरीष के स्थान योनि से ही होती है; सब ही मनुष्य मल-मूत्र त्यागते हैं, सब मनुष्यों की इन्द्रिय, वासनायें समान हैं अर्थात् सब खाते हैं, पीते हैं, देखते हैं, सुनते हैं, चखते हैं,

इस संसार में पहले एक ही वर्ण था। पीछे गुण और कर्म भेद के कारण चार वर्ण बने।

इत्येतैः कर्मभिर्व्यस्ताः द्विजा वर्णान्तरं गताः । धर्मोयज्ञक्रिया तेषाँ नित्यंच प्रतिषिध्यते ॥

(महाभारत शान्तिपर्व 188. 14)

कार्य भेद के कारण ब्राह्मण ही पृथक-पृथक वर्णों के हो गये। इसलिए धर्म-कर्म और यज्ञ क्रिया उनके लिए भी विहित हैं और कभी निषेध नहीं किया गया है (अर्थात विद्या तथा धर्म कार्यों पर चारों वर्णों का अधिकार है)।

जातिरिति च न चर्मणो न रक्तस्य न मांसस्य न चास्थिनः । न जातिरात्मनो जातिर्व्यवहारप्रकल्पिता ॥

(निरालम्बोपनिषद 10)

(शरीर के) चर्म, रक्त, मांस, अस्थियों और आत्मा की कोई जाति नहीं होती है। उसकी (मानव, पशु-पक्षी आदि जाति की) प्रकल्पना तो केवल व्यवहार के निमित्त की गई है।

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् भवेत् द्विजः। वेद- पाठात् भवेत् विप्रः ब्रह्म जानातीति ब्राह्मणः ॥

(स्कंद पुराण खंड 18 पुस्तक VI, नगर कांड, अध्याय 239)

"जन्म से प्रत्येक मनुष्य शूद्र, संस्कारों से द्विज, वेद के पठान-पाठन से विद्वान् और ब्रह्म को जानने से ब्राह्मण कहलाता है। "

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप । कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवेर्गुणैः ॥

(भगवद गीता अध्याय 18 श्लोक 41)

"हे परंतप! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र कर्म स्वभाव से उत्पन्न गुणों द्वारा (जन्म से नहीं) विभक्त किये गये हैं। "

गीता 4.13: ***मनुष्यों के गुणों और कर्मों के अनुसार मेरे द्वारा चार वर्णों की रचना की गयी है। यद्यपि मैं इस व्यवस्था का सृष्टा हूँ किन्तु तुम मुझे अकर्ता और अविनाशी मानो।***

ब्रह्मणस्तु समुत्पनाः सर्वे ते किं नु ब्राह्मणा । न वर्णतो न जनकाद् ब्राह्मतेजः प्रपध्यते ॥

(शुक्रनीति 1. 39)

संपूर्ण जीव ब्रह्म से उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मण हो जाते हैं क्या? नहीं, क्योंकि ब्राह्मण-पिता से ब्रह्मतेज की प्राप्ति नहीं हो सकती है, अर्थात ब्राह्मण के घर जन्म लेने से कोई ब्राह्मण नहीं हो जाता है।

कर्मशीलगुणाः पूज्यास्तथा जातिकुले न हि । न जात्या न कुलेनैव श्रेष्ठत्वं प्रतिपद्यते । (शुक्रनीति 2. 55)

अर्थात -मनुष्य कर्मशीलता और गुणो से सम्मानीय और पूज्यनीया होता है किसी विशेष जाति और कुल में जन्म लेने से नहीं । किसी भी जाति कुल में पैदा होने से कोई श्रेष्ठ नहीं होता है।

न जातया ब्राह्मणश्चात्र क्षत्रियो वैश्य एव न ।। न शूद्रो न च वै म्लेच्छो भेदितं गुणकर्मभिः ।। (शुक्रनीति 1. 38)

(इस संसार में कोई भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, योद्धा जाति नहीं है)

वैश्य (व्यापार/व्यवसाय करने वाली जाति) और शूद्र (निम्न जाति) जन्म से लेकिन पर गुणवत्ता (गुण) और कर्म और कर्म (कर्म) का आधार मनुष्य कर्मशीलता और गुणों से सम्मानीय और पूजनीय होता है, किसी विशेष जाति और कुल में जन्म लेने से नहीं। किसी भी जाति कुल में पैदा होने से कोई श्रेष्ठ नहीं होता है।

ब्रह्मणस्तु समुत्पना: सर्वे ते किं नु ब्राह्मणा । न वर्णतो न जनकाद् ब्राह्मतेज: प्रपध्यते ॥ ३९ ॥ (शुक्रनीति -1:39)

अर्थात - संपूर्ण जीव ब्रह्मा से उत्पन्न होने के कारण अब ब्राह्मण होते है क्या ? नहीं क्युकी ब्राह्मण पिता से ब्रह्मतेज की प्राप्ति नहीं हो सकती अर्थात ब्राह्मण के घर जन्म लेने से कोई ब्राह्मण नहीं हो सकता।

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्दविज उच्यते ।

(स्कन्दपुराण नागरखण्ड - 239.31)

प्रत्येक बालक चाहे किसी भी कुल में उत्पन्न हुआ हो, जन्म से शूद्र ही होता है। जब किसी मनुष्य का जन्म होता है तो वह गुणहीन और अशिक्षित होता है, इसलिए जन्म से प्रत्येक मनुष्य शूद्र ही होता है।

इसके बाद वह कैसे कर्म करता है, इसके आधार पर उसका वर्ण तय होता है।

न योनिनोपि संस्कारो न श्रुतंन च संततिः कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव तु कारणम्॥ सर्वोष्य त्राह्मणो लोके वृत्तेन तु विधीयते । वृत्ते स्थितस्तु शुद्रो पि ब्राह्मणत्वं नियच्छति ॥

(महाभारत अनुशासन पर्व 143. 50-51)

भगवान शिव ने कहा है कि 'ब्राह्मणत्व की प्राप्ति न तो जन्म से, न संस्कार से, न शास्त्रज्ञान से और न सन्तति के कारण हो सकती है। ब्राह्मणत्व का प्रधान हेतु तो वैदिक सदाचार ही है। लोक में यह सारा ब्राह्मण समुदाय उसी वैदिक सदाचार से ही अपने पद पर बना हुआ है। वेद के सदाचार में स्थिर रहने वाला शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो जाता है (अर्थात फिर वह शूद्र नहीं रह जाता है)। '

इसीलिए रामद्रोही रावण ब्राह्मण कुल में पैदा होने के बाद भी राक्षस कहलाया और **तुलसीदास जी ने उसे शूद्र ही कहा** है, **जबकि उन्होंने रामभक्त जटायु, वानर आदि को भी विप्र कहा है**। और इसीलिए तुलसीदास जी ने कहा है कि-

पूजहि विप्र ज्ञान-गुण हीना । सूद्र न पूजहि वेद प्रवीणा । ।

रामभक्त और रामद्रोही-

श्रीराम धर्म, मर्यादा और नीति के अवतार हैं। अतः जो कोई भी धर्म, मर्यादा, नीति आदि का उल्लंघन करता है, वह 'रामद्रोही' है और जो इनका अनुसरण करता है, वह 'रामभक्त' है।

भाविताः पूर्णजा तीषु कर्मभिश्चशुभाशुभैः ॥

(वायुपुराण)

सृष्टि के आदिकाल में कर्मों के शुभ या अशुभ होने के अनुसार वर्ण बनाये गये थे।

सवर्ण क्या है- 'सवर्ण' का अर्थ है वर्ण सहित अर्थात् वर्णव्यवस्था के अंतर्गत चारों वर्ण सवर्ण हैं। 'अवर्ण' वह है जो चारों वर्णों से बाहर हो।

दस्यु वे लोग थे जो धर्म को नहीं मानते थे (अर्थात अधर्म करते थे)।

दृश्यते मानुषेषु लोक सर्वे वर्णेषु दस्यवः । ।

(महाभारत शांतिपर्व 65. 23)

अर्थात् - सभी वर्गों में और सभी आश्रमों में दस्यु पाये जाते हैं (अतः 'दस्यु' शब्द किसी वर्ण विशेष का नाम नहीं था।

जाति क्या है?

'जाति' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'जनि' धातु से हुई है।

आकृतिर्जातिलिङ्गाख्या (न्याय दर्शन 2. 2.. 65)

अर्थात् - जिन व्यक्तियों की आकृति (इन्द्रियादि) एक समान है, उन सबकी एक जाति है।

वात्स्यायन मुनि इसके भाष्य में कहते हैं-

या समानां बुद्धिम प्रसूते भिन्नेष्वधिकरणेषु यया बहूनीतरेतरतो न व्यावर्तन्ते, योऽर्थोऽनेकत्र प्रत्ययानुवृत्तिनिमित्तं तत् सामान्यम्। यच्च केषाधिद भेदं कुतश्चिद्भेदं करोति तत् सामान्य विषा जातिरिति ।

अर्थात् - भिन्न-भिन्न वस्तुओं में समानता उत्पन्न करने वाली जाति है। इस जाति के आधार पर अनेक वस्तुयें आपस में पृथक नहीं होती हैं अर्थात् एक ही नाम से बोली जाती हैं, जैसे गायें कितनी ही प्रकार की हों, तो भी सबको गाय ही कहते हैं।

वर्णाकृत्यादिभेदानां देहेऽस्मिन्नप्यदर्शनात्। ब्राहमण्यादिषु शूद्राद्यैर्गर्भाधानप्रदर्शनात् ॥ नास्ति जातिकृतो भेदो मनुष्याणां गवाश्ववत् । आकृतिग्रहणात्तस्मादन्यथा परिकल्प्यते ॥

(महापुराण 74. 491-495)

मनुष्यों के शरीरों में न कोई आकृति भेद है और न ही गाय और घोड़े की भांति उनमें कोई जाति भेद है। आकृतिका भेद न होने से मनुष्य में जाति भेद की कल्पना व्यर्थ है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी ऐसे जीवों के समूह को एक 'जाति' कहा जाता है जो एक-दूसरे के साथ संतान उत्पन्न करने की क्षमता रखते हों, और जिनकी संतान स्वयं आगे संतान जनने की क्षमता रखती हो। उदाहरण के लिए, एक घोड़ी और बैल आपस में बच्चा पैदा नहीं कर सकते, इसलिए वे अलग जातियों के माने जाते हैं।

समानप्रसवात्मिका जातिः (न्याय दर्शन 2. 2. 19)

अर्थात् - समान प्रसव हों, वह जाति कहलाती है।

जाति व्यवस्था ईश्वर द्वारा बनाई हुई है। हम सब मनुष्य जाति के हैं। इसी प्रकार घोड़े, गाय, बैल, कुत्ते इत्यादि की अलग-अलग जाति हैं।

शरीरस्य न संस्कारों जायते न च कर्मणः । आत्मनः कारयेदीक्षामनादिकुलकुण्डलीम् ॥ (कुलार्णव तंत्र 14. 81)

शरीर का न तो संस्कार होता है न उसकी कोई जाति होती है न कोई कर्म। आत्मा की ही दीक्षा होती है जो कि अनादि कुलकुंडली है।

गुणैरुत्तमतां याति नोच्चैरासनसंस्थिताः । प्रासादशिखरस्थोऽपि काकः किं गरुडायते ॥ (चाणक्य नीति 17। 6)

व्यक्ति को महत्ता उसके गुण प्रदान करते हैं, वह नहीं जिन पदों पर वह काम करता है। क्या एक ऊँचे भवन पर बैठे कौवे को गरुड़ कहा जा सकता है?

लंका का राजा रावण पुलस्त्य ऋषि के वंश में उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मणोपेत क्षत्रिय था। अन्यायी और दुराचारी होने के कारण उसे 'राक्षस' घोषित किया गया

(वाल्मीकि रामायण - बालकांड एवं उत्तरकांड)

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि वैज्ञानिक आधार पर या शारीरिक आधार पर हम सब प्राणियों में जो असमानताएं हैं, उसे जाति कहते हैं। जो जिस जाति में उत्पन्न हुआ है, उसे बदला नहीं जा सकता है, क्योंकि वह प्रकृति प्रदत्त है। जैसे मनुष्य जाति, पशु जाति आदि। इसके बाद पुरुष जाति, नारी जाति, गाय की प्रजाति, घोड़े की प्रजाति, कुत्ते की प्रजाति आदि।

चूंकि शारीरिक आधार पर तो मनुष्य में कोई भेद नहीं है, लेकिन गुण, कर्म, रुचि, योग्यता, व्यवहार, आचरण, अच्छाई, बुराई आदि के आधार तो अनेक भेद हैं। यहां तक कि एक ही परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे के जैसे नहीं होते। इन्हीं के आधार पर मनुष्य में कई भेद हैं, जिसे चार वर्णों में बाँट दिया गया है। ये प्रकृति प्रदत्त नहीं है, अतः इन्हें बदला जा सकता है।

वर्ण व्यवस्था में वर्णों का निर्धारण गुण, कर्म, योग्यता, आचरण आदि होते हैं। वर्णव्यवस्था में जन्म का कोई महत्त्व नहीं होता, जबकि जातिव्यवस्था जन्म पर आधारित है। वर्णव्यवस्था का निर्धारण मनुष्य के अपने कर्मों द्वारा होता है, अतः किसी भी कुल में उत्पन्न हुए बालक या बालिका या कोई भी व्यक्ति अपनी रुचि, गुण, कर्म और योग्यता के आधार पर किसी भी इच्छित वर्ण को ग्रहण कर सकता है, जबकि जातिव्यवस्था में जाति का निर्धारण माता-पिता से होने के कारण व्यक्ति किसी अन्य जाति को ग्रहण नहीं कर सकता है।

क्या शूद्रों के वेदपाठ करने या यज्ञादि करने पर रोक थी?

आज कई विद्वानों के भाष्य तथा कुछ शास्त्रों में ऐसा उल्लेख देखने को मिलता है कि यदि शूद्र और स्त्री वेदाध्ययन करें तो उसे कठोर दंड दिया जाए, लेकिन यह सब प्रक्षिप्त हैं, क्योंकि ये वेद विरोधी हैं।

मध्वाचार्य ने महाभाष्य करते हुए संकेत किया था कि शास्त्र वही है, जो वैदिक ग्रंथों से विरोधाभास न करें, और यदि कोई करता है तो उस भाग को प्रक्षिप्त ही माना जाएगा। ।

ऋग्यजुःसामाथर्वाश्च भारतं पञ्चरात्रकम् । मूलरामायणञ्चैव शास्त्रमित्याभिधीयते । यच्चानुकूलमेतस्य तच्च शास्त्रं प्रकीर्तितम् ॥
(ब्रह्मसूत्र 1. 1. 3 पर मध्वाचार्य का भाष्य)

अर्थात् - श्रीमाध्वाचार्य कहते हैं- "चारों वेदों, महाभारत, पञ्चरात्र तथा मूल वाल्मीकी रामायण को शास्त्र कहते हैं। जो इनके अनुकूल हों (अर्थात् जिनसे उक्त ग्रन्थों के अर्थों का विरोध न हो), उन्हें भी शास्त्र कहते हैं।"

श्रावयेच्चतुरोवर्णान् (महाभारत शांतिपर्व 327. 48)

अर्थात् - 'चारों वर्णों को वेद पढ़ायें। '

धर्मो यज्ञक्रिया तेषां नित्यं न प्रतिषिध्यते । इत्येते चतुरो वर्णाः येषां ब्राह्मी सरस्वती ॥ (महाभारत शान्तिपर्व 188. 15)

वर्णान्तर प्राप्त जनों के लिए यज्ञक्रिया और धर्मानुष्ठान का निषेध कदापि नहीं है। वेदवाणी चारों वर्ण वालों के लिए है।

चत्वारो वर्णाः यज्ञमिमं वहन्ति॥ **(महाभारत वनपर्व 134. 11)**

अर्थात् - 'चारों वर्ण इस यज्ञ का संपादन कर रहे हैं। '

ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः मध्ये शूद्राश्च भागशः॥ पुरुषैर्यज्ञपुरुषो जबू द्वीपे सदेज्यते ॥ (विष्णुपुराण 2. 3. 9, 21)

जम्बू द्वीप (भारतवर्ष) में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र साथ-साथ निवास करते हैं। उन चारों वर्णों के पुरुषों द्वारा परमात्मा का सदा यज्ञ के द्वारा यजन किया जाता है।

शूद्रः पैजवनो नाम सहस्राणां शतं ददौ । ऐन्द्राग्नेन विधानेन दक्षिणामिति नः श्रुतम् ॥ (महाभारत शान्तिपर्व 60. 38)

"हमने सुना है कि पैजवन नामक शूद्र ने ऐन्द्राग्नेय विधान से यज्ञ करके एक लाख दक्षिणा दी थीं। "

श्रीमहाभारत वनपर्व अध्याय 180. 20-38

सर्प उवाच

ब्राह्मण: को भवेदराजन वेद्यं किम च युधिष्ठिर

बर्वीह्यतिमतिम त्वां हि वाक्यैरनूमिमीमहे \\२०

सर्प बोला रजा युधिष्ठिर ! यह बताओ की ब्रह्मण कौन है और उसके लिए जाननेयोग्य तत्त्व क्या है? तुम्हारी बातें सुनने से मुझे ऐसा अनुमान होता है की तुम अतिशय बुद्धिमान हो \\२०\\

युधिष्ठिर उवाच

सत्यम दानं क्षमा शील्मांरिशंस्यम तपो घृणा

द्दश्यन्ते यत्र नागेन्द्र स ब्रह्मण इति स्मृत:

युधिष्ठिर ने कहा - नागराज! जिसमें सत्य, दान, क्षमा, सुशीलता, क्रूरता, अभाव, तपस्या और दया - से सद्गुण दिखाई दे, वाही ब्रहमण कहा गया है

युधिष्ठिर उवाच

शूद्रे तु यद् भवेल्लक्ष्म द्विजे तच्च न विद्यते

न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राहमणो न च ब्राहमणः ।। २५ ।।

यत्रेतल्लक्ष्यते सर्प वृत्तं स ब्राहमणः स्मृतः ।

यत्रैतन्न भवेत् सर्प तं शूद्रमिति निर्दिशेत् ।। २६ ॥

युधिष्ठिरने कहा–यदि शूद्रमें सत्य आदि उपर्युक्त लक्षण हैं और ब्राहमणमें नहीं हैं तो वह शूद्र शूद्र नहीं है और वह ब्राहमण ब्राहमण नहीं है। सर्प ! जिसमें ये सत्य आदि लक्षण मौजूद हों, वह ब्राहमण माना गया है और जिसमें इन लक्षणोंका अभाव हो, उसे शूद्र कहना चाहिये ।। २५-२६ ।

युधिष्ठिर उवाच

सर्वे सर्वास्वपत्यानि जनयन्ति सदा नराः ।

वाङ्मैथुनमथो जन्म मरणं च समं नृणाम् ।। ३२ ।।

इदमार्षं प्रमाणं च ये यजामह इत्यपि ।

तस्माच्छीलं प्रधानेष्टं विदुर्ये तत्त्वदर्शिनः ।। ३३ ।।

सभी मनुष्य सदा सब जातियों की स्त्रियों से संतान उत्पन्न कर रहे हैं। वाणी, मैथुन तथा जन्म और मरण - ये सब मनुष्यों में एक-से देखे जाते हैं। इस विषयमें यह आर्ष प्रमाण भी मिलता है–'ये यजामहे' यह श्रुति जाति का निश्चय न होने के कारण ही जो हमलोग यज्ञ कर रहे हैं, ऐसा सामान्यरूप से निर्देश करती है। इसलिये जो तत्त्वदर्शी विद्वान् हैं, वे शील को ही प्रधानता देते हैं और उसे ही अभीष्ट मानते हैं ।। ३२-३३ ।

युधिष्ठिर उवाच

तावच्छूद्रसमो ह्येष यावद् वेदे न जायते ।

तस्मिन्नेवं मतिद्वैधे मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् ।। ३५ ।।

कृतकृत्याः पुनर्वर्णा यदि वृत्तं न विद्यते ।

संकरस्त्वत्र नागेन्द्र बलवान् प्रसमीक्षितः ।। ३६ ।।

जब तक बालक का संस्कार करके उसे वेद का स्वाध्याय न कराया जाय, तब तक वह शूद्र ही के समान है। जाति विषयक संदेह होने पर स्वायम्भुव मनु ने यही निर्णय दिया है।

नागराज! यदि वैदिक संस्कार करके वेदाध्ययन करने पर भी ब्राह्मणादि वर्णों में अपेक्षित शील और सदाचारका उदय नहीं हुआ तो उसमें प्रबल वर्णसंकरता है, ऐसा विचारपूर्वक निश्चय किया गया है ।

युधिष्ठिर उवाच

यत्रेदानीं महासर्प संस्कृतं वृत्तमिष्यते ।

तं ब्राह्मणमहं पूर्वमुक्तवान् भुजगोत्तम ।। ३७ ॥

महासर्प! भुजंगमप्रवर! इस समय जिसमें संस्कार के साथ-साथ सदाचार की उपलब्धि हो, वही ब्राह्मण है। यह बात मैं पहले ही बता चुका हूँ ।। ३७ ।।

सर्प उवाच

श्रुतं विदितवेद्यस्य तव वाक्यं युधिष्ठिर ।

भक्षयेयमहं कस्माद् भ्रातरं ते वृकोदरम् ।। ३८ ।।

सर्प बोला- युधिष्ठिर! तुम जाननेयोग्य सभी बातें जानते हो। मैंने तुम्हारी बात अच्छी तरह सुन ली। अब मैं तुम्हारे भाई भीमसेनको कैसे खा सकता हूँ? ||38||

सूत कौन होते थे?

सूत समाज के माननीय सदस्य होते थे। वे योद्धा, सारथी, राजा, सलाहकार, कथाकार कुछ भी हो सकते थे। ये बहुत अच्छे सारथी होते थे। उस समय का सारथी आज के किसी ड्राइवर की तरह नहीं होता था। वह अपने रथी का मित्र और शुभचिंतक भी होता था। क्षत्रिय राजकुमार भी किसी पराक्रमी योद्धा का सारथी बनने में गर्व महसूस करते थे। युधिष्ठिर के सारथी इंद्रसेन क्षत्रिय थे, और भीम का सारथी विशोक श्रीकृष्ण के पुत्र थे।

सूतों को क्षत्रियों की ही श्रेणी में रखा जाता था। उस समय अन्य कई प्रसिद्ध सूत थे, जैसे विराट की रानी का भाई कीचक, कैकेय देश का राजपरिवार इत्यादि। महाभारत की कथा को नैमिषारण्य के ब्राह्मणों को सुनाने का कार्य भी एक सूत पुत्र उग्रश्रवा जी (लोमहर्षण जी के पुत्र) ने किया था और सभी ब्राह्मण, यहां तक कि ब्रह्मर्षि भी उनका बहुत सम्मान करते थे।

आजकल यह जो खूब प्रचारित किया जाता है कि महाभारत के समय भारत में जाति व्यवस्था थी, द्रौपदी ने अपने स्वयंवर में कर्ण को सूतपुत्र' कहकर उसे अपमानित किया था, साथ ही उसे धनुष उठाने से मना कर दिया था, द्रोणाचार्य ने कर्ण को विद्या देने से मना कर दिया था, महाभारत के युद्ध का मुख्य कारण द्रौपदी की हंसी थी, एकलव्य का अंगूठा वर्ण व्यवस्था के आधार पर कटवाया गया था । । । । आदि विवादित विषय हैं, क्योंकि इन्हें लेकर अलग-अलग पांडुलिपियों में अलग-अलग तथ्य देखने को मिलते हैं।

यत्कर्णशल्यप्रमुखैः पार्थिवैर्लोकविश्रुतैः ।
नानतं बलवद्भिर्हि धनुर्वेदपरायणैः ॥ ४ ॥
तत्कथं त्वकृतास्त्रेण प्राणतो दुर्बलीयसा ।
बटुमात्रेण शक्यं हि सज्यं कर्तुं धनुर्द्विजाः ॥ ५ ॥

हे द्विजगण ! जो धनुष धनुर्वेदमें पण्डित, बलवान, कर्ण और शल्य आदि लोकोंमें प्रशंसित राजाओंके द्वारा नहीं झुकाया जा सका। अस्त्रविद्याको न जाननेवाले, शक्तिमें दुर्बल एक बटु उस धनुष पर डोरी कैसे चढा सकेगा ॥ ४–५ ॥

सूतपुत्रश्च राधेयो गुरुं द्रोणमियात्तदा ।
स्पर्धमानस्तु पार्थेन सूतपुत्रोऽत्यमर्षणः ।
दुर्योधनमुपाश्रित्य पाण्डवानत्यमन्यत ॥ ४७ ॥

॥ इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि द्वाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १२२ ॥ ४४०२ ॥

तब राधाकुमार सूतपुत्र कर्ण भी द्रोणाचार्यके शिष्य बने। सूतपुत्र कर्ण अति द्वेषयुक्त होकर अर्जुनसे स्पर्धा करता हुआ दुर्योधनका सहारा लेकर पाण्डवोंका अनादर करने लगे ॥४७॥

॥ महाभारतके आदिपर्वमें एकसौ बाइसवां अध्याय समाप्त ॥ १२२ ॥ ४४०२ ॥

चंडाल का शुद्धिकरण

पद्मपुराण/ खंड: 6 (उत्तरकाण्ड:)/ अध्याय: 29/14-15

आचान्डालाद्विशुद्यति तिलक्स्यैव धारणात स च विष्णुसमो ज्ञयो नात्र कार्याविचारणा

अर्थ वैष्णव चिन्हों को धारण करके चंडाल स्वयं महाविष्णु के सामान होता है

पद्मपुराण/खंड: ७ (क्रियाखंड)/अध्याय: 16/5

अव्याजेन यदा विष्णु: श्वपाकेनापी पूज्यते तदा पश्येत्तंप्येवं चतुर्वेद्द्विजाधिकम

एक वैष्णव चंडाल चारो वेदों के पंडित हुये ब्राह्मण से कही अधिक सम्माननीय है

चंडाल अर्थात शव दाह क्रिया करने वाले। राजा हरिश्चंद्र को भी भाग्य के कारण एक समय चांडाल के कार्य को करना पड़ा, श्री राम इन्ही के वंशज भी हैं

वह भी यह वैष्णव ही है - जिन पुराणों से कूट कूट कर प्रेम करते हो, तो उनकी नहीं मानेगे क्या 😎😉😋😌

<u>यहाँ जाति का खंड समाप्त हुआ, अब शास्त्र में स्वयंवर के प्रमाण देखिये</u>

वेद के कई मंत्र स्पष्ट रूप से स्त्रियों से प्रथम पुरुष(first person) में उपदेश करते है, यही नहीं इश्वर स्त्रियों के लिए भूगोल, विमानचालक आदि शिक्षा करने के मंत्र भी देता है अतः इश्वर ने स्त्रीयों को भी बुद्धि दी है। वेद मंत्रो की शाखाओं और वेद मन्त्रों के अर्थ प्रकट करने वाली कई ऋषिकाएं भी पृथ्वी पर हुई जिन्होंने ब्राह्मणों से भी शास्त्रार्थ किया। यहाँ भी वेद से देखिये स्वयंवर विवाह के प्रमाण

यत्सुपेशा: स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित् ॥

(ऋग्वेद मण्डल 10, सूक्त 27, मन्त्र 12)

वह वधू भाग्यशालिनी है, जो वधू को चाहनेवाले वर की प्रशंसाभाजन अन्य वस्तुओं द्वारा सन्तुष्ट रहती है और सुभूषित हुई जनसमुदाय में वर को वरती है

अब यहाँ कोई 'वर', 'वरण' पर तर्क करे तो मुर्खता है। उर्पयुक्त सभी जानकारी उपर 'वर्णो वृणोति' यास्क के निरुक्त से दे ही दिया था जो की पाणिनि की व्याकरण से भी प्राचीन सिद्ध है

आछाद्‌य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयं आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तित॥ (मनुस्मृति 3. 27) 😊

(श्रुति शीलवते) वेदों के विद्‌वान् और उत्तम स्वभाव के सदाचारी वर को (स्वयं आहूय) कन्या की सहमती से विवाह के लिए अपने यहाँ निमंत्रित करके, माता-पिता द्‌वारा (आछाद्‌य च अर्चयित्वा) कन्या को वस्त्र- आभूषण से अलंकृत करके सत्कारपूर्वक (कन्याया दानं) विवाह संस्कार पूर्वक कन्या प्रदान करना, ब्राह्मः धर्मः प्रकीर्तितः) 'ब्रहि्म्ववाह' की विधि कही गयी है।

त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्य्रतुमति सती| ऊर्ध्वंतुम कालादेतस्माद विन्देत सदृशं पतिम ||10|| (मनुस्मृति नवम अध्याय श्लोक 90)

(कुमारी) कन्या (ऋतुमती सती) रजस्वाला हो जाने पर (एतस्मात कलात + ऊर्ध्वम) इस समय के बाद (त्रीणि वर्षाणि + ऊदीक्षेत) तीन वर्षों की प्रतीक्षा करें, तदनंतर (सदृशं पतिम विन्देत) अपने योग्य पति का वरण करे ||90||

अदीयमाना भतरि मधिगच्छेद यदि स्वयं, नैनः किंचिदवाप्नोति न च य साऽधीगच्छेति ||91|| (मनुस्मृति नवम अध्याय श्लोक 91)

(अदीयमाना) पिता आदि अभिभावक के द्‌वारा विवाह न करने पर (यदि स्वयं भरतारम + अधिगच्छेत) जो कन्या यदि स्वयं पति का वरण कर ले तो (किंचित एनः न अवाप्नोति) वह कन्या किसी पाप- अपराध की भागी नहीं होती (च) और (न स अधिगच्छति) न उसे कोई पाप-दोष या अपराध होता है जिस पति को यह वरण करती है ||91||

तदध्यास्योद्‌वहेद्‌भार्याम सवर्णा लक्षणान्विताम | कुले महति संभूतां हृदयाम रूप्गुणान्विताम ||77|| (मनुस्मृति सप्तामाध्याया श्लोक 77)

उस आवास में निवास करके, अपने वर्ण की शिक्षा दीक्षा प्राप्त करके सवर्णा अर्थात सामान वर्ण की हो उत्तम लक्षणों से युक्त हो, जो हृदय को भी प्यारी

हो- अर्थात जिसे स्वयं भी पसंद किया हो, सुन्दर और रूपवाली एसी भार्या को विवाह करके लाये ||77||

मनु ने राजोचित सदाचार का प्रतिपादन करने वाले दो श्लोक कहे हैं, जो स्मृतियों में सुने जाते हैं और जिन्हें धर्मपालन में कुशल पुरुषों ने सदर स्वीकार किया। जिन्हें स्वयं मै भी अनुसरण करता और इस प्रकार मेरा यह बर्ताव हुआ।

सत्यमेवेश्वरो लोके सत्यं पद्माश्रिता सदा। सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम्।। (बाल्मीकि रामायण 2.109.13)

सत्य ही ईश्वर है। धन की देवी हमेशा सत्य की शरण लेती हैं। सत्य हर चीज की जड़ है। यह सर्वोच्च है और इसके ऊपर कुछ भी नहीं है।

रामो द्विर्नाभिभाषते॥६२॥

(अध्यात्म रामायणम 3.62 में श्री राम)

राम दो प्रकार की बात नहीं कहता।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।।

(ब्रह्मवैवर्तपुराण १/४४/७४)

(देवीभागवतपुराणम् ३/२५/६)

(नारदपुराणम्- उत्तरार्धः/अध्यायः २९ / २९-१८)

यह श्लोक कहता है कि तुम्हें अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ेगा, चाहे तुम पाप करो या पुण्य, तुम्हारा कोई भी कर्म माफ नहीं किया जाएगा, तुम्हें हर कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा। कुछ लोग क्षमा कर सकते हैं, परन्तु वह, जो समस्त दृश्य और अदृश्य जगत का कारण और रचयिता है, क्षमा नहीं करेगा।

(क्योंकि यदि ईश्वर ऐसा करता है, तो वह उन लोगों के लिए पापी है जिनके साथ अन्याय हुआ है, लेकिन वह अपने अनुयायियों के लिए उदार है)

।।जय श्री राम।।
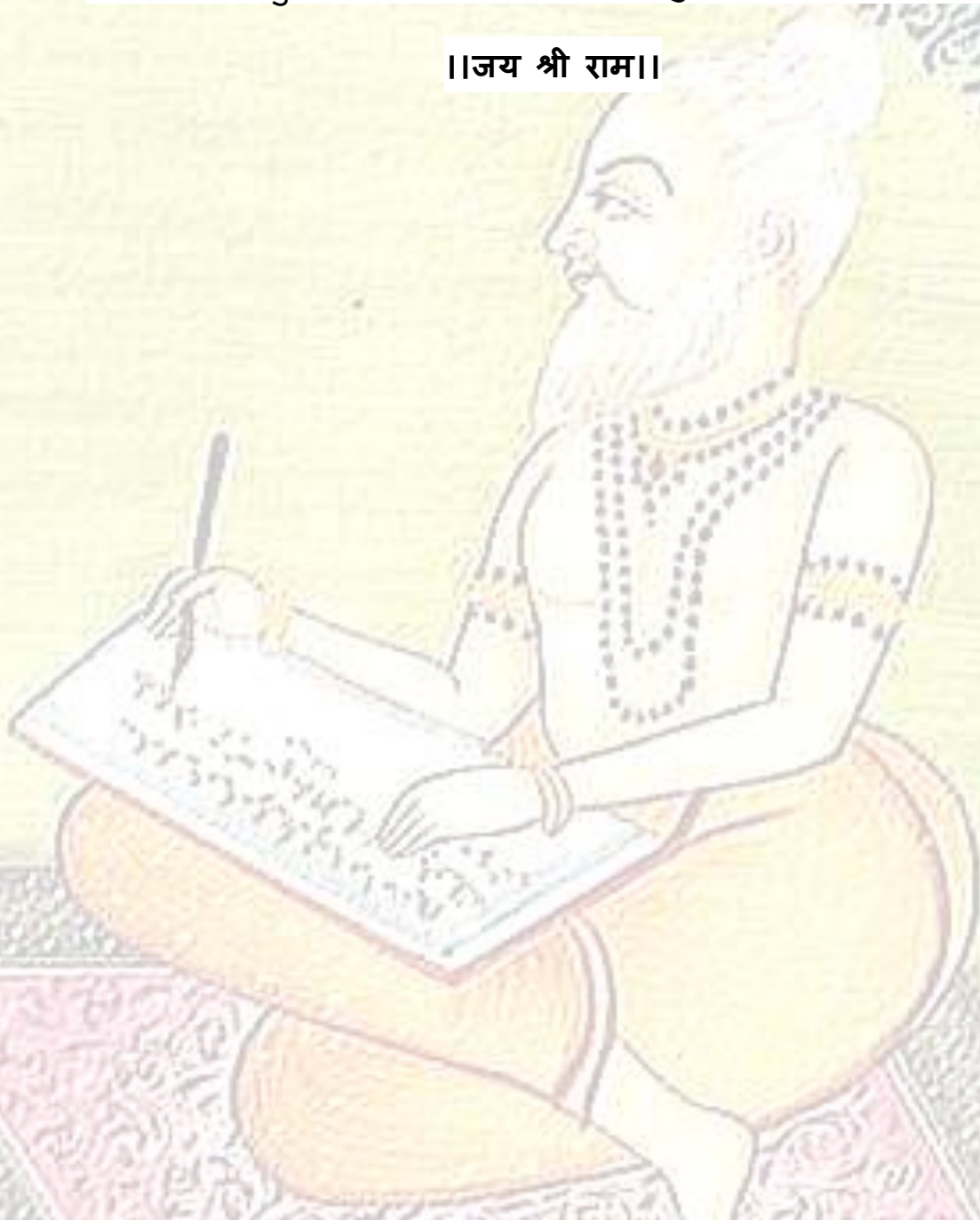
इतिद्वितियापाठः

****

जाति और विवाह की मिश्रित मान्यताओं का इतिहास

[महाभारत से वर्तमान काल]

[अन्वेषक]

खंड:३

जाति और विवाह की मिश्रित मान्यताओं का इतिहास

महाभारत काल में जैसा विदित है स्त्रियों की इच्छा ही से विवाह होता था, पर जब महाभारत युद्ध के बाद सारे देश की सेनायें ख़त्म हो गयी थी तो धर्म की रक्षा तो कोई क्या करता उल्टा ही होने लगा वे सेनायें कौन थी? महाभारत युद्ध में भाग लेने वाले नगरों के नाम निम्नलिखित-

पांडवों में से-

पांडव सेना 7 अक्षौहिणी का एक गठबंधन है, मुख्य रूप से पांचाल और मत्स्य सेना, भीम के पुत्र, घटोत्कच और वृष्णि-यादव नायकों की राक्षस सेना।

1. कुंतीभोज, कुंती साम्राज्य(कोटा😂) के राजा - 1 अक्षौहिणी
2. आरंभिक पांड्यों(तमिलनाडु का मदुरै) के राजा मलयध्वज के पास पांड्यों, चोलों और चेरों की संयुक्त सशस्त्र सेना थी- 1 अक्षौहिणी
3. चेदिस के राजा धृष्टकेतु - 1 अक्षौहिणी
4. मगध(राजगृह) के जरासंध का पुत्र सहदेव - 1 अक्षौहिणी (मगध से)
5. पांचाल नरेश द्रुपद(उत्तरप्रदेश का मैनपुरी) अपने पुत्रों सहित - 1 अक्षौहिणी
6. मत्स्य(जयपुर) के राजा विराट - 1 अक्षौहिणी
7. घटोत्कच और अन्य सहयोगी(सिवी साम्राज्य (पाकिस्तान का बहावलपुर), काशी (काशी), केकेया साम्राज्य (पाकिस्तान का शोरकोट) - 1 अक्षौहिणी

कौरव सेना-

1. भगदत्त, प्राग्ज्योतिष साम्राज्य का राजा - 1 अक्षौहिणी

2. मद्र (माद्री) के राजा शल्य - 1 अक्षौहिणी
3. भूरिश्रवा, बहलिका साम्राज्य के राजकुमार और राजा बहलिका के पोते (महाभारत) - 1 अक्षौहिणी
4. कृतवर्मा (जो कृष्ण की नारायणी सेना का नेतृत्व करता है जिसमें युद्ध से पहले अंधक, वृष्णि, कुकुरा, भोज और शैन्य के यादव वंश शामिल थे) - 1 अक्षौहिणी
5. जयद्रथ (सिंधु साम्राज्य का राजा) - 1 अक्षौहिणी
6. कंभोज के राजा सुदक्षिण - 1 अक्षौहिणी (उनके सैनिकों में यवन और शक थे)
7. अंग का राजा कर्ण - 1 अक्षौहिणी
8. कलिंग सेना - 1 अक्षौहिणी
9. गांधार का शकुनि - 1 अक्षौहिणी
10. त्रिगर्त के सुशर्मा - 1 अक्षौहिणी
11. कौरव और अन्य सहयोगी - 1 अक्षौहिणी

अन्य राज्य:

अभिरा साम्राज्य (जोधपुर), आंध्र (आंध्र प्रदेश का गुंटूर), अंग (बंगाल), , अनूप साम्राज्य (जलगांव), अस्माक साम्राज्य (महाराष्ट्र का जलगांव), असुर साम्राज्य (उत्तराखंड का भटवारी), बहलिक साम्राज्य (पाकिस्तान का गुजरांवाला), अवन्ती (इंदौर), कोशल (खलीलाबाद), कुरु (देल्ही), चीन, डांडा (दंडक वन), दराद साम्राज्य (पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र में शारदा), दशरना (मध्यप्रदेश का छतरपुर), द्रविड़ साम्राज्य (तमिलनाडु का नेल्लूर), द्वारका साम्राज्य (द्वारका), गांधार साम्राज्य (इस्लामाबाद), गोमांत साम्राज्य (गोवा), हरा हुन साम्राज्य (तजाकिस्तान), हेहेया साम्राज्य (मध्य प्रदेश का महेश्वर), हुन साम्राज्य (चीन का काश्गर विभाग), सूर्य राजवंश, कलिंग (ओडिशा), कम्बोज (पाकिस्तान अधिकृत बागरोट), कांची साम्राज्य (तमिलनाडू का तिरुवन्नमलई), कर्नाटक

साम्राज्य (कर्णाटक का दावणगेरे), केरल साम्राज्य, किकाटा साम्राज्य (अजमेर), किमपुरुष साम्राज्य (हिमालय), किन्नरा साम्राज्य (हिमालय), किराता साम्राज्य (हिमालय), किष्किंधा (कर्णाटक का होसपेट), कोंकण साम्राज्य (महाराष्ट्र के रत्नागिरी), श्रीलंका, लौहित्या साम्राज्य (अरुणाचल प्रदेश का ब्रह्मकुंड क्षेत्र), महिष साम्राज्य (कर्नाटक के मैसुर), मणिपुर, मुशिका वंश (केरल का कोझीकोडे), नाग साम्राज्य (संभवतः नागालैंड), नासिक्य साम्राज्य (पंचवटी नासिक महाराष्ट्र), नेपा साम्राज्य (नेपाल), ओड्रा साम्राज्य (ओडिशा का देओगढ़), पहलवा साम्राज्य (ईरान का तोर्बत-ए-जाम), पारदा साम्राज्य, परमा चीन साम्राज्य (तिब्बत), परमा कम्बोज साम्राज्य (तजाकिस्तान), पारसिका साम्राज्य, पर्वत साम्राज्य (देहरादून), पौरव (लोहाघाट), प्रागज्योतिष साम्राज्य (असम का बिलासिपारा), राक्षस साम्राज्य (उत्तराखंड का नन्दादेवी राष्ट्रीय अभ्यारण्य), ऋषिका साम्राज्य (चीन का ख़ोतान विभाग), शक (तजाकिस्तान के दुशांबे), सलवा साम्राज्य (राजस्थान के सीकर), सारस्वत साम्राज्य (पंजाब), सौवीरा साम्राज्य (जैसलमेर से पश्चिम), शूरपरका (गुजरात का सूरत नगर), सिंधु साम्राज्य (पाकिस्तान का सिंध), सोनिता साम्राज्य (असम में तिनसुकिया), सुहमा साम्राज्य (बंगाल का जलेश्वर), त्रिगर्त साम्राज्य (पंजाब का अमृतसर), तुषार (लद्दाख), उसिनारा साम्राज्य, उत्कल साम्राज्य (ओडिशा का कटक), उत्तर कुरु साम्राज्य (किर्गिस्तान), उत्तर मद्र साम्राज्य (उज्बेकिस्तान का समरकंद), मद्र साम्राज्य (पाकिस्तान का हफिज़ाबाद), वांगा साम्राज्य (बांग्लादेश का ढाका), विदर्भ साम्राज्य (पूर्वी महाराष्ट्र), विराट साम्राज्य, यदुवंश, यौधेया साम्राज्य

तिरछी रेखा में पान्डव पक्ष

क्षैतिज रेखा में कौरव पक्ष

मान्चित्र कुन्जी

महाभारत में कौरव-पांडव पक्ष
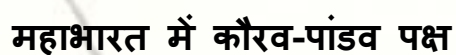
भारत युद्ध के बाद इन सबका नाश हो गया था- प्रमाण

अक्षौहिण्य: समेतास्तु तव पुत्रस्य भारत।
एकादश हता युद्धे ताः पांडुसृन्जयैः।। **(संजय धितराष्ट्र को)**

(महाभारत शल्यपर्व अध्याय 12 श्लोक 10)

प्रभो! भारतवंशी नरेश! आपके पुत्र के पास ग्यारह अक्षौहिणी(28,97,840 सैनिक) सेनायें थी, परन्तु युद्ध में पांडवों और सृन्जयों ने उन सबका संहार कर डाला।

रथानाम द्वे सहस्त्रो तु सप्त नामश तानी च।
पञ्च चाश्वसहस्त्राणि पत्तीनां च शतं शताः।।

(महाभारत शल्यपर्व अध्याय 12 श्लोक 15)

संजय ने कहा- हे राजेन्द्र! पांडवों की विशाल सेना में से केवल दो सहस्त्र(2000) रथ, सात सौ(700) हाथी, पांच हज़ार(5000) घोड़े और दस सहस्त्र(10,000) पैदल बचे थे। (कुल 17,700 युद्ध के आरम्भ में पांडवों के पास 7 अक्षौहिणी: 18,37,080 सेना थी)

तो युद्ध के बाद बचे कौन थे?

महान युद्ध महाभारत के अंत में, युद्ध में भाग लेने वालों में केवल 13 लोग बच गए।

1. श्री कृष्ण,
2. सात्यकी, (पांडवों के पक्ष में लड़ने वाला यादव)
3. युधिष्ठिर,
4. भीम,
5. अर्जुन
6. सहदेव,

7. नकुल,
8. युयुत्सु, (युद्ध से पहले ही कौरवो को छोड़ पांडव पक्ष को चला गया था)
9. भीष्म,
10. कृपाचार्य, (कौरव सेना में कुरुओं के धर्माचार्य)
11. कृतवर्मा,(कौरव पक्ष का यदुवंशी, नारायणी सेना का सेनापति)
12. अश्वत्थामा,(द्रोणपुत्र)

श्री कृष्ण सहित पूरा यदुवंश अपने आपसी टकराव में मृत्यु को प्राप्त हो गया, जिसमे सब पुरुष मारे गए, अंत में श्री कृष्ण जिनका पुत्र प्रद्युम्न था वह भी इस संघर्ष में मारा गया था, उन्होंने इस अवस्था में विषाद ग्रस्त हो राज्य छोड़ वानप्रस्थी हो वन को प्रस्थान किया और एक शिला पर समाधिस्त हुए तो एक बहिलिये ने उनके पैर में तीर मार दिया, जिसे उन्होंने क्षमा कर दिया और पश्चात समाधिस्त होकर प्राण छोड़ दिये, समाधी से पूर्व बभ्रु सेवक को कुरु राज्य से सहायता मांगने को भेजा, परन्तु युद्ध के बाद पांडवों की शक्ति भी शिथिल हो गयी थी, किसी प्रकार अर्जुन आया पर उसे बीच में ही डाकुओं ने लूट लिया और इसी बीच द्वारका बिना पुरुषों के रक्षित स्त्रियों के साथ ही समुद्र में ही डूब गयी। बाद में अर्जुन ने श्री कृष्णा का किसी तरह अंत्येष्टि की।
(महाभारत मौसलपर्व)

इसके पश्चात भारत का राज्य शासन इस प्रकार हुआ

1. **सम्राट युधिष्ठिर:** अर्जुन, भीम और युयुधान-सात्यकि के बाहुबल से तथा श्री कृष्ण की अपार नीति और दूरदर्शिता के कारण पांडव-युधिष्ठिर भारतयुद्ध में विजयी हुआ। विजय के पश्चात युधिष्ठिर हस्तिनापुर के सिंघासन पर आरुढ़ हुआ। पर इतने बड़े नरसंहार का उसके मन पर बहुत बुरा प्रभाव हुआ था। इसके बाद व्यास आदि ने अश्वमेध की आज्ञा दी, जो युद्ध के दो वर्ष पश्चात हुआ। युद्ध के

कुछ काल बाद परीक्षित का जन्म हुआ युधिष्ठिर ने 36 वर्ष तक राज्य किया

युधिष्ठिर अपने भाइयों और द्रौपदी सहित अर्जुन के पौत्र परीक्षित को राज्य देकर स्वर्ग को चले गए **(महाभारत स्वर्गारोहण पर्व)**

2. **परीक्षित 'द्वितीय'**: युधिष्ठिर ने राज्य त्याग कर, अर्जुन के पौत्र परीक्षित को दे दिया। आगे चलकर परीक्षित ने अपने एक पाप के कारण भयंकर मृत्यु प्राप्त की। कलियुग इनके काल में ही प्रारंभ हुआ, यह केवल काल सीमा ही थी न की सिर्फ मनुष्यों के विघटन की।
3. **जनमेजय तृतीय:** परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने ही प्रसिद्द सत्रिक यज्ञ करवाये थे।
4. **शतानिक प्रथम:** जनमेजय के बाद उनके पुत्र शतानिक हुए।
5. **सहस्त्रानीक:** शातानिक के पुत्र।
6. **अश्वमेधदत्त:** जनमेजय के प्रथम या द्वितीय अश्वमेध-यज्ञ के कुछ दिन पश्चात इस का जन्म हुआ था, इसलिए इसका नाम अश्वमेधदत्त हुआ।
7. **अधिसीमकृष्ण:** इनके काल में नैमिशारन्य वालों का दीर्घ सत्र यज्ञ हुआ, और **<u>इनके बाद शनैः शनैः ऋषियों का और संस्कृति का भी अभाव आरम्भ हो गया।</u>**
8. **निचक्षु:** इनके राज्य में हस्तिनापुर गंगा में बह गई। तब निचक्षु ने कौशम्बी को अपनी राजधानी बनाया। उनके महाबली आठ पुत्र हुए
9. **भूरी = उष्णं:** इनका नाम मात्र अवशिष्ट है।
10. **चित्ररथ:** उष्ण के पश्चात चित्ररथ राजा हुआ।
11. **शुचिद्रथ:** चित्ररथ का पुत्र शुचिद्रथ।
12. **वृष्णीमान:** सत्यार्थ प्रकाश में इसे उग्रसेन भी लिखा है।
13. **सुषेण:** यह राजा महावीर और पवित्र था।
14. **सुनीथ:** वायु पुराण में सुतीर्थ है।

15. **रुच:** सुनीथ के पश्चात रुच हुआ।
16. **नृचक्षु:** मत्स्य पुराण में इसे सुमहाशया लिखा है।
17. **सुखिबल:** नृचक्षु का दायाद सुखिबल था।
18. **परिप्लव:** सुखिबल का पुत्र।
19. **सुनय:** सुनय परिप्लव का पुत्र था।
20. **मेधावी:** सुनय दायाद-मेधावी पुत्र था।
21. **नृपञ्जय/पुरंजय:** इसके पाठांतर पुरंजय और रिपुंजय था।
22. **दूर्व:** दूर्व, उर्व या मृदु त्रिपंजय का उत्तरवर्ती था।
23. **तिग्मात्मा:** दुर्वात्मा का तिगात्मा था।
24. **बृहद्रथ:** तिग्म-पुत्र बृहद्रथ।
25. **वसुदान:** बृहद्रथ के पश्चात वसुदान राजा बना। प्रतिज्ञा यौगंधरायण के अनुसार इसका नाम सहस्त्रनीक था।
26. **शतानीक द्वितीय:** वसुदान का पुत्र, यह शतानीक गौतम बुद्धा के समकालीन था।
27. **'वत्सराज' उदयन:** यह संस्कृत साहित्य का प्रमुख पात्र है। बाण और कालिदास, गुणाढय और बहस तथा विष्णु-गुप्त कौटिल्य और श्रीहर्ष ने भी इसकी कीर्ति गायी है।
28. **वहीनर:** पुराणों में इसे वीर राजा कहा गया है। कथासरित्सागर अदि में इसकी वीरता की अनेक कथाएं लिखी है।
29. **दण्डपाणी:** इसका नाममात्र अवशिष्ट है।
30. **निरामित्र:** दण्डपाणी के पश्चात निरामित्र अवशिष्ट है।
31. **क्षेमक:** अर्जुन और अभिमन्यु के वंश में यह अंतिम राजा था।

पुराणों में एसा ज्ञात होता है की इसका अंत सम्राट नन्द द्वारा हुआ होगा। सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार क्षेमक का अंत उसके प्रधान विश्श्रवा द्वारा हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ: (वायु पुराण, सत्यार्थ प्रकाश, पं. भगवद्दत्त का भारतवर्ष का इतिहास)

इस प्रकार पांडवों तक के वंशजों का अंत हो गया 'तो ऋषि महर्षि का तो कहना ही क्या, घनानंद ने चाणक्य से क्या व्यवहार किया ये तो सबको ज्ञात ही है। ऋषि महर्षि तो **अधिसीमकृष्ण** के काल से ख़तम होते चले गए, क्यों की जब धार्मिक राजा समाप्त हो जाते हैं तो सज्जन लोगो की रक्षा नहीं होती, और अन्य मतवाले लोग सत्यमत से डरकर उसे और दबाते हैं।

इसके उत्तरकाल में जो ऋषि-ब्राह्मण हुए वे आलस्य, प्रमाद और मुर्खता के आदि हुए। ऋषि बनने का अर्थ है मंत्र दृष्ट होना अर्थात इश्वर से योग में समाधियाँ लगाकर मन्त्रों के अर्थ- समुद्र से मोतियों की भाँती लाना। जिससे वेद का सही ज्ञान होता है, जीवन सब शुद्ध रहता है तो ज्ञान होने लगता है

इस प्रकार राजा लोग अपने मन माने कार्य करने लगे और ब्राह्मण अपने अपने। दोनों ने अपने आपको एक दुसरे का हितैषी बना लिया। वह उसके अधिकार की रक्षा करता तो यह भी उसकी जैसी स्थिति। अयोग्य राजा नामधारी ब्राह्मणों को दान देता और यह नामधारी ब्राह्मण उसके सिंहासन की रक्षा करते, आज की गुटबाजी की राजनीति ही मान लें। एसा पाकर अन्य वर्ण भी पथभ्रष्ट हो एक दुसरे से राग द्वेष करने लगे, और यहाँ से विषमता शुरू हुई। लोक-समुदाय में स्वार्थ बढ़कर सभी ने अपने हितों की रक्षा के लिए अपने-अपने गुट बनाये। जो नहीं होना था वही हुआ जब इस आर्य जाति का मस्तिष्क सड गया, और हो ही क्या सकता था? भाग्यवाद, फलित ज्योतिष और बाबा वाक्यम प्रमाणं के उद्धरण अनेक हिन्दू राजा और सोमनाथ सरीखे हिन्दू मंदिरों ने देखे-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥१८॥

यजुर्वेद - अध्याय 31. मन्त्र 18

यदि मनुष्य इस लोक-परलोक के सुखों की इच्छा करें तो सबसे अति बड़े स्वयंप्रकाश और आनन्दस्वरूप अज्ञान के लेश से पृथक् वर्त्तमान परमात्मा को जान के ही मरणादि अथाह दुःखसागर से पृथक् हो सकते हैं, यही सुखदायी मार्ग है, **इससे भिन्न कोई भी मनुष्यों की मुक्ति का मार्ग नहीं है**॥१८॥

जिनका दान जो पहले धीर-शील थे अब उनका हाल यही निम्नलिखित मालूम पड़ता है-

"जब घृणा एक समूह की दुसरे समूह के रूप और अस्तित्व से हो जाति है तो एक दुसरे की अजन्मी संतति तक से मनुष्य सामान्य सा द्वेष करने लग जाते हैं, उसकी मनोवृत्ति में वह समूह को वह अनिच्छित या निस्पृह समझने लगता है। इसका आरम्भ अपने को विभक्त कर दूसरों से उत्तम मानने की मानसिकता है।"

(नस्लवाद का मनोविज्ञान एक संज्ञानात्मक-ऐतिहासिक दृष्टिकोण)

इसे विज्ञान की भाषा में **superiority complex** (श्रेष्ठता की भावना) वह रवैया जहां कोई सोचता है कि वह दूसरों से श्रेष्ठ है। इस मानसिकता वाले लोग अक्सर अपने बारे में बढ़ा-चढ़ाकर राय रखते हैं। उन्हें विश्वास हो सकता है कि उनकी क्षमताएं और उपलब्धियां दूसरों से बेहतर हैं। हालाँकि, श्रेष्ठता की भावना वास्तव में कम आत्मसम्मान या हीनता की भावना को छिपाती है। यह अपनी अपर्याप्तता की भावनाओं के लिए मस्तिष्क का एक रक्षा तंत्र है। श्रेष्ठता की भावना वाले लोग अक्सर अपने आस-पास के लोगों के प्रति नीचा रवैया रखते हैं। लेकिन ये महज़ असफलता या कमी की भावनाओं को छुपाने का एक तरीका है। जो केवल मानसिकता है चाहे उपलब्धि या योग्यता हो या न हो। संभवतः ब्राह्मण पुत्रों को इसकी आवश्यकता महसूस हुई की खुदकी योग्यता तो है नहीं ब्राह्मण कर्मों की तो जाति ही बद्ध करदें. इसलिए शायद जातिबध्यता का नियम किया होगा।

पर यह हुआ कब? अगर महाभारत में एसा नहीं था तो इसका उदय कब का है? तो अगला प्रमाण देखिये-
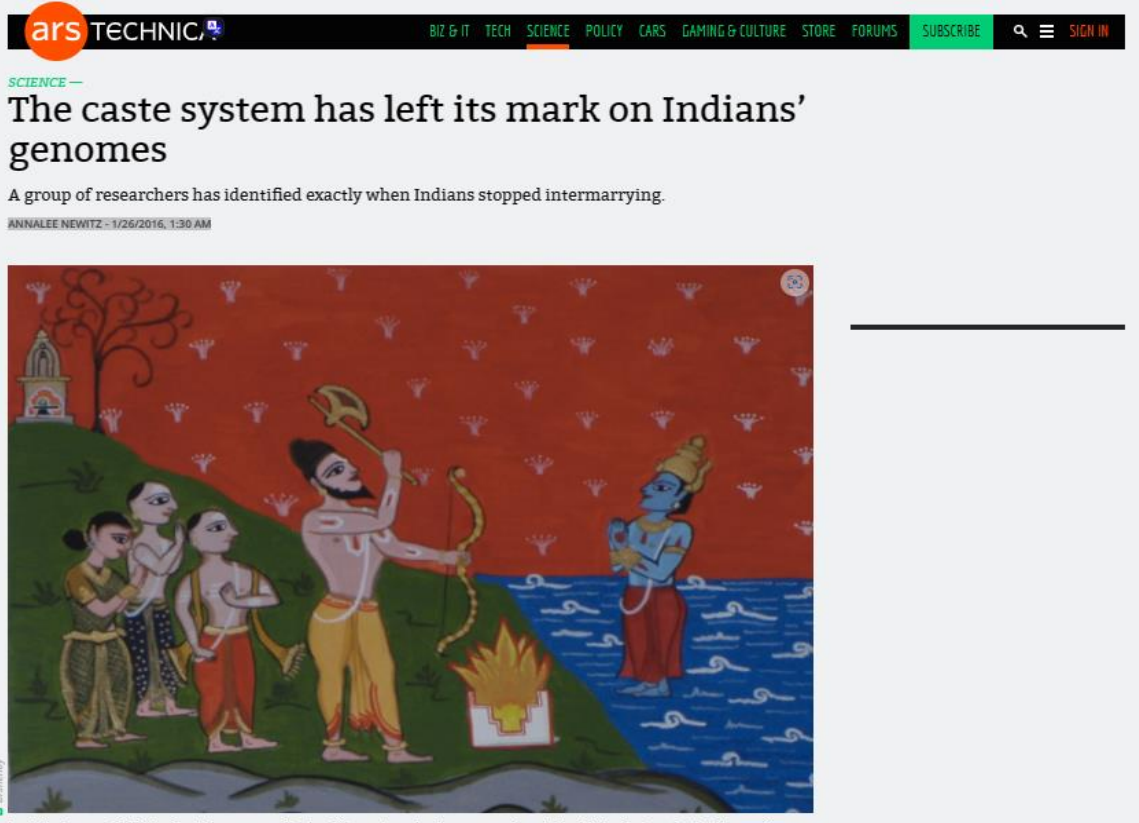
[चित्र प्रसंग: भगवान परशुराम ब्राह्मण बसने वालों के साथ भगवान वरुण को समुद्र को कम करने और ब्राह्मणों को केरल में अपना घर बनाने की अनुमति देने का आदेश देते हैं।]

(अनुवादित) पत्रिका:

'शोधकर्ताओं के एक समूह ने ठीक से पहचान की है कि भारतीयों ने कब अंतर्विवाह(सजातीय) करना बंद कर दिया।'

ANNALEE NEWITZ - 1/26/2016, 1:30 AM

(सूत्र: The caste system has left its mark on Indians' genomes | Ars Technica)

1,500 साल पहले, गुप्त सम्राटों ने भारत के बड़े हिस्से पर शासन किया था। उन्होंने राष्ट्र को मजबूत करने में मदद की, लेकिन उन्होंने भारत की जाति व्यवस्था को भी लोकप्रिय बनाया, जिससे लोगों के लिए अपनी

जातियों के बाहर शादी करना सामाजिक रूप से अस्वीकार्य हो गया। अब, समकालीन भारतीयों के बीच आनुवंशिक भिन्नता के एक नए विश्लेषण से पता चला है कि इस सामाजिक बदलाव ने एक विशिष्ट आनुवंशिक हस्ताक्षर को पीछे छोड़ दिया है।

"आनुवंशिक पुनर्संयोजन **(genetic recombination)** से पीढ़ियों का पता लगाने के लिए एक सामान्य प्रणाली का उपयोग करते हुए, शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया कि "पूर्वोत्तर भारत से [एक] को छोड़कर सभी उच्च जाति की आबादी ने लगभग 70 पीढ़ियों पहले एंडोगैमी (सजातीयविवाह) का अभ्यास करना शुरू कर दिया था। यह समय अनुमान उस अवधि के उत्तरार्ध का है जब गुप्त सम्राटों ने भारत के बड़े इलाकों पर शासन किया था (गुप्त साम्राज्य, 319-550 ई.)।"

नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस, 2016 की कार्यवाही

जातिगत मिश्रित मान्यताओं की उत्पत्ति

यहां मनुष्यद्रोही दूषित परम्पराए जहाँ से आयी उसका वर्णन करते हैं–

जाति की शाब्दिक व्युत्पत्ति

अंग्रेजी शब्द कास्ट (/kaːst, kæst/) स्पेनिश और पुर्तगाली कास्टा से निकला है, जिसका अर्थ जॉन मिनशू के स्पेनिश शब्दकोश (1569) के अनुसार, "नस्ल, वंश, जनजाति या नस्ल" है।[7] जब स्पैनिश ने नई दुनिया का उपनिवेश किया, तो उन्होंने इस शब्द का इस्तेमाल 'कबीले या वंश' के लिए किया। हालाँकि, पुर्तगाली ही थे, जिन्होंने पहली बार अंग्रेजी शब्द 'कास्ट' के प्राथमिक आधुनिक अर्थ में कास्टा का उपयोग किया था, जब उन्होंने इसे 1498 में भारत आने पर हजारों अंतर्विवाही, वंशानुगत भारतीय सामाजिक समूहों पर लागू किया था। [7] [8] इस बाद वाले अर्थ के साथ वर्तनी जाति का उपयोग पहली बार 1613 में अंग्रेजी में प्रमाणित किया गया है। लैटिन अमेरिकी संदर्भ में, जाति शब्द का उपयोग कभी-कभी नस्लीय वर्गीकरण की
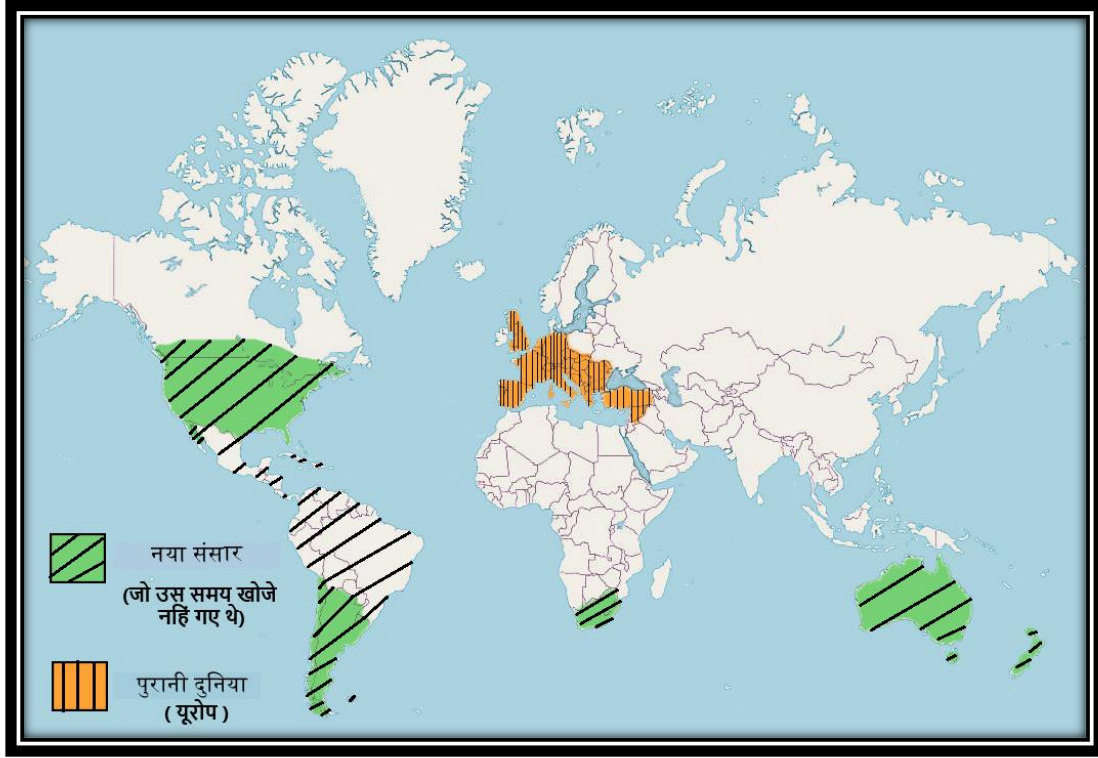
जाति प्रणाली का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो इस आधार पर होता है कि कोई व्यक्ति शुद्ध यूरोपीय, स्वदेशी या अफ्रीकी मूल का था, या उसके कुछ मिश्रण, विभिन्न समूहों को नस्लीय पदानुक्रम में रखा गया था

[7*] "caste"। Oxford English Dictionary (Online ed।)। Oxford University Press। (Subscription or participating institution membership required।)

[9*]^ Pitt-Rivers, Julian (1971), "On the word 'caste'", in T O Beidelman (ed।), The translation of culture essays to E।E। Evans-Pritchard, London, UK: Tavistock, pp। 231–256, GGKEY:EC3ZBGF5QC9

भारत में वर्ण का अर्थ समाज की अवधारणा से हटकर उसके सदस्यों के **कार्य की प्रकृति के अनुसार चार प्रकार के वर्णों या श्रेणियों से बनी होती थी**: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। वर्ण कोई **विरासत में मिली श्रेणी नहीं थी** और **व्यवसाय ही वर्ण का निर्धारण करता था**।

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते ॥३१॥

स्कन्द पुराण खण्डः ६ (नागरखण्डः)/अध्यायः २३९ श्लोक 31

अर्थ: जन्म से सभी शुद्र हैं, अपने संस्कारों से व्यक्ति उठता है।

धर्म से दुर ब्राह्मणों ने समय के अंतराल में समाज में व्यक्ति की जाति जन्म के समय निर्धारित कर दिया और उन्हें उस जाति का व्यवसाय अपनाने पर मजबूर होना पड़ा;
इससे पूर्व समाज के चारों भाग अपनी योग्यता और व्यक्तिगत शक्तियों के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कारकों के आधार पर अपना व्यवसाय बदल सकते थे और उन्होंने बदला भी। उदाहरण लीजिये-

1. सत्यकाम जाबाल(छांदोग्य उपनिषद् में शुद्रकुल उत्पन्न)

2. सुदक्षिण क्षैमी(सामवेद का तावलकर ब्राह्मण में शुद्र उत्पन्न)

3. तुलसीदास(चरवाही का लड़का)

4. महर्षि वेद व्यास(सत्यवती मछ्वारी का लड़का)

5. महर्षि वाल्मीकि(शिकारी का लड़का)

6. ऋषि वत्स(तांड्य ब्राह्मण (14.6.6), मनुस्मृति (8.116) में शूद्र-पुत्र)

7. काकशिव और चक्षु:(वायु पुराण खंड 2, अध्याय 37, श्लोक 70-73, पृष्ठ 796, ऋषि दिरघातम और एक शूद्रा के पुत्र)

ब्रह्म पुराण [अध्याय. 115, खंड53-58]:

“वेदों के ज्ञान से भरपूर शूद्र भी ब्राह्मण और सुसंस्कृत है तो ब्राह्मण माना जाता है एवं एक ब्राह्मण भी अपना ब्राह्मणत्व त्याग देगा और शूद्र बन जाएगा यदि उसका आचरण नीचा है और यदि उसका आहार और संस्कार ब्राह्मणत्व से तनिक भी नीचा या घटिया है। ब्रह्मा ने स्वयं कहा है कि हे सज्जन महिला, यदि शूद्र भी सदाचारी है, पवित्र संस्कारों से शुद्ध है या

उसने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है, तो उसे भी ब्राह्मण की तरह समझ लेना चाहिए। न तो गर्भ और न ही वंशावली ब्राह्मणत्व का कारण हो सकती है। आचरण ही असली कारण है. यदि आचरण शुद्ध है तो सभी मनुष्य ब्राह्मण हैं। यहां तक कि एक शूद्र भी जो अच्छे आचरण का सख्ती से पालन करता है, ब्राह्मणत्व प्राप्त करता है"।

महाभारत, भीष्म पर्व, पुस्तक 6, भगवद गीता, अध्याय 4, श्लोक 13):

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागश: |
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ||

"गुण (गुण) और कर्म (आचरण) के भेद के अनुसार वर्ण का चतुर्भुज विभाजन मेरे द्वारा बनाया गया था। (कृष्ण)

वर्तमान समय में भी दलित कई मंदिरों में पुजारी के पद पर आसीन रहे हैं। तो हमारे शास्त्रों के अनुसार वे ब्राह्मण हैं

1. दलित पुजारी पिछले 200 वर्षों से यूपी मंदिर की अध्यक्षता कर रहे हैं - टाइम्स ऑफ इंडिया

2. केरल दलित पुजारी: 'कोई भी हिंदू ब्राह्मण हो सकता है'

नौ दशक से भी पहले, दलितों और पिछड़ी जातियों को मंदिरों के आसपास भी जाने की अनुमति नहीं थी। (स्रोत: सुरेश मामूद)

3. एक बहिष्कृत से मंदिर के पुजारी तक - लाइवमिंट

दलित पुजारी फलाहारी सूर्यवंशी दास पटना के महावीर मंदिर में दैनिक अनुष्ठान करते हैं। फोटो: इंद्रनील भौमिक/मिंट

4. भारतीय मंदिरों में सबसे निचली जाति की विधवाओं को पुजारी के रूप में स्थान दिया जाता है

5. एससी-एसटी पुजारियों का पहला बैच तिरुपति मंदिरों में कार्यभार संभालने के लिए तैयार - टाइम्स ऑफ इंडिया

दलित और पिछड़े समुदायों के लगभग 200 लोगों ने तीन महीने तक कठोर प्रशिक्षण लिया है। स्रोत: टीओआई

6. पूर्वी भारतीय राज्य बिहार में निचली जातियों को हिंदू पुजारी बनाया गया - ucanews.com

सन्दर्भ:

1. Kerala Dalit priests: 'Any Hindu can be a Brahmin'
2. From an outcast to a temple priest – Livemint
3. Dalit priest Phalahari Suryavanshi Das performs the daily rituals at Mahavir temple in Patna. Photo: Indranil Bhoumik/Mint
4. At Indian temple, widows from lowest caste are exalted as priests
5. First batch of SC-ST priests ready to take charge at Tirupati temples – Times of India
6. Low castes made Hindu Priests in Eastern Indian state of Bihar – ucanews.com

जैसा कि आप देख सकते हैं, पहले वर्णों के बीच कोई भेद नहीं था और हमारे शास्त्रों के अनुसार, उच्च स्थिति प्राप्त करने का एकमात्र तरीका किसी के कर्म और गुण हैं, न कि जन्म।

अंग्रेजों द्वारा वर्णों का दुरुपयोग किया गया और हिंदू धर्म को नष्ट करने के लिए एक निश्चित जाति व्यवस्था को वर्ण नाम दिया गया। लेकिन हम

फिर से इस भयावह व्यवस्था को उखाड़ फेंक रहे हैं और दलित ब्राह्मण बन रहे हैं.

लेकिन उपरोक्त सबूत मीडिया और राजनेताओं द्वारा कभी नहीं दिखाए या विज्ञापित किए जाते हैं और दुख की बात है कि केवल एक नकारात्मक छवि पेश की जाती है।

लेकिन जल्द ही कोई ऐसा नहीं कर पाएगा क्योंकि अधिक से अधिक बाधाएं टूटेंगी और एक समतामूलक समाज का निर्माण होगा, जिसका एकमात्र मानदंड जन्म नहीं बल्कि योग्यता होगी।

सन्दर्भ: Can a Shudra become a Brahmin according to the Vedas? (wordpress.com)

“2016 के एक अध्ययन ने निर्धारित किया कि भारतीयों के डी.एन.ए विश्लेषण पर आधारित अंतर्विवाही जातियों (caste closed marriage) की उत्पत्ति गुप्त साम्राज्य के दौरान हुई थी”। [10] [11] [12] (३ सन्दर्भ)

[10] ***"Genetic study suggests caste began to dictate marriage from Gupta reign" / The Indian Express / 16 February 2016 / Retrieved 5 April 2023 /***

[11]^ ***Kalyan, Ray (27 January 2016) / "Caste originated during Gupta dynasty: Study" /***

[12]^ ***"Even with a Harvard pedigree, caste follows 'like a shadow'" / The World from PRX / Retrieved 10 September 2021 /***

[13] *Caste system has left imprints on genes: study - The Hindu*

[14] Caste System originated during Gupta dynasty: Study | Mystery of India

[15] Genetic study suggests caste began to dictate marriage from Gupta reign | India News - The Indian Express

[16] Jāti - Wikipedia

[17] Caste originated during Gupta dynasty: Study (deccanherald.com)

[18] Caste system left its mark on Indians' DNA: Study (business-standard.com)

[19] Emergence of sociocultural norms restricting intermarriage (endogamy) coincides with foreign invasions of Bharat (hindupost.in)

[20] Caste System in Gupta Era - GKToday origin of caste system and adoption of shudra practices by kshatriyas and brahmins

[21] Emergence of sociocultural norms restricting intermarriage in large social strata (endogamy) coincides with foreign invasions of India | PNAS

[22] Religion & Culture during Gupta Period - Ancient India History Notes (prepp.in)

[23] Emergence of sociocultural norms restricting intermarriage in large social strata (endogamy) coincides with foreign invasions of India - PMC (nih.gov) (American National Library of Medicine)

[24] Gupta Empire - MCQ Question and Answer (atnyla.com) Question. 59

[25] Features Of The Caste System In India - Sociology UPSC (lotusarise.com)

[26] write a note on religion during the Gupta period give full long answer - Brainly.in (kaavyashreej2's answer)

[27]

तत्पश्चात वर्णबाध्यता करकर अपनी जाति से अन्यों का बहिष्करण करने से योग्य पुरुष भी कुछ कह न पाए इसका इंतज़ाम राजा को राज़ी करकर लिवा लिया गया, तुच्छ साधन हीन करता भी क्या? बेचारा आज के सत्यवादी जैसे राजा के गुंडों द्वारा गधे की तरह हांक दिया जाता। जिससे अन्य चुप हो जाया करते.

जब 'खुदा' ही डाका डालने लगे, तो अर्जी किस्से लगाए?

एक समा सा और बना है की जो कथित तौर पर अपने कुल को अपनी प्रतिष्ठा को ख़त्म कर डालते हैं उनके पिता और अग्रज उन्हें मार डालें, जिसे अंग्रेजी में ऑनर किलिंग(honour-killing) कहते हैं। यह परंपरा भारत की नहीं कबीले अरब की है

इस्लाम में ऑनर किलिंग की अनुमति है और माता-पिता अपने बच्चों को मार सकते हैं क्योंकि उन पर उनका कानूनी अधिकार है।

قُلْ تَعَالَوْا۟ أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ ۖ أَلَّا تُشْرِكُوا۟ بِهِۦ شَيْـًٔا ۖ وَبِٱلْوَٰلِدَيْنِ إِحْسَٰنًا ۖ وَلَا تَقْتُلُوٓا۟ أَوْلَٰدَكُم مِّنْ إِمْلَٰقٍ ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ وَلَا تَقْرَبُوا۟ ٱلْفَوَٰحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا۟ ٱلنَّفْسَ ٱلَّتِى حَرَّمَ ٱللَّهُ إِلَّا بِٱلْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّىٰكُم بِهِۦ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ (القرآن6.151)

*"आओ, मैं तुम्हें वह सुनाता हूँ जो तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए एक पवित्र कर्तव्य बनाया है: कि तुम उसके लिए किसी को भागीदार मत बनाओ और तुम माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो, और तुम अपने बच्चों को गरीबी के कारण नहीं मार डालो - हम आपके लिए और उनके लिए प्रदान करें - और यह कि आप भद्दी चीज़ों के करीब न जाएँ, चाहे खुली हों या छिपी हुई हों। और यह कि तुम उस जीवन को, जिसे अल्लाह ने पवित्र बनाया है, **न्याय के मार्ग के अतिरिक्त हत्या न करो।** यह उस ने तुम्हें इसलिये आदेश दिया है, कि तुम समझ सको"*।(अनुवादित: पिकथॉल)

(कुरान 6.151)

मुसनद अहमद 346

Musnad Ahmad 346 - Musnad `Umar b. al-Khattab (ra) - مُسْنَدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - Sunnah.com - Sayings and Teachings of Prophet Muhammad (صلى الله عليه و سلم)

अम्र बिन शुऐब से उनके पिता से रिवायत है कि उनके दादा ने कहा:

“एक आदमी ने जानबूझकर अपने (अपने) बेटे की हत्या कर दी और मामला 'उमर बिन अल खत्ताब (ردي الله عنه) के पास भेजा गया, जिन्होंने फैसला सुनाया

Musnad `Umar b. al-Khattab (ra) — مُسْنَدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

It was narrated from ‘Amr bin Shu`aib from his father that his grandfather said:

A man killed his (own) son deliberately and the case was referred to `Umar bin al Khattab (رضى الله عنه), who ruled that the murderer should pay one hundred camels (as diyah): thirty three-year-old she-camels, thirty four-year-old she-camels and forty five-year-old she camels. He said: And the killer does not inherit anything. Were it not that I heard the Messenger of Allah (ﷺ) say, `No father is to be killed in retaliation for his son," I would have executed you.

حَدَّثَنَا أَبُو الْمُنْذِرِ، إِسْمَاعِيلُ بْنُ عُمَرَ أُرَاهُ عَنِ حَجَّاجٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ، قَالَ قَتَلَ رَجُلٌ ابْنَهُ عَمْدًا فَرُفِعَ إِلَى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فَجَعَلَ عَلَيْهِ مِائَةً مِنَ الْإِبِلِ ثَلَاثِينَ حِقَّةً وَثَلَاثِينَ جَذَعَةً وَأَرْبَعِينَ ثَنِيَّةً وَقَالَ لَا يَرِثُ الْقَاتِلُ وَلَوْلَا أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ لَا يُقْتَلُ وَالِدٌ بِوَلَدِهِ لَقَتَلْتُكَ.

Grade: A Hasan Hadeeth] (Darussalam)

Reference : Musnad Ahmad 346
In-book reference : Book 2, Hadith 252

Report Error | Share | Copy ▼

कि हत्यारे को एक सौ ऊंट (दीया के रूप में) देना होगा: तैंतीस वर्षीय वह-ऊंटनी , चौंतीस वर्षीय ऊँटनी और पैंतालीस वर्षीय ऊँटनी। उन्होंने कहाः और हत्यारे को कुछ भी विरासत में नहीं मिलता। ***यदि मैंने अल्लाह के दूत को यह कहते हुए नहीं सुना होता, 'किसी भी पिता को उसके बेटे के प्रतिशोध में नहीं मारा जाना चाहिए,' तो मैंने तुम्हें मार डाला होता।“***

सुनन इब्न माजाह/हदीस 2661

इब्न अब्बास से वर्णित है कि अल्लाह के दूत ने कहा:
"एक पिता को अपने बेटे के लिए नहीं मारना चाहिए।"

Sunan Ibn Majah 2661 - The Chapters on Blood Money - كتاب الديات - Sunnah.com - Sayings and Teachings of Prophet Muhammad (صلى الله عليه و سلم)

(22) Chapter: A Father Should Not Be Killed For His Son

(22.00) باب لا يُقْتَلُ الْوَالِدُ بِوَلَدِهِ

It was narrated from Ibn 'Abbas that the Messenger of Allah (ﷺ) said:

"A father should not be killed for his son."

حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ مُسْلِمٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ طَاوُسٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ " لاَ يُقْتَلُ بِالْوَلَدِ الْوَالِدُ " .

Grade: **Da'if** (Darussalam)

Reference : Sunan Ibn Majah 2661
In-book reference : Book 21, Hadith 47
English translation : Vol. 3, Book 21, Hadith 2661

Report Error | Share | Copy ▼

शरीयत भी यही कहती है:

इस्लामिक पवित्र कानून का क्लासिक मैनुअल 'उमदत अल-सालिक' अहमद इब्न नकीब अल-मिसरी (मृत्यु 769/1368) द्वारा अरबी में अंग्रेजी पाठ, टिप्पणी के साथ, न्याय, 1.2 निम्नलिखित प्रतिशोध के अधीन नहीं हैं:

(1) एक बच्चा या पागल व्यक्ति,

(2) एक गैर-मुस्लिम की हत्या के लिए एक मुस्लिम;

(3) इस्लामी राज्य में इस्लाम का त्याग करने वाले की यहूदी या ईसाई द्वारा हत्या;

(4) एक पिता या माता (या उनकी माताओं के पिता) को अपनी संतानों, या संतानों की संतानों को मारने के लिए;

(5) न ही किसी वंशज को (अपने पूर्वज की) किसी की हत्या के लिए प्रतिशोध की अनुमति है, अपने पूर्वज की हत्या उसके वंशज को प्रतिशोध लेने का अधिकार देती, जैसे कि जब उसका पिता उसकी मां को मार देता है।

o1.2 The following are not subject to retaliation: (1) a child or insane person, under any circumstances (O: whether Muslim or non-Muslim.	o1.2 لكــنْ لا يَجِــبُ على صبــيٍّ ومجنــونٍ مطلقــاً (ســواء كانــا مسلمين أو

o2.0 Justice

The ruling for a person intermittently insane is that he is considered as a sane person when in his right mind, and as if someone continuously insane when in an interval of insanity. If someone against whom retaliation is obligatory subsequently becomes insane, the full penalty is nevertheless exacted. A homicide committed by someone who is drunk is (A: considered the same as that of a sane person,) like his pronouncing divorce (dis: n1.2)); (2) a Muslim for killing a non-Muslim; (3) a Jewish or Christian subject of the Islamic state for killing an apostate from Islam (O: because a subject of the state is under its protection, while killing an apostate from Islam is without consequences); (4) a father or mother (or their fathers or mothers) for killing their offspring, or offspring's offspring; (5) nor is retaliation permissible to a descendant for (A: his ancestor's) killing someone whose death would otherwise entitle the descendant to retaliate, such as when his father kills his mother.	كافــرين . والــذي جنونــه منقطع فهــو كالعــاقــل في وقت إفــاقتــه وكــالمطبق في وقت جنــونــه . ومن وجب عليه القصــاص وقد جن بعد الوجوب استوفي منه في حال جنــونه . وقتل الــسكران كطلاقه) ولا على مسـلم بقتل كافرٍ [ولا على حرٍّ بقتل عبدٍ] ولا على ذميٍّ بقتــل مرتــدٍ (لأن الــذمي معصــوم والمــرتــد مهــدر) ولا على الأبِ والأمِّ وآبــائهِمَا وأمهاتِهِمَا بقتلِ الولدِ وولدِ الــولــدِ ولا بقتــلِ مَنْ يَثْبُتُ القصــاصُ فيهِ للولدِ مثلُ أنْ يَقْتُلَ الأبُ الأمَّ .
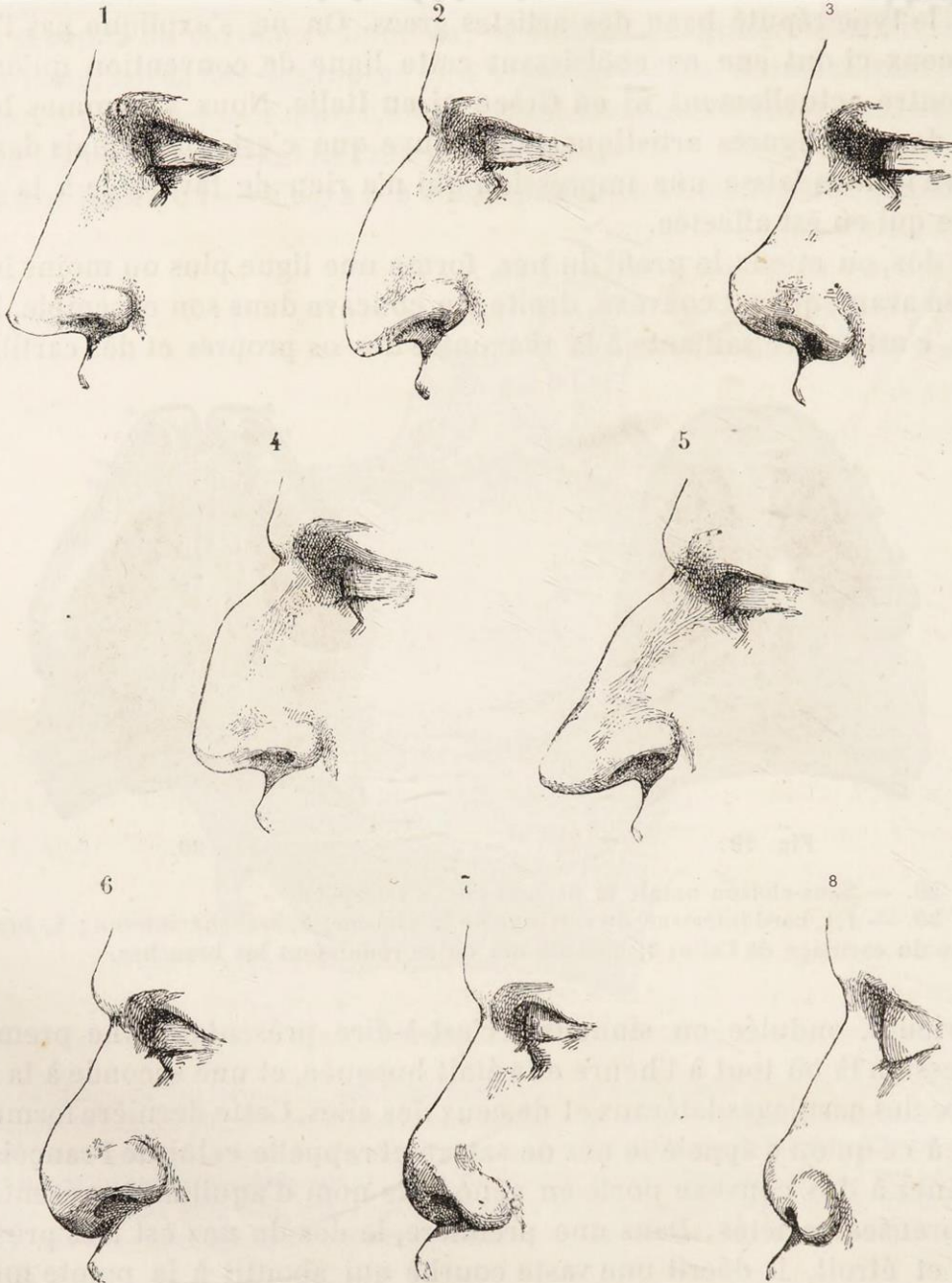
अंजीर। 31. नाक के प्रकार, प्रोफ़ाइल।

यूरोपीय प्रकार 1, सीधी नाक, नीचे की ओर देखने वाला आधार तल; 2, जलीय नाक, आधार तल पीछे की ओर देख रहा है; 3, अवतल, उलटी नाक, आधार तल आगे की ओर देख रहा है; 4, झुकी हुई नाक; 5, टेढ़ी नाक. 6, साधारण प्रकार, पीली दौड़ का अंत। 7, अफ़्रीका की नीग्रो जाति का साधारण प्रकार। 8, ऑस्ट्रेलॉइड प्रकार या मेलानेशिया की काली जातियाँ।

औपनिवेशिक प्रशासक हर्बर्ट होप रिसले के नेतृत्व में 1901 की भारत की पहली जातीय जनगणना से शुरू होकर, सभी जातियों को वर्गीकृत किया गया था। इससे पहले केवल वर्ण थे जो कार्य आधारित थे [20] इन अँगरेज़ महोदय ने नस्लीय विभाजन की पढाई की थी, जिसका आधार इनके अध्ययन में नाक की अकार से तय हुआ करता था.

इन जातियों का विभाजन पहले नहीं हुआ करता था, सर्वप्रथम अंग्रेजों ने ही यह विभाजन किया जिससे उनके भारत के समाज की प्रशासनिक कार्यवाही में सहायता हो, न की किसी धार्मिक या वैज्ञानिक आधार पर अपितु अपनी सरलता के लिए.

अतः जाति एक निश्चित सामाजिक समूह है जिसमें एक व्यक्ति का जन्म सामाजिक स्तरीकरण की एक विशेष प्रणाली: जाति व्यवस्था के भीतर होता है। ऐसी प्रणाली के भीतर, व्यक्तियों से अपेक्षा की जाती है: विशेष रूप से एक ही जाति (अंतर्विवाह) के भीतर विवाह करें, अक्सर एक विशेष व्यवसाय से जुड़ी जीवन शैली का पालन करें, एक पदानुक्रम के भीतर देखी जाने वाली अनुष्ठान स्थिति को बनाए रखें, और बहिष्कार की सांस्कृतिक धारणाओं के आधार पर दूसरों के साथ बातचीत करें। कुछ जातियों को दूसरों की तुलना में या तो अधिक शुद्ध या अधिक प्रदूषित माना जाता है

[20] *Nicholas B / Dirks (2001) / Castes of Mind: Colonialism and the Making of New India / ISBN 978-0-691-08895-2 /*

इन सबके प्रमाण पर्याप्त होंगे और आधुनिक राजनीति आप भली भाँती जानते होंगे, इस अपने से अलग रखने वाली व्यवस्था के समाज पर परिणाम आगे के खंड में होंगे'

प्रत्युत, नृप अधिसीम के काल के बाद जो सब शास्त्र और धर्मज्ञ पुरुषों की बुद्धियों का हरण हुआ और सत्य असत्य का निर्णय भी न कर सके और अनेक अन्याय और अधिकार हनन इस समाज के शीर्ष वर्ग ने इतिहास की वो भूलें की जिनसे धर्म का ही नाश हुआ, पर यह सब बताने की आवश्यकता ही क्यूँ हुई?

इसलिए जो वेद, मनु और वज्रसूचिका उपनिषद् के प्रमाण जो पिछले खंड में दिए उनका समाज में फलतः अब सम्मान नहीं। धर्म तो बस अब सामान स्वार्थ से बनने वाले गुटों और चाय के घूँट मारते बुद्धिजीवीयों की राजनीति सरीखी बची है।

धर्म सबके पास है, धार्मिक कौन है ?

इतितृतीयः पाठः

****

जाति और विवाह का वैज्ञानिक विश्लेषण
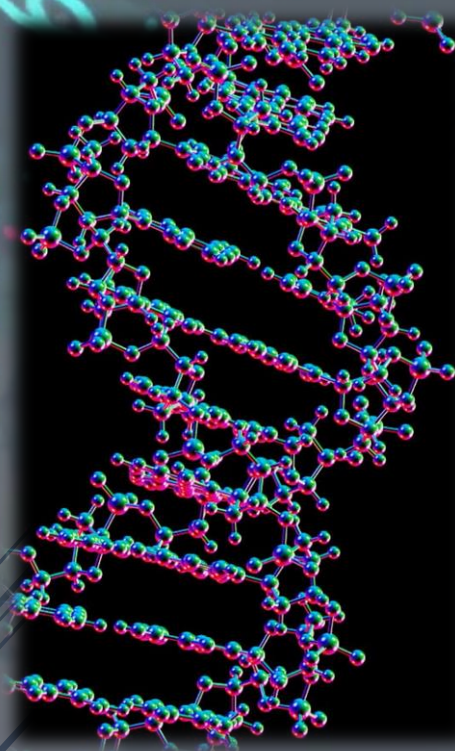
-अन्वेषक

जाति और विवाह का वैज्ञानिक विश्लेषण

गार्डियन आंगल पत्रिका

प्रकाशित: 2 जुलाई 2015

Print subscriptions | Sign in | Search jobs | Search | International edition

The Guardian

ion | Sport | Culture | Lifestyle | More

& sex Health & fitness Home & garden Women Men Family Travel Money

This article is more than 8 years old

Diverse parental genes lead to taller, smarter children, finds extensive study

The survey of 350,000 people across four continents did not, however, confirm a belief of a link between genetic variety and high cholesterol or blood pressure

Shadows of parents and child. Photograph: Stacy Gold/Getty

Most viewed

Student's sexual assault and murder shows women's safety in India 'not a priority'

World Cup officials apologise for chaos before England v Argentina in Marseille

Watered-down G20 statement on Ukraine is sign of India's growing influence

Live England beat New Zealand by 79 runs in second men's ODI – live reaction

Germany sack head coach Hansi Flick after Japan thrashing proved final straw

1.1 व्यापक अध्ययन से पता चला है कि विविध वंश के माता-पिता के जीन से बच्चे लंबे-चौड़े, होशियार होते हैं।

आनुवंशिक विविधता पर अब तक हुए सबसे बड़े अध्ययनों में से एक के अनुसार, जिन माता-पिता के बीच अधिक दूर का रिश्ता होता है उनके बच्चे अपने साथियों की तुलना में अधिक लम्बे-चौड़े और होशियार होते हैं।

अध्ययन से पता चलता है कि ऊंचाई और बुद्धिमत्ता बढ़ रही है क्योंकि बढ़ती संख्या में लोग दुनिया के दूर-दराज के हिस्सों के लोगों से शादी कर रहे हैं।

इसमें चार महाद्वीपों के लगभग 100 समुदायों के 350,000 से अधिक व्यक्तियों की आनुवंशिक पृष्ठभूमि और स्वास्थ्य को देखा गया।

शोधकर्ताओं ने पाया कि किसी व्यक्ति के माता-पिता जितने अधिक दूर के रिश्तेदार होते हैं, वे उतने ही लंबे-चौड़े होते हैं, संज्ञानात्मक परीक्षणों में उनके अंक उतने ही अधिक होते हैं और शैक्षिक प्राप्ति का स्तर भी उतना ही बेहतर होता है।

मेडिकल रिसर्च काउंसिल में आणविक और सेलुलर चिकित्सा के प्रमुख, नाथन रिचर्डसन, जिन्होंने अध्ययन को वित्त पोषित किया, ने कहा: "ज्यादातर लोग मानते होंगे कि एक विविध जीन-पूल एक अच्छी बात है, लेकिन यह खोज कि शारीरिक ऊंचाई वंशाणु की विविधता से जुड़ी है, ऐसा होगा पूर्वानुमानित नहीं किया गया था।"

एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के डॉ. पीटर जोशी और पेपर के सह-लेखक ने कहा: “हमारा शोध आनुवंशिक विविधता के लाभों के बारे में डार्विन द्वारा सबसे पहले उठाए गए सवालों का जवाब देता है। हमारा अगला कदम जीनोम के उन विशिष्ट हिस्सों पर शोध करना होगा जो विविधता से सबसे अधिक लाभान्वित होते हैं।

नेचर जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में उन उदाहरणों को देखने के लिए आनुवंशिक डेटा का उपयोग किया गया जब लोगों को अपनी मां और पिता दोनों से जीन की समान प्रतियां विरासत में मिलीं - यह एक संकेतक है कि उनके पूर्वज संबंधित थे। फिर उन्होंने इस संबंधितता माप की तुलना 16 बायोमेडिकल लक्षणों से की।

केवल चार लक्षण - ऊंचाई, फेफड़ों की क्षमता, सामान्य संज्ञानात्मक क्षमता (general cognitive ability) और शैक्षिक उपलब्धि - आनुवंशिक विविधता के साथ सहसंबद्ध थे।

एडिनबर्ग विश्वविद्यालय में जनसंख्या और रोग आनुवंशिकी के रीडर और अध्ययन के लेखक जिम विल्सन ने कहा कि निष्कर्ष बताते हैं कि मानव विकास के दौरान "आउटब्रीडिंग" (विविध दूरस्थ देश में विवाह) के फायदे होंगे।

उन्होंने कहा, "एक अधिक चतुर प्रागैतिहासिक मनुष्य के पास जीवित रहने का लाभ होता, और हम निश्चित रूप से उन परिस्थितियों की कल्पना कर सकते हैं जहां आप जितने लंबे होंगे, आपके जीवित रहने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।"

1.2 अनुवांशिक रोगों से छुटकारा

विज्ञान के अनुसार पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों के गुणधर्म, बनावट और व्यवहार एक दूसरे में वन्शाणु के जरिए आते जाते हैं। कई बार यह देखा जाता है कि गुणधर्मों के साथ ही पीढ़ियों में कई प्रकार की बीमारियां भी एक दूसरे में आ जाती हैं।

चिकित्सा विज्ञान के अनुसार अनुवांशिक रोगों के कारण लोगों की आयु भी घट जाती है। अंतरजातीय विवाह जिसमें दोनों ही पक्ष विभिन्न होते हैं, इसीलिए उनमें अनुवांशिक रोगों के प्रचलन होने का कोई संभावना नहीं रहता है।

ये परिणाम किसी तरह 'फ्लिन प्रभाव' को समझाने में भी मदद कर सकते हैं - एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बुद्धि में वृद्धि, जिसे 20वीं शताब्दी में पहली बार प्रलेखित किया गया था।

जबकि बढ़ी हुई स्कूली शिक्षा और बेहतर पोषण जैसे सामाजिक-आर्थिक कारकों को आम तौर पर प्राथमिक चालकों के रूप में देखा जाता है, बढ़ी हुई आनुवंशिक विविधता भी एक छोटी भूमिका निभा सकती है। उन्होंने कहा, "बुद्धिमत्ता में वृद्धि (फ्लिन प्रभाव से) इतनी बड़ी है कि अकेले हमारे परिणामों से इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती, लेकिन उनका इसमें योगदान हो सकता है।"

(यह अध्ययन नेचर में प्रकाशित हुआ है।)

....

अब संबंधो की निकटता का अच्छा मानना (सजातीय), कुटुंब- जाति का क्रंदन करने की इस व्यवस्था को भी ध्वस्त किये देता हु

द कंसर्वेशन - अकादमिक रिगौर, जर्नलिस्टिक फ्लेयर

प्रकाशित : जुलाई 4, 2013

THE CONVERSATION

Academic rigour, journalistic flair

चचेरे भाई-बहन की शादी से बच्चों में जन्म दोष का खतरा दोगुना हो जाता है

अपनी तरह के सबसे बड़े अध्ययन के अनुसार, पहले चचेरे भाई के साथ बच्चा पैदा करने से **हृदय और फेफड़ों की खराबी, कटे तालु और अतिरिक्त अंगुलियों जैसी जन्मजात समस्याओं का खतरा दोगुना हो जाता है। जन्म दोष और बच्चे के जल्दी मरने की संभावना बहुत बढ़ जाती है।**

अध्ययन में वेस्ट यॉर्कशायर के ब्रैडफोर्ड में विभिन्न जातीय समूहों में पैदा हुए 11,300 शिशुओं को शामिल किया गया, जहां शहर के बड़े पाकिस्तानी समुदाय में रक्त विवाह का स्तर अधिक है।

यह अध्ययन व्यापक बॉर्न इन ब्रैडफोर्ड अध्ययन का हिस्सा है, जो अपनी तरह का सबसे बड़ा यू.के. अध्ययन है, जिसमें 2007 और 2011 के बीच शहर में पैदा हुए 13,000 से अधिक बच्चों के समूह का चार्ट बनाया गया है।

ब्रैडफोर्ड में चचेरे भाई-बहनों की शादी की दर सबसे अधिक है और कुछ आंकड़े बताते हैं कि 75% पाकिस्तानी शादियां रक्त संबंधों से होती हैं। अन्य हॉटस्पॉट में बर्मिंघम शामिल है।

पाकिस्तानी मूल के बच्चे भी इंग्लैंड और वेल्स में शिशु मृत्यु की उच्चतम दर के लिए जिम्मेदार हैं और 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में जन्मजात समस्याएं सबसे आम कारण हैं।

जबकि अध्ययन में 37% चचेरे भाई विवाह पाकिस्तानी मूल के जोड़ों के बीच थे, केवल 1% सफेद ब्रिटिश जोड़ों से बने थे।

प्रश्न: यह चचेरे भाई बहनों की बात है हमसे क्या बकवाद करते हो, हम गोत्र जांच कर करते है तदनुसार ही हमारे कुल का संबंध निश्चय होता है

उत्तर: **“तीव्रसंवेगानमासन्न:”**

यह पातंजल योगसूत्र है

भावार्थ: तीव्र पुरुषार्थ वालो को समाधी की प्राप्ति और समाधी का फल (मोक्ष) शीघ्र प्राप्त होता है

सूत्र से इंगित को समझ गए होंगे
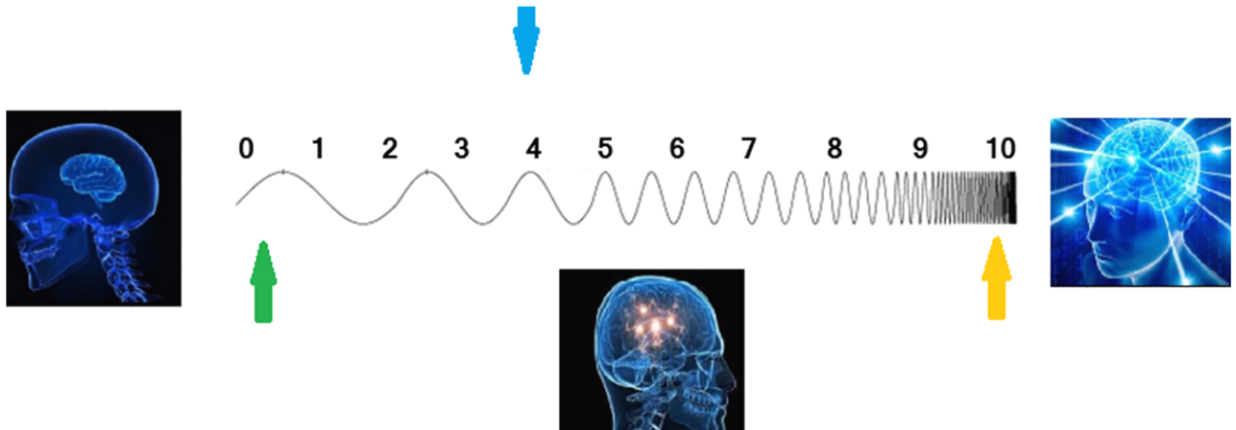
उनका अगर हरे तीर का काम है तो आपका भी विवाह में जाति कठोरता से चौथे पांचवे अंक का कार्य है बनाम दसवें अंक के लोगों से जो कार्य-कारण स्वभाव से प्रथम विज्ञान को समझकर अपनी पीढ़ियों की रोगशमन क्षमता को हर पीढी के साथ उत्तरोत्तर बढाने वाले इस बहिर्विवाह को करते है, और आपनी पीढ़ियों में बिना एक कौड़ी के केवल बहिर्विवाह से वन्शनुओ के दोषों को नष्ट कर देते हैं, जो सजातीय विवाह से कहीं उत्तम है.

अपने रोगों पर करोड़ों लाखों लुटाने वाले अगर अड़ियल स्वभाव न होते तो उनकी कई संताने शक्तिशाली जीन (**gene**) से अपने रोग और जेब दोनों को बचा लेती.

पर यह बताया भी किस पीढी को जा रहा है, जिस्से न अपने नशे छोड़े जाते न अपने मरण पर्यंत ईश्वर की साधना करने वाले ऋषियों के परिश्रम किये शास्त्रों में रूचि है.

Thanassis Kondos
Maria
Yiannis Eleni Mitsos Kostas Yiorgos Katina Chrissoula Stamato
Thanassis Matina Kostas Marigo Thanassis Marigoula Kostas Yiannis Mitsos Maria
Diamanto Yiannis Eleni Eleni Thanassis Pagona Yiorgos Dina Toula
Matina Yiannis
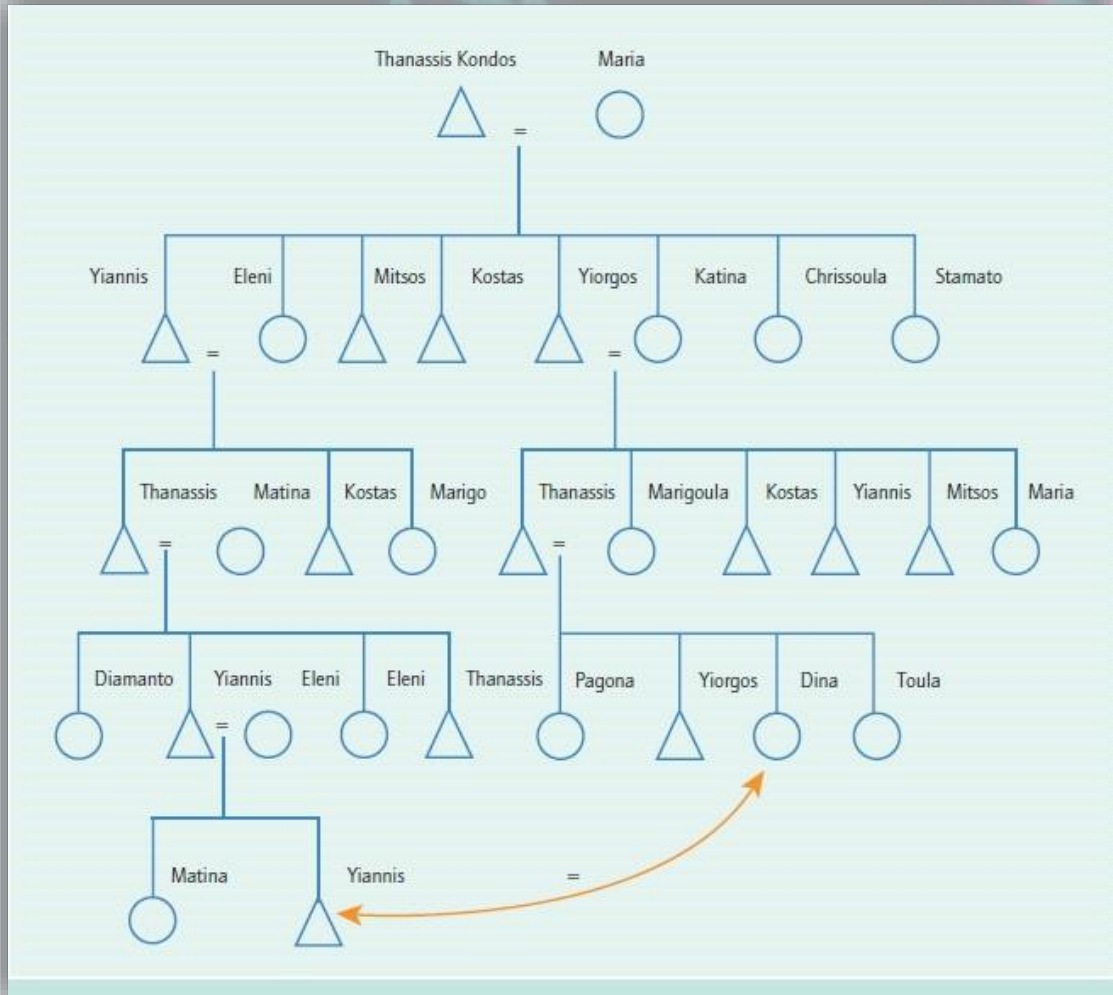
'कर्म बनाम जात' का इस चित्र में योग देखिये

प्रश्न: हमने तो सुना है शास्त्र में माता के माता पिता (नानी-नाना) और पिता के माता पिता (दादा-दादी) की पीडी को छोड़ ही देते हैं. हमारे क्या दोष लगते है अगर कर भी दे अपने मत के लोगो में विवाह?

उत्तर: यह युक्ति नियुनतम(bare-minimum) के सिद्धांत को उद्धृत करता है, की "यह बात तो न्यूनतम होनी ही चाहिए, इससे नीचा तो स्वीकार ही नही." पर कुछ विचार आपको भी बुद्धिपूर्वक करना चाहिए की अगर खुद गोत्र में करना ठीक नहीं मानते तो एक स्थायी समूह में जिनका नाम उपनाम एक हो जाता है और जिनके बीज की

भी समानता कुछ अधिक मानते हैं. तो पिछले वाले को पाप समझकर इसे उत्तम जानकार उस समूह से बाह्य किसी योग्य और आचार कुशल धर्मविज्ञ युवक-युवती से करने में क्यों दोष देखते हैं?

क्या विविधता उससे कम होगी? उससे तो जैविक कोशिकाओं की वंशाणु संहिताओं का चुनाव(gene pool) बढ़कर उनके बीज की (पीडियों की) नए-नए रोगों से लड़ने की रोगशमन शक्ति हर हर नई पीढी के विवध अंशाणुओं को लेकर यह शक्ति उत्तरोत्तर हर पीढी में बढती रहती है, सुख सरल परखे स्वभाव से विवाह करने से गृह क्लेश का न होना, दोनों दम्पत्तियों की एक बुद्धि होकर उत्तम दैनिक साधन करना एक दुसरे के अनुकूल रहना और सुखपूर्वक अपने उत्तरदायित्वों का वहन करना.

और जो इसे गलत मानते हैं तो अपने गोत्र में करने पर भी दोष को क्यों मानते हो? अगर किसी अपने समूह में ही विवाह करने से लाभ हों, तो अपने ही गोत्र में कर लेना अच्छा, अपने ही परिवार से वृद्धि की विधि क्यों न की जाए?

शास्त्रों के वचन से और इतिहासार्थ प्रमाण देकर जाति कास्ट और वर्ण की परिभाषा पहले भी उद्धृत की जा चुकी है- जब उपनाम का हेतु उद्योग के आधार पर रख लिया गया जैसे लकड़ी वाला बढई, लोहे वाला लोहार परन्तु अब जब वो काम करते ही नहीं, तो भी यदि कोई चतुर्वेदकंठस्थ दैनिक वेद का पाठ करने वाले ब्रह्मण के पुत्र का आचरण- यदि वह भंग, हशीश, तीपासुन के नशे करता और व्यभिचारी सब प्रकार के अपराध से निर्भय को तो सामान्य मनुष्य भी उसके पिता का ज्ञान हो तो भी दानव योनी कहेगा तो ईश्वर तो इनसब की बुद्धियों पर सर्वज्ञ है

ततः अपि

इनमे, मलेच्छो-मुहामद्दियों और आपमें अंतर केवल यही है- की ये आपसे अधिक अपनी- अपनी रूढ़ियों में जकडे हैं और आप इनसे कुछ कम मानते हैं, विज्ञान से शुन्य दोनों ही हैं, यद्यपि विधान ग्रन्थ का कुछ उचित भाग के मानने वाले आप हैं - सो वह भी वो व्यवस्था जो शास्त्र से न्यून पंडितो द्वारा प्रतिपादित है

कैसा व्यंग्य है, एक पंडित होकर शास्त्र नहीं पढ़ते दुसरे पंडितो की अज्ञानी बातो को अनुसरण करने को तत्पर है पर उनसे सम्बन्ध करने को नहीं.... सत्य का प्रहार छुरे जैसा है, पर जो झेल जाता है वह और शक्ति को लेकर आता है, पर असत्य- गाँठ

की तरह धीरे धीरे पीप-रक्त छोड़ता हुआ- जीवन को अत्यंत दुःख कष्ट करके मृत्यु तक पहुंचा देता हैं

रोग प्रजनन क्रिया का स्वाभाविक अंग है, सो अनुवृत्ति न्याय से यह निर्लज्ज मल्लेछ तो रोग की शीघ्रधारा में बह रहे है, आप इनसे किन्ही शनैः शनैः उसी बहती धरा में अधिगच्छत हैं

प्रश्न: हमारे खून और बीज में इससे मिलावट होगी. कैसे नीच या उंच जाति के से विवाह करदे. ऐसा थोड़ी होता है.

उत्तर: वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, अंतरजातीय विवाह के कारण विशेष रूप से उत्पन्न होने वाले कोई अंतर्निहित भेद नहीं हैं। सभी मनुष्य अपने डी.एन.ए का 99.9% हिस्सा साझा करते हैं, एवं 'जाति' की अवधारणा वैज्ञानिक के बजाय एक सामाजिक निर्माण है। यहाँ तक की शास्त्र की भी इसपर घृणित दृष्टि है हालाँकि, यह ध्यान देने योग्य है
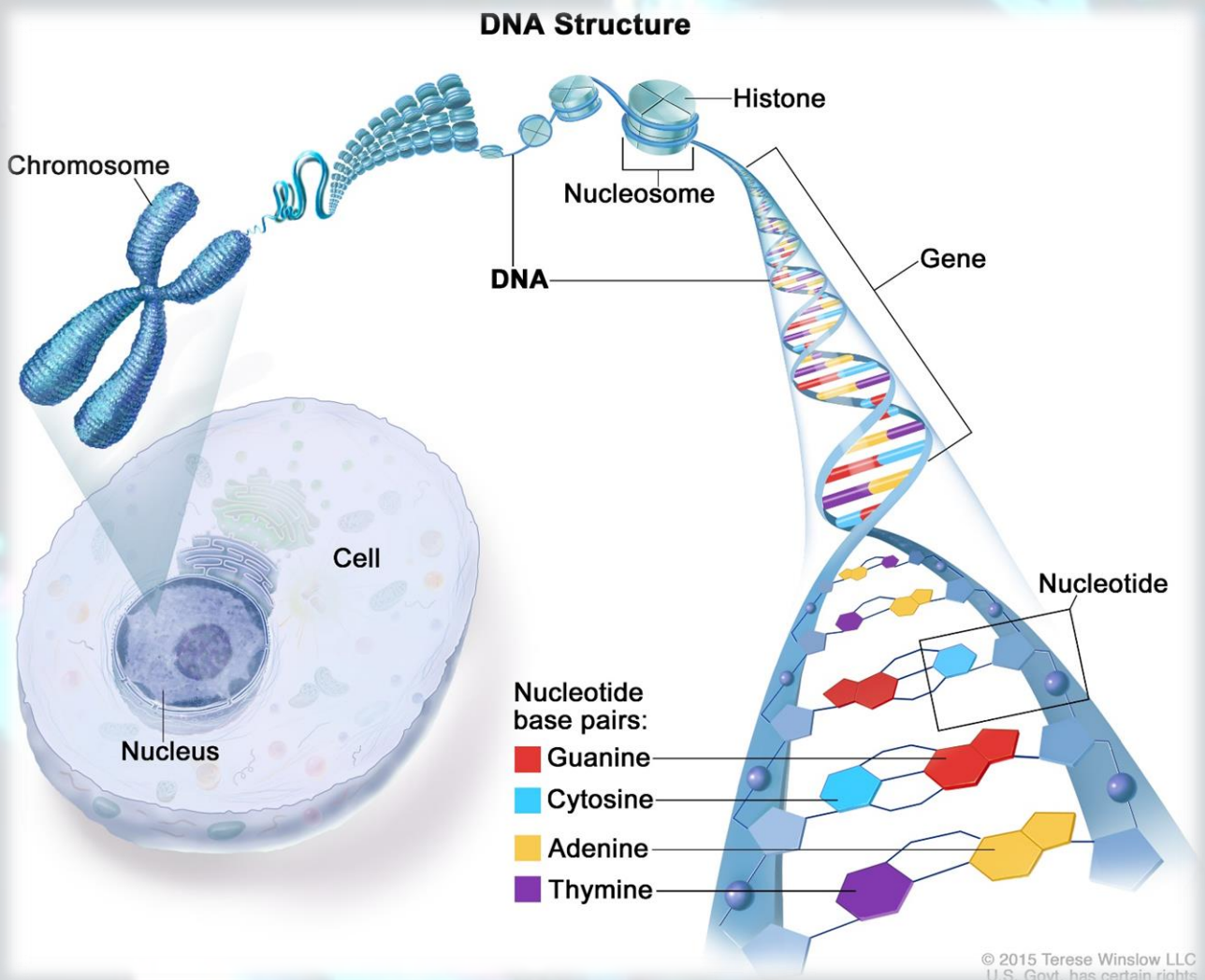
कि कुछ आनुवंशिक लक्षण और स्थितियाँ कुछ आबादी में दूसरों की तुलना में अधिक प्रचलित हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, सिकल सेल एनीमिया अफ्रीकी मूल के लोगों में अधिक आम है। जब अलग-अलग जातीय पृष्ठभूमि के दो लोगों के बच्चे होते हैं, तो उनकी संतानों को जीन(gene) का अधिक विविध सेट(समुच्चय) विरासत में मिल सकता है। यह आनुवंशिक विविधता कभी-कभी कुछ बीमारियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा सकती है।

जो ऊपर पिछले पन्ने पर चित्र में सेल(cell) लिखा है यह बीजरूप है. शुक्राणु और अंडा इसके संभाग के है.

निचे शुक्राणु और खून की कोशिका का माप देखिये
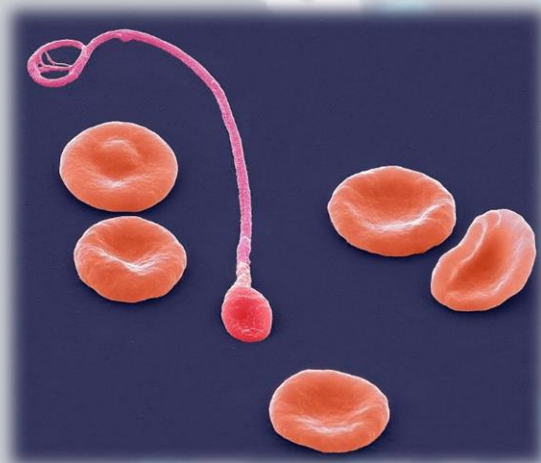
हर **कोशिका(cell)** के अन्दर **केंद्रिका(nucleus)** होता है उसके अन्दर **क्रोमोसोम(गुणसूत्र)** सभी कोशिकाओं में मौजूद **आनुवंशिक सामग्री(Genetic material)** हैं। वे यूकेरियोटिक कोशिका के केंद्र में मौजूद होते हैं। यूकेरियोटिक कोशिका के प्रत्येक **गुणसूत्र(chromosome)** में डी.एन.ए और संबंधित प्रोटीन होते हैं, जिन्हें **हिस्टोन प्रोटीन(चित्र में देखिये)** के रूप में जाना जाता है। वे वंशानुगत गुणों के लिए जिम्मेदार हैं और माता-पिता से संतानों में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होते हैं।

बीच औसत अंतर से अधिक हो सकती हैं। पर वह भी तब है जब उनमे कई पीढीयाँ संयोग से हमेशा हर पीढी में अलग-अलग अनुवांशिक लक्षण धारण करे. यह केवल संयोग की बात है. जबकि अंतरजातीय विवाह के परिणामस्वरूप आनुवंशिक लक्षणों का एक बड़ा मिश्रण हो सकता है, यह मूल रूप से शामिल व्यक्तियों या उनकी संतानों के जीव विज्ञान को नहीं बदलता है।
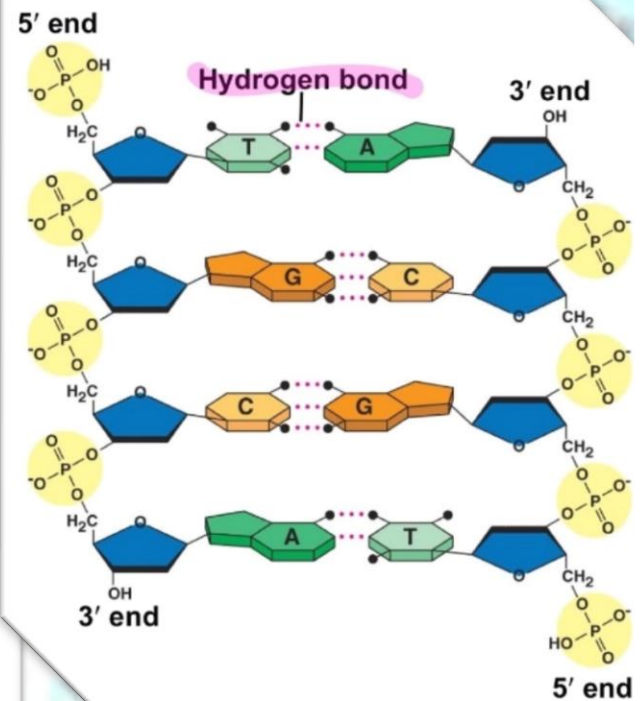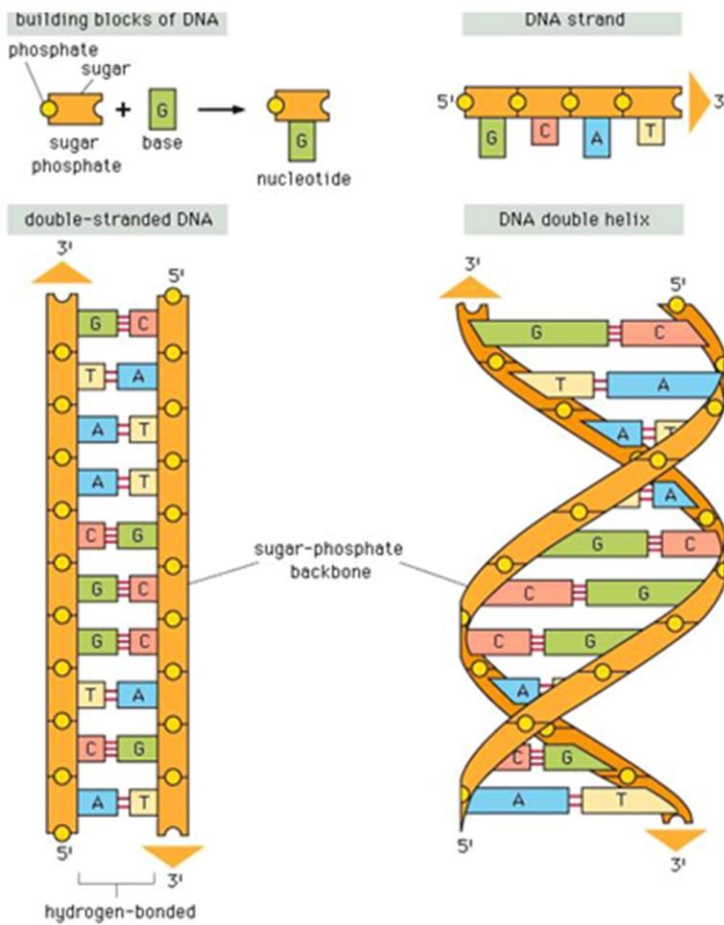
यह क्रम से, जो सीढ़ी के रूप में है, ये जीव के जैविक सूत्र हैं जिन्हें जीन(gene) भी कहते हैं.

इनमे जो **G है वह गूआनीन, जो C है वह साएटोसीन, जो A है वह एडीनाइन, जो T है वह थाईमीन है**. जो वंशानुगत बदलाव हर पीढी में होता है वह दरअसल कुछ नहीं केवल इन **गूआनीन, साएटोसीन, एडीनाइन, थाईमीन** सूत्रों के जमाव में अंतर को कहा जाता है, सो यह भी **रसायनिक(chemical)** प्रक्रिया के रूप में प्राकृतिक ही होता है. और परिवर्तन भी कितना? सभी मनुष्यों के केवल उस मूल का 0.1 प्रतिशत परिवर्तित होता है. कोई कहे हमारा बीज बिगड़ता है तो यह जान ले माता- पिता के गुणसूत्रों के मेल से नया शरीर जो बनता है उसके भी केवल 0.1 प्रतिशत में भेद होता है अन्य 99.9% वही सब मनुष्यों की जो मूल संहिता है वही रहती है.

सन्दर्भ :Why Is Everyone's DNA Different? Let's Know! (onlyzoology.com)

फिर कोई प्रश्न करे की बच्चे तो अक्सर माता पिता से ही मेल खाते हैं तो हम बीज का पीढी में बढ़ना क्यूँ न माने?

बीज की अवधारणा गलत है, पूर्व में भी कह आये हैं की केवल रासायनिक जमाव बदलने का कार्य विविधता को जन्म देता हैं. माता पिता से संतान के गुण कर्म इसलिए मिलते हैं क्यंकि संतान में उनके गुण, कर्म, शरीर और अंग की संहिता के योगदान का औसत भाग बाकी सभी मनुष्यों से अधिक होता है इसलिए एसा है, पर कोई ईएसआई बात नै है की संतानोत्पत्ति में कोई किसी की निशानी लेकर चल रहा है.

Guanine

Cytosine

Thymine

Adenine

न्युक्लियोटाइड/Nucleotides
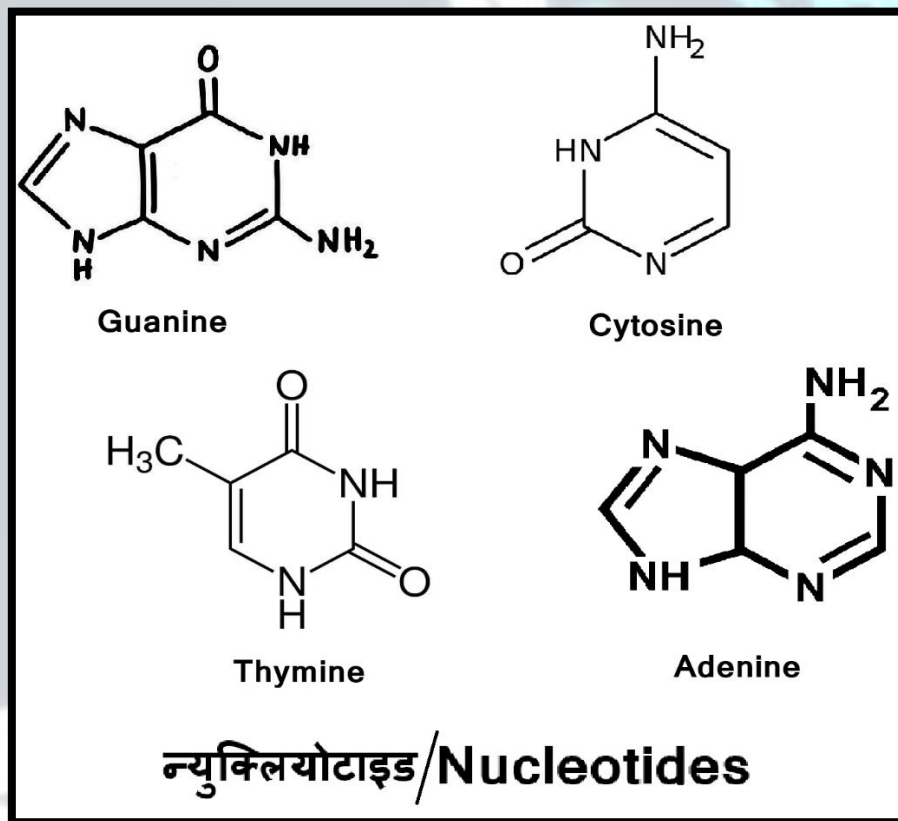
विषय पर आते हैं- संसार में यह द्रव्य इतना छोटा है की किसी प्रकार का गंद या मिलावट इसकी नहीं हो सकती. इसमें यह CO_2(carbon dioxide), H_2O(पानी) यह सब अणु है और इनमे विभक्त H(hydrogen), N(nitrogen), C(carbon) परमाणु हैं, चित्र से समझिये:
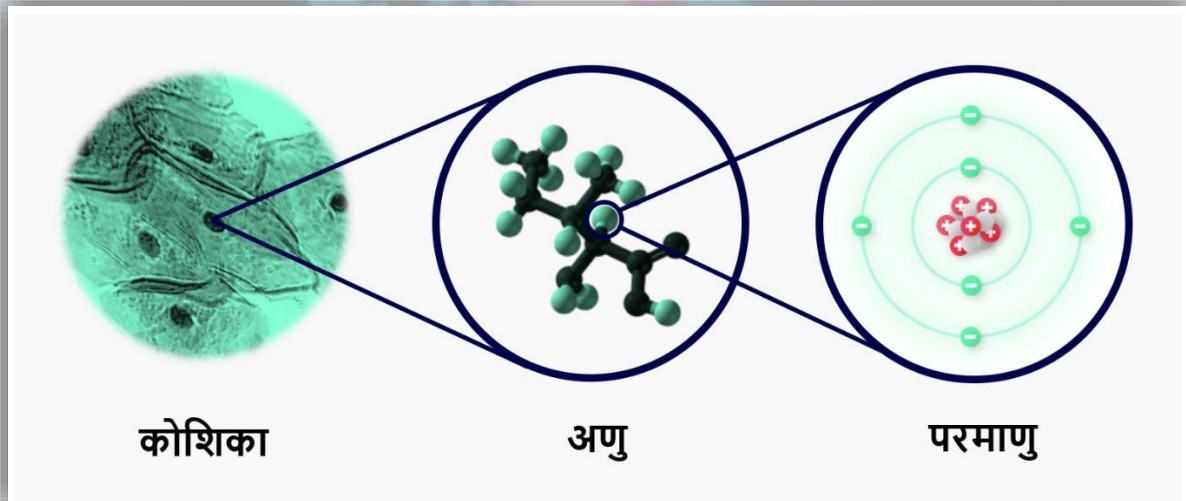
परमाणु अत्यंत छोटे होते हैं, आमतौर पर लगभग 100 पिकोमीटर व्यास के होते हैं

दूसरी ओर, अधिकांश पौधे और पशु कोशिकाएं माइक्रोस्कोप के नीचे केवल 1 और 100 माइक्रोमीटर के बीच के आयामों के साथ दिखाई देती हैं

इसलिए, यदि हम एक परमाणु के आकार की तुलना एक कोशिका से करें, तो एक कोशिका एक परमाणु से लगभग 10,000 से 1,000,000 गुना बड़ी होती है। यह एक महत्वपूर्ण आकार अंतर है! यह एक फुटबॉल के आकार की तुलना एक शहर के आकार से करने जैसा है। यह पैमाने का अंतर है जो कोशिकाओं को अरबों या खरबों परमाणुओं से बना होने की अनुमति देता है, जिनमें से प्रत्येक कोशिका की संरचना और कार्य में योगदान देता है।

Cell size - Cell structure - AQA - GCSE Biology (Single Science) Revision - AQA - BBC Bitesize

(क्रम की सूक्ष्मता को इस प्रकार समझिये)

'>' को **'से सूक्ष्म'** पढ़िए

समाज > मन > शरीर > रसायन > भौतिक > गणित

Society > Psychology > Biology > Chemistry > Physics > Mathematics

समाज के प्रत्येक वर्ग का सबसे सूक्ष्म खंड है मानव, सामाजिक क्रिया का मूल है मनोवृत्ति, जैसे सजातीय विवाह, इसका अध्ययन मनोविज्ञान है, मन और बुद्धि का जड़ रूप मस्तिष्क और शरीर है, जिसका विषय जीवविज्ञान है. जीव(आत्मा) के शरीर का सबसे छोटा खंड कोशिका है जिसमे सारी क्रिया का कारण रासायनिक है. DNA के अन्दर शरीर के भिन्न कार्य और व्यवस्था की सम्हिता होती है जिससे शरीर के भिन्न विभिन्न ढांचे, हड्डियाँ, मांसपेशियां, हार्मोन, हाथ, पैर, पूँछ, नाख़ून का क्या कार्य होगा और क्या व्यवस्था होगी इसका निश्चय यही D.N.A. करता है. इस DNA का मूल नियुक्लियोटाइड है जिसका चित्र ऊपर दिया हुआ है. यह अणुओं का गठर बनके DNA का कार्य करता है. पर मूल इसका अणु है जो रासायनिक शास्त्र का विषय है, अस्तु रसायन या अणु तो पदार्थ की अंतिम स्थिति है. दरअसल, अणु में प्रोटोन, न्युटरोन और इलेक्ट्रान अवश्य है पर इनका और अणु का मूल बताना अत्यधिक जटिल है जो आधुनिक युग में भी बताना कठिन है जिसका ठोस ज्ञान नहीं है, केवल कल्पनाएँ थियोरी ही है उनका बताना व्यर्थ है, तो इतना कहकर आगे बढ़ते हैं की पदार्थ के सबसे सूक्ष्म कण अणु की भिन्न, भिन्न्तर और भिन्नतम क्रियायें भौतिकी के नियमों का विषय है. और भौतिकी कोई पढ़े तो जाने गणित का महत्व. सारा विज्ञानं गणित पर आकर ख़तम हो जाता है

गैलीलियो गैलीली इटली का एक प्रसिद्ध खगोलशास्त्री, भौतिक विज्ञानी और इंजीनियर कहता है, "गणित वह वर्णमाला है जिसके साथ भगवान ने ब्रह्मांड को लिखा है."

कार्ल फ्रेडरिक गॉस एक जर्मन गणितज्ञ, भूगणितज्ञ और भौतिक विज्ञानी कहता है- “भौतिकी विज्ञान का राजा और गणित रानी.”

विज्ञानं ही नहीं गणित का खेल वित्त में भी है, कला में भी सटीकमापी होना आवश्यक है,

यहाँ तक की ‘जीवन का गणित बिगड़ना’ एक मुहावरा भी है 😂 जिसका अर्थ होता है कि जीवन में सब कुछ उलट-पुलट हो जाना, यानी कि जीवन की समस्याओं को समझने में असमर्थ होना। 😂

विषय पर वापस आते है, बीज का माप कोशिका तक का है जो जीवविज्ञान में आ जाता है. पर बदलाव सिर्फ गुणसूत्रों के DNA में रखे रसायन के भी सिर्फ क्रम में होआ

है. और इससे वंश में केवल गुण बदलते हैं, हालांकि यह सही है की माता पिता के गुण ही शिशु में आते हैं, पर वीर्यशुल्क से वह वंश उन्नत भी हो सकता है, और वीर्य किसी जाति का गुलाम नहीं. जो आत्मा के संयम में रहकर जीवन को ईश्वर प्रभु भक्ति और वेद स्वाध्याय कर ईश्वर के कहे रास्ते पर चलते हैं वे उनका शरीर और मस्तिष्क ही सही माप में पवित्र है अन्य तो सब खोखले मत है

यह उस बीज से भी बहुत गुना छोटा है जिसे आप बचाना चाहते हैं, प्रत्युत पूर्व से सत्यापित किया है परिवर्तन केवल गुणसूत्रों में होता है,

प्रश्न: हमने भी तो वही कहा की हमारे बीज में ये सूत्र अंतरजातीय विवाह से बदल जाते हैं! इसका उत्तर दो?

उत्तर: जो वस्तु जड़ है, रसायन मात्र है, जिसके प्राकृतिक जैविक प्रजनन प्रक्रिया से शरीर या स्वास्थ्य पर किसी प्रकार का असर नहीं होता, केवल उन रसायन का क्रम बदल जात है, कम क्रिया अगर अधिक माप पर हो तो शरीर में अंतिम क्रिया भी अत्यधिक जाती है.

और अगर सोचते हों की हर पीढी के साथ यह DNA सजातीय विवाह करने से एक ही रहता है तो यह भी पूर्ण सत्य नहीं- किसी व्यक्ति के जीवनकाल के दौरान डीएनए बदलता है। यह एक प्रक्रिया के कारण होता है जिसे **एपिजेनेटिक चेंजिस(epigenetic changes)** के रूप में जाना जाता है, जो रासायनिक विविधताएं हैं जो आनुवंशिक जानकारी को प्रभावित किए बिना जीन को विनियमित करने में मदद करती हैं। इन परिवर्तनों में अक्सर डीएनए संरचना में रासायनिक यौगिकों का शामिल होना होता है जो जीन को चालू और बंद करने के लिए ट्रिगर के रूप में काम करते हैं।

इसके अलावा, **जीवनशैली विकल्प** और विभिन्न पर्यावरणीय कारक भी आपके DNA को बदल सकते हैं। उदाहरण के लिए, विशेष रूप से विकिरण, गामा और एक्स-रे, डीएनए को बाधित करने, ख़राब करने और कभी-कभी उत्परिवर्तन करने का बहुत भयंकर काम करते हैं।

विज्ञानिक प्रक्रिया में कोशिकाओं के केंद्रक में 46 गुणसूत्र होते हैं, जिनमें 3 अरब **न्यूक्लियोटाइड** होते हैं। जब एक्स(कन्या करने वाला) गुणसूत्र को शामिल किया जाता है, तो **अगुणित(haploid) जीनोम** के 3,054,815,472 आधार जोड़े होते हैं, और जब Y(लड़का करने वाला) गुणसूत्र को X गुणसूत्र के साथ प्रतिस्थापित किया जाता है, तो 2,963,015,935 आधार जोड़े होते हैं।
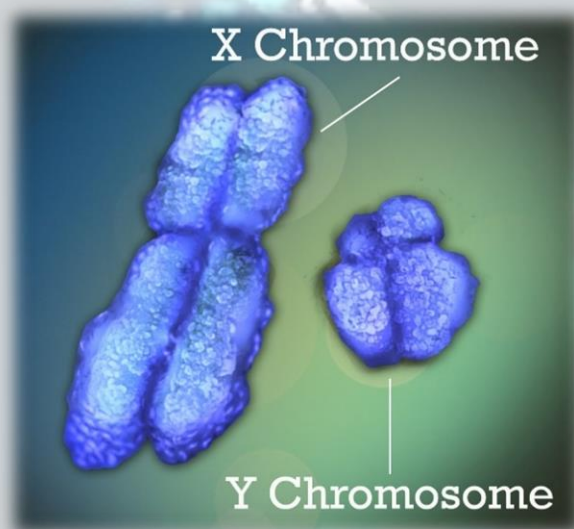
और इसके अन्दर अतिसूक्ष्म डीएनए जो शरीर के लिए विशिष्ट **संहिता(gene-code)** करता है जो सबमें एक ही है, एक केवल गुणसूत्र बदलता है जो रसायन के माप का खंड है. और यदि गुणसूत्र बदल भी जाए तो अमिनो-प्रोटीन सबकी कोशिका में एक ही बनता है,

सिद्धांत को इस प्रकार समझे की छोटी गतिविधियाँ भी जब बहुत-अत्यधिक माप पर होती है तो अंत की क्रिया का माप भी बहुत अधिक होता है,

उदाहरण 1 दीमक कीट छोटा होता है पर संख्या बल पर बड़े से बड़े वृक्ष की जड़े खोखली कर देता है.

उदाहरण 2 यह तो प्रत्यक्ष दृष्टान्त है की वैज्ञानिकों ने एक चींटीयों की पहाड़ी में 10 टन सीमेंट डाला। हफ्तों की खुदाई के बाद, कॉलोनी की जटिल और प्रभावशाली

संरचना का पता चला।

चीटियाँ द्वारा निकली गयी 10 टन मिटटी

शरीरों की भिन्नत बनावट को देखकर लगता है की पुरुष के जनन में बहुत बदलाव आ जाता है और बीज का परिवर्तन हो जाता है, यह सब भ्रम की बात है. सिद्धांत ऊपर देखिये, उसी सिद्धांत से ईश्वर ने यह अद्भुत सृष्टि की है की पुरे संस्कार में एक मनुष्य किसी दुसरे के जैसा नहीं है.

बीज की बात करने वाले आप न हो, पर समाज में यह सुनने मिल जात है. स्त्री खेती नहीं है, पर यह प्रचलित विचार किधर का है तो बता देता हूँ-

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَأْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ

(البقرة: ٢٢٣)

(कुरान सूरा-अल-बकराह आयत 223)

نِسَآؤُكُمْ (औरतें तुम्हारी), حَرْثٌ (खेती हैं), لَّكُمْ (तुम्हारे लिए), فَأْتُوا۟ (तो आओ), حَرْثَكُمْ (अपनी खेती में), أَنَّىٰ (जिस तरह), شِئْتُمْ (चाहो तुम), وَقَدِّمُوا۟ (और आगे भेजो), لِأَنفُسِكُمْ (अपने नफ़्सों के लिए), وَٱتَّقُوا۟ (और डरो), ٱللَّهَ (अल्लाह से), وَٱعْلَمُوٓا۟ (और जान लो), أَنَّكُم (बेशक तुम), مُّلَٰقُوهُ

(मुलाक़ात करने वाले हो उससे), وَبَشِّرِ (और ख़ुशख़बरी दे दीजिए), الْمُؤْمِنِينَ (ईमान लाने वालों को)

Muhammad Faruq Khan Sultanpuri & Muhammad Ahmed:

"तुम्हारी स्त्रियों तुम्हारी खेती है। अतः जिस प्रकार चाहो तुम अपनी खेती में आओ और अपने लिए आगे भेजो; और अल्लाह से डरते रहो; भली-भाँति जान ले कि तुम्हें उससे मिलना है; और ईमान लानेवालों को शुभ-सूचना दे दो"

यह सब इनकी संस्कृति है हमारे लोग क्यूँ भ्रमित हैं?

अगर शरीरों में बीज ख़राब होता तो कर्ण का शक्ति बाण घटोत्कच को नहीं अर्जुन को ही उस दिन लगता, क्यों की घटोत्कच की माँ राक्षस जाति की थी और वह अर्जुन का भांजा था

यह पुरुषों में **यह स्त्रियों में**
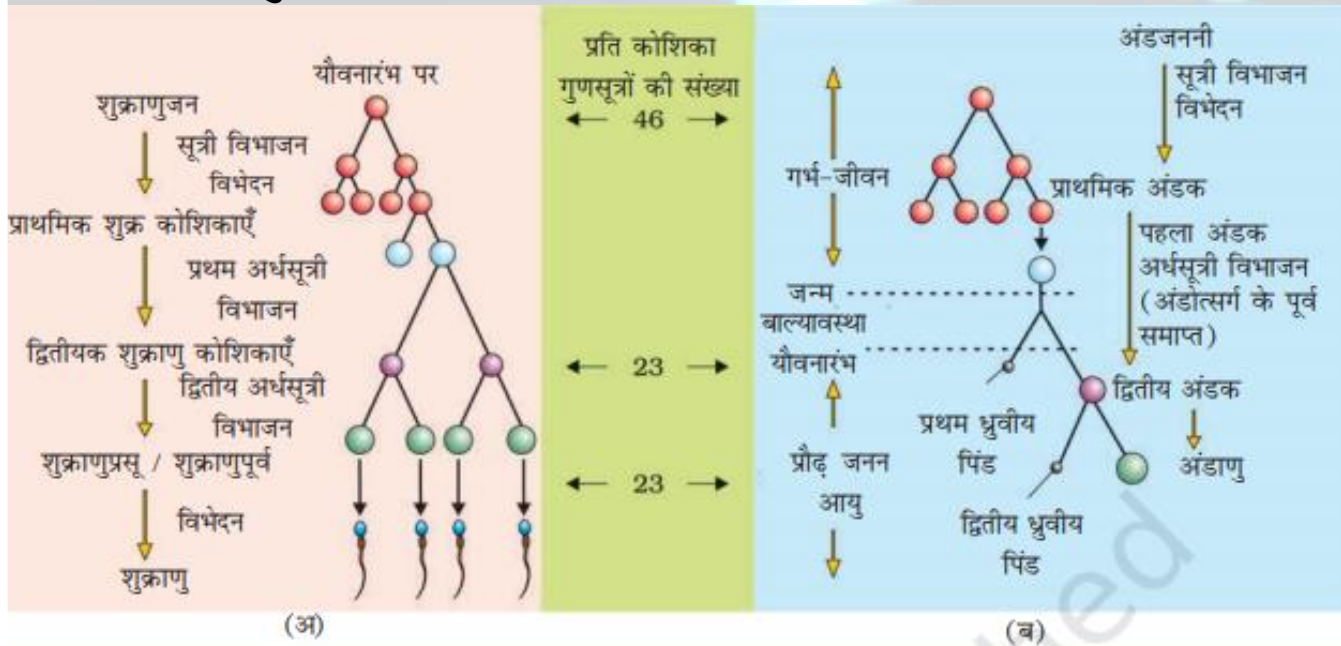
चित्र 2.8 शुक्रजनन एवं अंडजनन का आरेखीय निरूपण

<u>आरोपण:</u> तुम ही सर्वज्ञ हो अतिरिक्त सब हम मुर्ख ही होंगे?

निवेदन: मेरा हेतु उद्देश्य अगर आप विचारे तो मेरे लिए ये करना पग पर कुदाल खुरपि सरीखे मारना है, पक्ष रखने का धर्म खंडन है, मेरा मत वेदमत है, आपसे मेरा द्वेष नहीं है अपितु आपसे अच्छे सम्बन्ध मेरे लिए ऐच्छिक और आवश्यक है, भाग्य से विवश हूँ, आप मेरे तर्क छेद सके तो वह कहिये तो अति कृपा हो, मेरी बाते अन्यथा न लें, यहाँ इस विषय का अंत लेते हैं उससे पहले विषय का सार

सारगर्भित बात

बहिर्विवाह के लाभ और सजातीय विवाह के दोष

बहिर्विवाह के लाभ	**सजातीय-विवाह के दोष**
१. **आनुवंशिक विविधता:** बहिर्विवाह के परिणामस्वरूप अक्सर दो व्यक्ति जो आनुवंशिक रूप से निकट से संबंधित नहीं होते हैं, एक-दूसरे से विवाह कर लेते हैं। इससे संतानों की आनुवंशिक विविधता बढ़ जाती है, जिससे उनके प्रजनन की संभावना बेहतर हो जाती है।	१. **सीमित आनुवंशिक विविधता:** अंतर्विवाह एक समुदाय के भीतर सीमित आनुवंशिक विविधता को जन्म दे सकता है। समय के साथ, इसके परिणामस्वरूप वंशानुगत स्वास्थ्य समस्याओं और आनुवंशिक विकारों का खतरा बढ़ सकता है।
२. **राष्ट्रीय एकता और एकजुटता:** बहिर्विवाह से राष्ट्रीय एकता और एकजुटता हो सकती है, और जातीयतावाद से बचने में	२. **राष्ट्रीय एकता का टूटना:** सजातीय विवाह राष्ट्रीय एकता को तोड़ता है और ईर्ष्या पैदा कर सकता है। भारत की गुलामी में

मदद मिलती है। सिकंदर इतिहास में वह कुशल और यशस्वी सेनापतियों में से एक माना गया है. इसने अपने सेना-नायकों का विवाह जीते क्षेत्रों में बलपूर्वक करवाया और इसके कारण उसके जीवन रहते उसके साम्राज्य में कभी राष्ट्र विद्रोह नहीं हुआ।	यह सबसे बड़ा कारण है. भारत के इतिहास में समुद्रगुप्त के भारत दिग्विजय के बाद केवल अलाउद्दीन खल्जी, औरंगजेब और इन्ग्लंड इसमें सफल हुए. वर्तमान में दक्षिणी खुदको हिन्दू नहीं मानते, और जन-जाति वालों को भीमसेनायें बौध बना लेती है जो हिन्दुओं की प्रतिमाओं को ही पुनः खंडित करते हैं।
३. **सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देता है:** बहिर्विवाह से दो अलग-अलग समूहों या जनजातियों के बीच प्रेम और सहानुभूति बढ़ सकती है।	३. **जातीय केंद्रित व्यवहार को बढ़ावा देता है:** अंतर्विवाह जातीय केंद्रित व्यवहार को जन्म दे सकता है। अन्य समूहों के साथ नफरत और ईर्ष्या पैदा कर सकता है।
४. **आनुवंशिक विकारों का जोखिम कम:** यह संतानों को दोषपूर्ण जीन की दो प्रतियां विरासत में मिलने के जोखिम को कम करता है। इसका मतलब यह है कि वंशानुगत बीमारियाँ, जो महिलाओं में बांझपन और बच्चों में कैंसर जैसी स्थितियों	४. **अंतःप्रजनन:** अंतर्विवाह अंतः प्रजनन को प्रोत्साहित करता है, जिससे आनुवंशिक स्टॉक के अध:पतन का कारण बनने की संभावना है।

का कारण बन सकती हैं, होने की संभावना कम है।	
५. **साझेदारों का विस्तृत चयन:** यह संभावित साझेदारों का व्यापक चयन प्रदान करता है, क्योंकि यह किसी के तत्काल सामाजिक समूह तक सीमित नहीं है। इससे वंशाणु सशक्त होता है।	५. **सीमित साथी चयन:** सजातीय विवाह में साथी चयन का विकल्प बहुत सीमित होता है। इसमें वंशाणु उसी सीमित समूह तक रहता है।

"..13 फ़रवरी 1971

सलेम, तमिलनाडू

श्री राम और माता सीता की नग्न प्रतिमाओं को जुलूस में निकालकर चप्पलों से पीटा गया। *हिन्दू देवी-देवताओं का अश्लील चित्रण किया गया। श्री राम का पुतला सार्वजनिक रूप से जलाया गया। हिंदू देवताओं की वासना और उनके जन्म को उजागर करने वाले पोस्टर हर जगह पाए गए। कई अन्य तस्वीरों में पौराणिक कथाओं की नग्न मूर्तियाँ और कामुक दृश्य दर्शाए गए हैं।"*

एस. रॉबर्टसन

(1971 में पेरियार द्वारा सलेम में आयोजित'अंधविश्वास उन्मूलन सम्मेलन)

इतिचतुर्थ: पाठः

****

समाज और
उसके घटक
खंड:६
व्यक्तिगत आवश्यकताओं का समाधान?
-अन्वेषक

5.समाज और उसके घटक

परस्पर व्यक्तिगत आवश्यकताओं का समाधान?

5.1. सामाजिक विज्ञान और मानविकी

किसी समूह या समूहों के सम्बद्ध सांस्कृतिक, आर्थिक, व्यावहारिक मानदंडों एवं परम्पराओं के औसत को समाज कहते हैं. इसकी सबसे छोटी इकाई पुरुष है. वृहत समाज को समझने के लिए सर्वप्रथम उसके इस व्यष्टि मानव को समझना चाहिए तो समाज के दर्पण का साक्षात् स्वयं हो जायेगा. बृहदारण्यक उपनिषद् (२.४) में एक प्रसिद्ध कथा है। देखें-

जब दार्शनिक-शिरोमणि याज्ञवल्क्य गृहस्थाश्रम का परित्याग कर संन्यास में प्रविष्ट होने लगे तब उन्होंने अपनी भार्या मैत्रेयी को बुलाकर कहा - "मैं इस गृहस्थाश्रम में पड़े रहना नहीं चाहता, मैं परलोक साधन करना चाहता हूँ, आओ मैं कात्यायनी और तुम्हारे लिए अपने धन का विभाजन कर दूं ।" याज्ञवल्क्य की बात सुनकर विदुषी मैत्रेयी ने पूछा - "यदि यह सारी पृथिवी धन-धान्य से परिपूर्ण होकर मेरी हो जाए तो ***'कथं तेनामृता स्याम्'*** क्या मैं उससे अमरत्व को प्राप्त कर सकूंगी ?" महर्षि ने उत्तर दिया- "जैसे साधन-

सम्पन्न व्यक्ति सुख-चैन से जीवन निर्वाह करते हैं, वैसा ही तुम्हारा जीवन भी हो जाएगा. ***'अमृतत्वस्य तु न आशा अस्ति वित्तेन'*** धन-धान्य से अमरत्व पाने की तो तनिक भी आशा नहीं है।" तब मैत्रेयी ने कहा–***"येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्याम्'*** जिस धन से अमरत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती उसे लेकर मैं क्या करूंगी।" इस उत्तर को सुनकर दार्शनिक-शिरोमणि याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी को जो आध्यात्मिक उपदेश दिया वह भारतीय धर्म तथा दर्शन के इतिहास में सदा अमर रहेगा। उन्होंने कहा-

"पति पति के लिए प्यारा नहीं होता, अपितु आत्मा के लिए । पत्नी पत्नी के लिए प्रिय नहीं है, प्रत्युत आत्मा के लिए । पुत्र पुत्र के लिए प्यारे नहीं होते, अपितु आत्मा के लिए प्रिय होते हैं । संसार की समस्त वस्तुएँ उनके लिए प्रिय नहीं होतीं अपितु आत्मा के लिए प्रिय होती हैं, अतः सबसे प्रिय वस्तु आत्मा है–

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम् ॥

मैत्रेयीं ! उस आत्मा का ही दर्शन करना चाहिए, श्रवण करना चाहिए, मनन करना चाहिए और निदिध्यासन (निरन्तर ध्यान) करना चाहिए, क्योंकि आत्मा के दर्शन, श्रवण, मनन तथा विज्ञान से सभी अंतरव्यथाओं और प्रश्नों को जाना जा सकता है ।"

व्यष्टि इकाई (आत्मा) के स्वरूप को और विस्तार से जानते हैं-

आत्मा का लक्षण-

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यत्मानो (न्यायदर्शन 1.1.10)

इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान आत्मा के लक्षण हैं, अर्थात जिसके ये लक्षण है वह आत्मा है, शरीर नहीं

कर्ता शरीर नहीं आत्मा है-

चिदवसाना भुक्तिस्तत्कर्मार्जितत्वात (संख्या दर्शन 6.55)

चेतन, ज्ञानवान जीवात्मा ही कर्ता और भोक्ता है, शरीर नहीं- आत्मा कर्ता है और भोग केवल आत्मा की तृप्ति से है

इश्वर आत्मा एक नहीं-

आनंदमेयोऽभ्यासात (वैशेषिक दर्शन 1.1.12)

ब्रह्म की निरंतर उपासना से जीवात्मा आनंदमय हो जाता है. इस सूत्र से ब्रह्म और जीव का भेद स्पष्ट होता है

अर्थात शरीर केवल व्यवहार की वस्तु है, व्यवहार का कर्ता स्वयं जीवात्मा है. और यही भावनाएं रखता है. संचित कर्म और संस्कार भी इसके ही शास्त्र कहता है.

मनुष्य समाज के लघु-रूप का उदय आंगल साहित्य में शिकारी-फ़रमर (hunter gatherers) बताया है, जो परस्पर सहयोग के कारण साथ आ गये, इनका केवल भोजन संग्रह और जंगली जानवरों से रक्षा का लक्ष्य था. ऐसे ही और जुड़ते गए तो कबीले बने, अपने आपस के कानून और सिद्धांत बनाये, गत समय पश्चात और अधिक गठन हुए. जनसमूह-जनसँख्या बढ़ने से समाज के इस परस्पर संबंधो के आतंरिक ढांचे की जटिलता और बढ़ी तो मतों और सत्य और अधिकार की सभी की अपनी-अपनी व्याख्या की भिन्नता से राजनीति भी शुरू हुई.

वैसिक साहित्य में क्या हुआ इसका इतिहास पिछले खण्डों में दिया ही है.

वैज्ञानिक आधार पर समाज की रचना प्रारंभिक मनुष्य ने व्यक्तिगत अपनी उत्तरजीविता(survival) के लिए किया, जिसके अंश आज भी मनुष्य मस्तिष्क के मनोविज्ञान में है.

जैसे जैसे समाज विकसित हुआ तो उसकी जटिलता भी वृद्धि को पाई. आवश्यकता उत्तरजीविता(survival) से सुरक्षा बनी, पहले लक्ष्य सरल था- भोजन प्रबंध, अब लक्ष्य उसे और खुदको बचाना, सुरक्षा

तत्पश्चात वह सगे सम्बन्धी एवं प्रेम चाहते है, समाज में पूर्णता मिलने से आदर को इच्छित होता है, और उसके लिए प्रयत्नशील होता है, इसके बाद वह खुदको जानने की ओर इच्छा करता है, जैसा अमीर व्यक्ति उस रेखा को पार कर चूका होता है पर फिर भी वह और अधिक धन कमाना चाहता हैं, अपने विस्तार का माप देखने की इच्छा करता है, जैसा याज्ञवल्क्य मैत्रेयी से कहता है : आत्मसाक्षात्कार. आगे इसी प्रकार नीचे मैस्लो के पदानुक्रम में देख लीजिये

आवश्यकताओं का मैस्लो का पदानुक्रम

आत्म-साक्षात्कार
के लिए सबसे अधिक बनने की इच्छा जो आप बन सकते हैं

आदर
सम्मान, आत्म-सम्मान, स्थिति, मान्यता, शक्ति, स्वतंत्रता

प्यार और अपनापन,
दोस्ती, आत्मीयता, परिवार, जुड़ाव की भावना

सुरक्षा के लिए
व्यक्तिगत सुरक्षा, रोजगार, संसाधन, स्वास्थ्य, संपत्ति की आवश्यकता होती है

शारीरिक आवश्यकताएँ
हवा, पानी, भोजन, आश्रय, नींद, वस्त्र, प्रजनन हैं

नीचे से उपर की ओर

यह अवश्यक्ताओं की जटिलता ही समूह का कारण है अतः परस्पर व्यक्तिगत आवश्यकताओं और महत्त्वकांक्षा का समाधान के अर्थ समाज का बनना, यह वाक्य सत्य है, पर इसका मूल उसकी खुदकी आवश्यता ही है. हर मनुष्य का आत्मा आत्मकेन्द्रित मानसिकता वाला ही है, जो उसका प्राकृतिक स्वभाव भी है.

वेद के वचन देखिये-

अथर्ववेद - काण्ड » 20; **सूक्त** » 128; **मन्त्र** » 3

विद्वानों को प्रयत्न करना चाहिये कि उनके सन्तान विद्वान् होकर विद्वानों से मिलकर रहें ॥३, ४॥

अथर्ववेद - काण्ड » 20; सूक्त » 128; मन्त्र » 6

जो कोई ज्ञानी का सन्तान होकर कुमार्गी मूर्ख होवे, वह निर्धन होकर निस्तेज हो जाता है, यह बात वेदशास्त्र से सिद्ध है ॥६॥

आत्मा को, जो अज्ञान से अपने अस्तित्व को भ्रमवश शरीर मानता है, उसे सबसे प्रिय वस्तु अपना पुत्र ही होता है. उपरोक्त वेदमंत्र में जाति व्यवस्था की रीढ़ टूट गयी है. वेद में कई एसे मंत्र पा जायेंगे जिसमे आज के जाति प्रथा से उलट विधान इश्वर ने दिया है, मनु के वही श्लोक अपने ग्रन्थ मनुस्मृति में भी दिया है

मानसिकता से बटवारा

यह विश्वास कि कोई व्यक्ति दूसरों से श्रेष्ठ है, जिसे अक्सर श्रेष्ठता की भावना(सुपीरियोरिटी काम्प्लेक्स) कहा जाता है, एक ऐसा व्यवहार है जो बताता है कि व्यक्ति मानता है कि वह किसी तरह दूसरों से श्रेष्ठ है। इस मानसिकता वाले लोग अक्सर अपने बारे में बढ़ा-चढ़ाकर राय रखते हैं। उन्हें विश्वास हो सकता है कि उनकी क्षमताएं और उपलब्धियां दूसरों से बेहतर हैं। हालाँकि,

श्रेष्ठता की भावना वास्तव में कम आत्मसम्मान या हीनता की भावना को छिपा सकती है।

मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड एडलर ने पहली बार 20वीं सदी के अपने शुरुआती काम में श्रेष्ठता की भावना का वर्णन किया था। उन्होंने रेखांकित किया कि श्रेष्ठता की वास्तव में अपर्याप्तता की भावनाओं के लिए एक रक्षा तंत्र है जिसके साथ हम सभी संघर्ष करते हैं। संक्षेप में, श्रेष्ठता की भावना वाले लोग अक्सर अपने आस-पास के लोगों के प्रति घमंडी रवैया रखते हैं। लेकिन ये महज़ असफलता या कमी की भावनाओं को छुपाने का एक तरीका है।

सभी द्वेष का कारण अपना हित दूसरों से अलग ढूँढना और मानना कारण है. इश्वर ने ही सबको बनाया है. रचना से रचयिता का ज्ञान होता है.

धर्म का स्वरुप वही जानता है जो तर्कपूर्वक धर्म के अवयवों का अनुसन्धान कर निर्णय लेता है- यह मनु का भी वचन है. क्या कारण है जो एक ही मनुष्य योनी में जन्मे एक ही जाति मनुष्य जाति का वही व्यष्टि इकाई मनुष्य आपस में लड़ता है. कारण है स्वार्थ और भ्रम. मनुष्य का आत्मा स्वभाव से स्वार्थी है जो जीवन जीने हेतु उसकी आवश्यकता भी है पर भ्रमित होकर यह वह स्वार्थ पापाचार से भी अर्जित करने का प्रयास समय समय करता है. मनुष्य अधिकार अवश्य चाहता है स्वतंत्रता चाहता है पर धर्म कर्त्तव्य नहीं.

इन मत-मतान्तरों के संघर्ष ने पूरी मानवता को दुःख सागर में डुबो रखा है. सभी का सभी से परसपर अविश्वास से सब विरोध और उदासीनता का कारण है. जो सत्य से समझौता करते हैं उनका नाश तो होता ही है और जो चुप्प रहकर सत्य की अर्थी उठाने का ही एक प्रकार से सहयोग कर रहे हैं उनका नाश पहले होगा यह मनु भी मानते हैं. पाप करने वाले दोषी होते हैं पर जो पाप होते देखते हैं वे अधिक दोषी हैं

பிள்ளையார் சிலை உடைப்புப் போராட்டம் (1953)

1953 में पेरियार ने बुद्ध पूर्णिमा पर भगवान गणेश की मूर्ति तोड़ दी।

"ENLIGHTENMENT" IN SALEM. Comments Cho in Thuglak: "It is a good thing that Periyar was crusading for abolishing superstition in Tamil Nadu. But this is not good enough. How about liberating the rest of the country?" The second placard carries the same legend inscribed on the pedestal of a statue of E. V. Ramaswami Naicker, unveiled by Chief Minister Karunanidhi which he said he did not notice: "There is no God, there never was one. Those who believe in God are fools. Those who worship God are barbarians."

Banned In Tamil Nadu

Has even God to be at a discount in a secular State? The so-called Anti-Superstition procession taken out at Salem was a real affront to millions of Hindus and to their sense of duty, dignity and discipline, the three precepts by which the Dravida Munnetra Kazhagam swears for advancement of the ruling party in Tamil Nadu.

CHO (real name S. Ramaswamy), the editor of Thuglak. His question of the day to Tamil Nadu's Chief Minister: "If beating portraits of gods with chappals was ethical, how does publishing photographs of the incident become unethical?"

THE BANNED ISSUE. The cartoon on the cover shows Gandhiji, Nehru and Annadurai moaning over the present climate in the Indian scene—each in turn regretting the change in the children, daughter and brothers.

THE Madras Police recently raided the premises of the Tamil fortnightly, Thuglak and seized copies of the issue of February 15 on the basis that they contained "indecent, scurrilous pictures, etc".

The issue carried pictures of the tableaux taken in procession at Salem, in connection with the "Superstition Eradication Conference" organised by the Dravida Kazhagam. The tableaux ridiculed Hindu gods and goddesses, portraying them in an obscene manner.

Cho (S. Ramaswamy), the editor of Thuglak, offered, at the time of the seizure, to tear off the pages containing the features objected to and sell the issue, but his pr... was rejected.

The Salem incident is bound to have repercussions in the mid-term elections.

"Periyar" E. V. Ramaswami Naicker, leader of the Dravida Kazhagam, who organised the "Anti-Superstition" procession, had even as early as 1953 broken an idol of Ganesa, at Tiruchirapalli. The complaint finally went up to the Supreme Court and the Judges made a significant observation: "If there is a recurrence of such a foolish behaviour on the part of any section of the community, we have no doubt that those charged with the duty of maintaining law and order will apply the law in the sense in which we have interpreted the law". Earlier the Judges had explained that "the courts have to pay due regard to the feelings and religious emotions of different classes of persons, with different beliefs, irrespective of the consideration whether or not they share their beliefs or whether they are rational or otherwise, in the opinion of the court".

28 THE ILLUSTRATED WEEKLY OF INDIA, MARCH 7, 1971

1956 में उन्होंने मरीना में श्रीराम की तस्वीर जला दी थी.

OLD MAN AT HIS OLD GAME. The police have registered a case against Periyar E. V. Ramaswami Naicker. But, unperturbed, he says, "I have been doing these things from 1930."
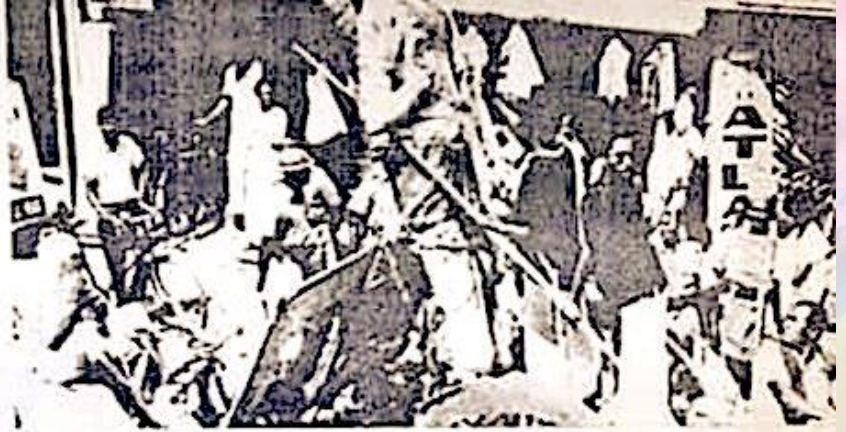
NOT FOR VENERATION, BUT DENIGRATION. Black shirt followers of the D Kazhagam slipper a Rama figure to symbolise their "emancipation" from superstition. showed little concern for the feelings of the hundreds of millions of their countrymen venerate Rama as the paradigm of perfection.

HYMN TO SKANDA—Siva's son also known as Kartikkeya, the god of war and the planet Mars. The Mahabharata and the Ramayana say that Kerttikeya was produced without the intervention of a woman. Siva cast his seed into the fire which was afterwards received by the Ganga. The child was fostered by six nurses known as the Krittika, and hence he has six heads and the name Kerttikeya. The Dravida Kazhagam has however its own twist to the tale.

ஆண் கடவுளர்கள் புணர்ந்து பெற்ற ஐய்யப்ப

AIYAPPAN born out of the union of male gods—reads the le to this tableau. Hari-Hara, a combination of the names of V and Siva and representing the union of the two deities in one, been accounted for in different tales. One such is that Siva wer moured of Vishnu in the form of Mohini and out of Hari-Hara born Aiyappan, the Lord of the Sabarimalai temple.
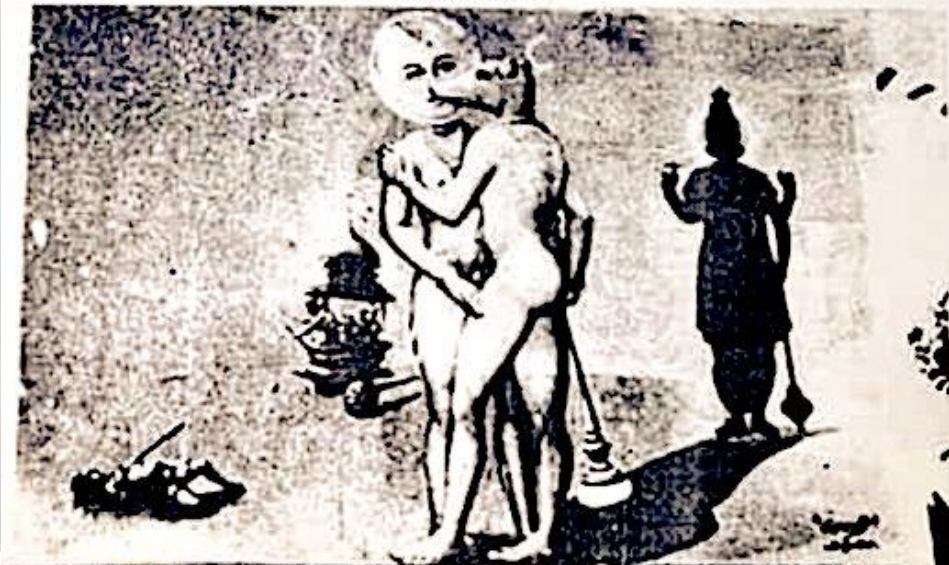
VARAHA AVATAR—the D Kazhagam's visualisation. vishnu "excavates" the eart tableau has in the backgr depiction of mother Bhuma the demon Nara—a legend has no authoritative sour Satapatha Brahmana state (the earth) was only so la size of a span. A boar calle she raised her up. Her lord pati, in consequence prosp with this pair and makes h plete." The Madras High C quashed the Tamil Nadu ment's recent order forfe tain posters on th with the obser ernment

ஊர்வலத்தில் ராமர் சிலைக்கு
செருப்பு மாலை...

1971 में पेरियार ने सेलम में भगवान श्री राम और माता सीता की झांकी बिना कपड़ों के चप्पलों की माला पहनाकर जुलूस का नेतृत्व किया था. इस रैली का नाम "रावण लीलाई" रखा गया

इस भारतवर्ष में बहुत से (1)धर्मात्माओं ने जन्म लिया, इस जैसे (२)धर्मात्माओं ने भी जन्म लिया और हम जैसे (3)धर्मात्माओं ने भी जन्म लिया

श्री राम तो धर्म की मूर्ति हैं, उनका परिचय किसे चाहिए?

पेरियार का अर्थ पवित्र आत्मा है, जो इसे तमिल लोग बुलाते थे
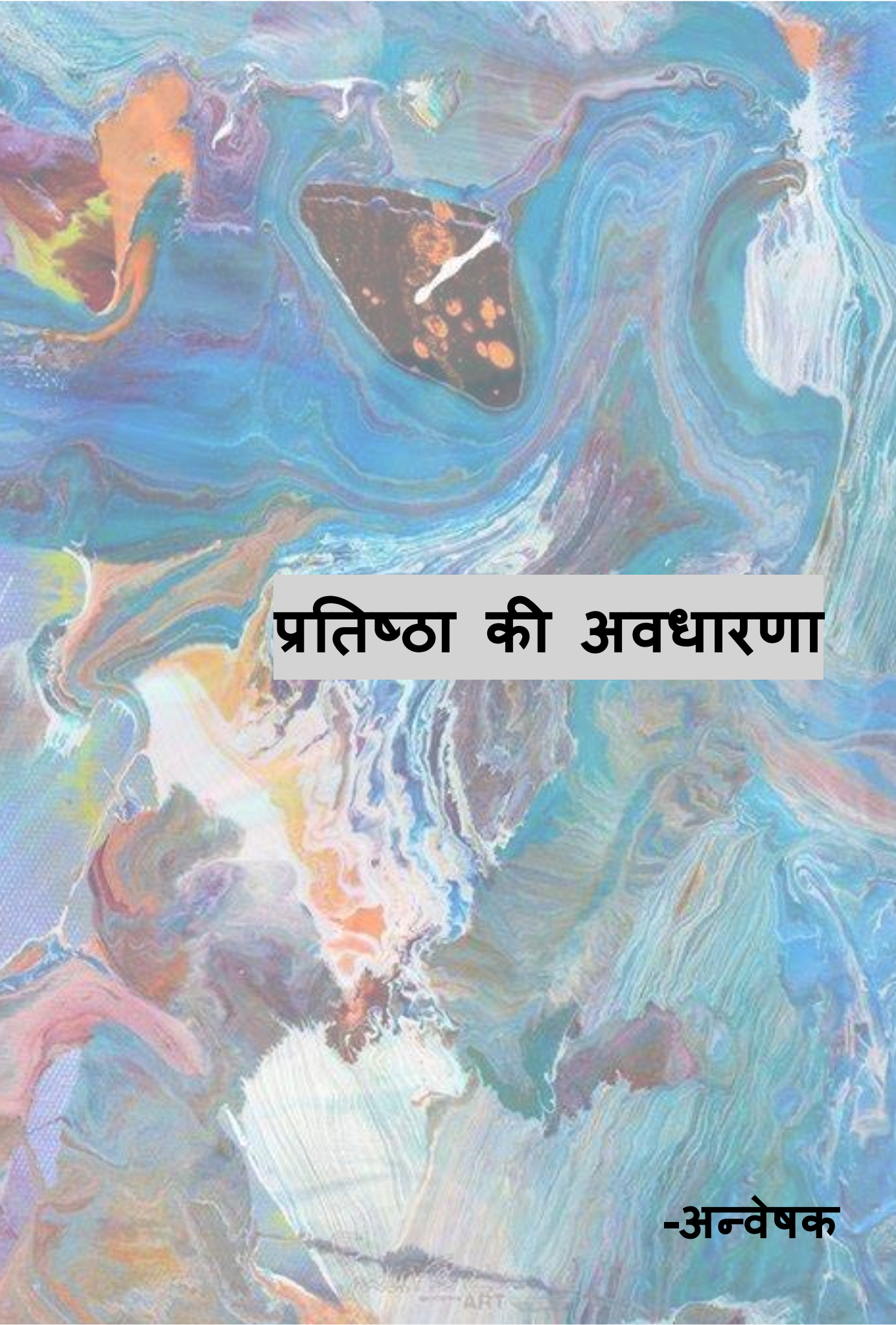
और हम इतने धर्मात्मा वैरागी बने हुए हैं की हमारे धर्मपुरुषाओं का क्या अपमान इसी समाज में हुआ, हमें ज्ञात भी नहीं

ऐसे समजा की दुर्गति की कामना तो स्वयं इश्वर भी करता होगा. अपने असमर्थ पिता का अपमान हमारे सामने हो और हम अपने और अपने परिवार के लिए चुप्प कर कमाते रह जाए तो उस बुड्ढे की आत्मग्लानि की क्या सीमा होगी? वह लिखा नहीं जा सकता.

(अंत)

यहाँ समाज के व्यष्टि इकाई मानव की व्याख्या की- आगे के विषयों में वैदिक समाज का सदाचार, वर्तमान समाज की स्थिति, प्रतिष्ठादर्शन, सामाजिक भूलें आदि. देख लेवें. इति

प्रतिष्ठा की अवधारणा

-अन्वेषक

प्रतिष्ठा की अवधारणा

प्रतिष्ठा का व्यक्ति से अलग एक वास्तविक अस्तित्व है, जो उस व्यक्ति के बारे में साझा किए जाने वाले सह-सामूह या समुदाय के मानसिक निर्माण का प्रतिनिधित्व करती है, यह निर्माण अर्ध आंशिक रूप से आपके स्वयं के कार्यों पर आधारित है, लेकिन बचे आधे हिस्से में आपके कार्यों के बारे में दूसरों की धारणाओं पर।

पर इसका आधार तो समाज ही है. समाज का आधार क्या है? उसके मन में रचे बसे पीढ़ियों के ज्ञान का वह औसत जो उनके पूर्वजों से चला आया है जिसे सभ्यता भी कह सकते हैं.

क्या हो अगर वह सभ्यता सिर्फ नाम मात्र बची हो उसका व्यवहार और सभी नियम अर्ध-सत्य या पूर्णतया ही ख़त्म सा हो गया हो? बिना आत्मा के शरीर की जो स्थिति हो वही जान पड़ती है. प्राण नहीं है पर शरीर का एक-एक अंग कीड़े लग कर गल रहा है, वही स्थिति आर्यों के उतरार्ध वर्तमान इस हिन्दू समाज की है जो किसी सड़ते-गलते, कीड़े लगते शरीर की तरह हो चूका है.

रही प्रतिष्ठा की भावना, किन समाज मे देव आप अपनी प्रतिष्ठा खोजते हैं? जिन्होंने अपना धर्म को अर्थ के लिए समझौता किये हुआ है? आपके शहर के मंदिरों के शीर्ष पुजारीयों को संभवतः श्राद्ध और विवाह मन्त्रों के लिए भी पुस्तक की आवश्यकता पड़ती हो, जो उनकी एकमेव रोटी है. अन्य महाभारत और रामायण की बात ही क्या? एक पुराण में वेद को राक्षस ही अपहरण कर ले गया है. ये धर्म के दुश्मन क्या धर्म के स्वरुप को जानेंगे. यह हिन्दू समाज में व्याप्त 'राक्षसी' जाति और इसके पीछे इसकी पंक्ति में बैठे इसके पुत्र सजातीय विवाह ने इस हिन्दू जनमानस को खंड-खंड क्षेत्र-क्षेत्र में बाँटा है. स्वार्थ द्वेष अपने ही भाइयों से बढाया है. जाट राजपूत से, शूद्र ब्राह्मणों से, केवल वैश्य लोग ही इससे बचे क्यूंकि उन्हें पैसा कमाना था और समाज से अपने को विभाजित नहीं माना, इसी के कारण समाज में इनका कद बढ़ा बजाये उनके जो

अपने को दूसरों से अलग मानते हैं. इनके बाँटने से नए नेता उभरे और अपने समुदाय के नाम पर राजनीति करने लगे, समाज तो पहले से ही स्वार्थी और अज्ञानी है. समाज कल्याण करने वाले मंदिर में बैठे पुरोहित भी निर्धन. क्या धर्म हो इस परिस्थिति में? सब कुंठा से ग्रसित.

दूसरा तर्क खुद समझिये जब अपनी जाति में भी अच्छा युवक/युवती ढूंढते हो, की अपनी जाति में भी जानते हो दुष्ट हैं, तो दुसरे जाति में क्या कोई अच्छा नहीं होगा? 'हम तो उन्हें मनुष्य ही नहीं मानते, मनुष्य जाति क्या है, हमने तो अपनी अलग की हुई है'

अब व्यक्तिगत टिपण्णी पर आते है-

1. आप गीता में कर्म की श्रेष्ठता का सिद्धांत स्वीकार करते हैं.
2. उसी गीता में वीरगति होने से स्वर्ग होता है, अर्थात संचित हुआ वह कर्म अगले जन्म में भी रहा करता है.

अस्तु, दो बातें स्पष्ट है, जिस प्रकार के कर्म करे उस प्रकार के फल संचित होते है दूसरा ये संचित कर्म अगले जन्म को भी आत्मा के साथ जाते हैं.

"इसी पृथ्वी पर हर बार जन्म मिलता है और यहीं कर्म भोगना होगा" यह मानने वालों के लिए प्रेमपूर्वक उपहार-

नमो स्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ यजुर्वेद - अध्याय » 13; मन्त्र » 6

हे मनुष्यो! जितने लोक दीख(दिखते) पड़ते हैं, और जो नहीं दीख(दिख-देखना) पड़ते हैं, वे सब अपनी-अपनी कक्षा में नियम से स्थिर हुए आकाश मार्ग में घूमते हैं, उन सबों में जो प्राणी चलते हैं, उन के लिये अन्न भी ईश्वर ने रचा है कि जिससे इन सब का जीवन होता है, इस बात को तुम लोग जानो॥६॥

देहपात के अनन्तर देह तो अपने-अपने कारण पदार्थों में लीन हो जाता है और जीव स्वकर्मानुसार प्रकाशमय, जलमय, पृथिवीमय लोकों तथा वृक्षादि की जड़योनियों तक प्राप्त होता है ॥३॥ **ऋग्वेद - मण्डल** » **10**; **सूक्त** » **16**; **मन्त्र** » **3**

हे जीवो! जो जगदीश्वर तुम्हारे लिये सुख चाहता है और किरणों के द्वारा लोक-लोकान्तर को पहुंचाता है, वही तुम लोगों को न्यायकारी मानना चाहिये॥२॥ **यजुर्वेद - अध्याय** » 35; **मन्त्र** » 2

सृष्टि प्रवाह से अनादि है और हर कर्म संचित होता है, इसी प्रकर अन्य पृथ्वियों पर भी जन्म होते हैं और वहां पर किये कर्म भी संचित होते हैं और पुराने कर्मो का फल कोई अर्जी लगाकर भूला या कम नहीं हुआ करता, वह निश्चय से मिलता है.

पर मुख्य प्रश्न यह है इन कर्मो का आधार, की क्या अच्छा है क्या बुरा, धर्म-अधर्म यह कौन स्पष्ट करेगा? उन्ही श्री कृष्णा की शास्त्र परंपरा में सत्य आपको पिछले खंडो में भी दिखाया है, तो भी-

वेदवेदाङ्गविज्ञानं बलं चाभ्यधिकं तथा। नृणां लोके हि कोऽन्योस्ति विशिष्टः केशवादृते।।

(युधिष्ठिर के राजसूय में अर्घदान पर ब्रह्मचारी भीष्म)

महाभारत सभापर्व अध्याय 41 श्लोक 19

इनमे(कृष्ण में) **वेद-वेदांग** का ज्ञान तो है ही, बल भी सबसे अधिक है, श्री कृष्ण के सिवा इस संसार में मनुष्य में दूसरा कौन सबसे बढ़कर है?

अवतीर्य रथात् तुर्णं कृत्वा शौचं यथाविधि। रथमोचनमादिष्य संध्यामुपविवेष ह।।

महाभारत उद्योगपर्व अध्याय 84 श्लोक 21

यानी जब सूर्य ढलने लगा तब श्रीकृष्ण ने जल्द ही रथ से उतरकर रथ को रुकने का आदेश दिया और पवित्र होकर सन्ध्योपासना में लग गए।

आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात् । अग्ने त्वां कामये गिरा ॥८॥

सामवेद - मन्त्र संख्या : 8

हे (अग्ने) जगत्पिता परमात्मन् ! (ते) तेरा **(वत्सः) प्रिय पुत्र** (परमात् चित्) सुदूरस्थ भी (सधस्थात्) प्रदेश से (मनः) अपने मन को (आयमत्) लाकर तुझ में केन्द्रित कर रहा है। अर्थात् मैं तेरा प्रिय पुत्र तुझमें मन को केन्द्रित कर रहा हूँ। मैं (गिरा) स्तुति-वाणी से (त्वाम्) तुझ परमात्मा की (कामये) कामना कर रहा हूँ, अर्थात् तेरे प्रेम में आबद्ध हो रहा हूँ ॥८॥

पुत्र विशेषण पर ध्यान दीजिये और इस मंत्र से पूर्व महाभारत का संध्योपासना का श्लोक फिर पढ़िए.

नान्यः पन्था विद्यतेयनाय ॥ यजुर्वेद 31.18

यदि मनुष्य इस सुखों की इच्छा करें तो परमात्मा को जानके ही हो सकते हैं, यही सुखदायी मार्ग है, इससे भिन्न कोई भी मनुष्यों की मुक्ति का मार्ग नहीं है॥१८॥

यदि वाहमनृतदेव आस मोघं वा देवाँ अप्यूहे अग्ने । किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस्ते निर्ऋथं सचन्ताम् ॥

ऋग्वेद - मण्डल » 7; सूक्त » 104; मन्त्र » 14

(यदि वा) यदि मैं (अनृतदेवः) झूठे देवों के माननेवाला (आस) हूँ अथवा (अग्नि) हे ज्ञानस्वरूप परमात्मन् ! (मोघं) वा मिथ्या (देवान्) देवताओं की (अप्यूहे)

कल्पना करता हूँ, तभी निस्सन्देह अपराधी हूँ। जब ऐसा नहीं, तो (किमस्मभ्यं) हमको क्यों (जातवेदः) हे सर्वव्यापक परमात्मन् ! आप (हृणीषे) हमारे विपरीत हैं, (द्रोघवाचः) मिथ्यावादी और मिथ्या देवताओं के पूजनेवाले (ते) तुम्हारे (निर्ऋथं) दण्ड को (सचन्ताम्) सेवन करें ॥१४॥

नियतकारणत्वातन्न समुच्चयविकलपौ ॥१५॥

संख्या दर्शन 3.25

मुक्ति प्राप्ति में ज्ञान अनिवार्य कारण है, अतः इस ज्ञान का न तो किसी अन्य साधन के साथ समुच्चय है और न ही विकल्प ।।25।।

पर कोई कहे हमें क्यों मोक्ष करवाकर मरवाते हो तो -

तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्ग: ।।२२।। **न्यायदर्शन 1.22**

उस जन्मरूप दुःख से निवृत्ति =छुटकारे का नाम अपवर्ग =मोक्ष है

अथ त्रिविधदुखात्यांतनिवृत्तिरत्यंतपुरुषार्थ ।।१।।

सांख्यदर्शन 1.1

अब अधिकारपूर्वक आध्यात्मिक(आत्मा इन्द्रियों से) अधिदैविक (अन्य प्राणियों से) और अध्भौतिक(तीन प्रकार के दुखों की अत्यंत निवृत्ति जो परमपुरुषार्थ =मोक्ष है, उसके शास्त्र का आरम्भ.

जो अपने जीवन में दुखों से परमसंतुष्ट है उसे ही मोक्ष के लिए पुरुषार्थ नहीं करना कहिये.

इससे जान पड़ता है जैसा हिन्दुओं के गुरु बताते हैं की भक्ति से मुक्ति हो जाति है लीला को सुनो भक्त बनो प्रभुरस में डुबो आदि सरीखी बात कुछ फर्जी लगती है, संभवतः जब खुद ही नहीं पढ़ते तो दूसरों से क्या बोलें?

अस्तु, जब श्री राम, श्री कृष्ण, महर्षि-राजर्षि पृथ्वी के प्रथम विधानकर्ता मनु को मानते हैं, मनु वेद को परम प्रमाण मानते हैं और दोनों मनु और इश्वर रचित वेद स्वयंवर की आज्ञा दे रहे है और जहाँ इतिहास में द्रौपदी-कुंती आदि उदाहरण भी प्रस्तुत हैं तो क्या ये समाज उस ईश्वर धन श्री राम और श्री कृष्णा से अधिक बड़ा है? क्या यह समाज परमेश्वर से बड़ा है जो धातुओं के कई अरब ख़रब टनों के ग्रहों को, अग्नि तप्त सूर्यों को आकाश में तैरा रहा है? गंभीरता से विचार का विषय है.

एक कठोर वास्तविकता यह है- हम उन्हें अधिक महत्व देते हैं जिनका हमसे सम्बन्ध केवल इस एक जीवन का है बजाये उसके जिसका सम्बन्ध हम से अनंत बार रहा है. वह परमेश्वर जो अनंत समय से शरीर देकर जीवन आरम्भ करता है, अनेक साधन मुह्यिय्या करवा रहा है और जब शरीर शक्ति हीन हो जाता है तो नया चोला भी देता है- बदले जिसके एक कौड़ी नहीं मांग रहा केवल हमारा सुख चाहता है, क्या कोई दंभ भरकर कह सकता है? की उसने इश्वर से अधिक आपको दिया है? जब हमारा मृत्यु होता है तब वह परमपिता हमारे आत्मा को नया चोला देता है, वहीँ ये स्वजन अंत्येष्टि में पुड़ी तोड़ने आते हैं और वहां भी खाने में अक्सर कमियां निकालते है. उस ऐसे परोपकारी परमेश्वर की आज्ञाओं की उपेक्षा हम उन रिश्तेदारों और स्वजनों के हित आहूत करते हैं जिनका सम्बन्ध इसी जन्म रहेगा.

वह श्री कृष्ण जो जटिल समय पर भी धर्म से न डिगते न श्रांत-क्लांत हुए, परिश्रम किया और सिद्धांत से कभी समझौता नहीं किया. आज उन्ही के मानने वाले अपना आलस बचाने प्रसाद का डब्बा चढाने जाते हैं जिसे भी साथ ले आते हैं. कृष्ण को तो माना, कृष्ण की नहीं मानी. उन्हें धर्म की रक्षा करनी ही होती तो अर्जुन को ज्ञान और पुरुषार्थ का उपदेश न देते. जो स्वयं पुरषार्थ

करने का उपदेश दे, उसी की प्रतिमा के सामने आलस-प्रमाद के उत्पात का नाच जो रोज़ मंदिरों में होता है, इसका परिणाम इस हिन्दू समाज की स्थिति आत्मा छोड़े सड़ते-गलते, कीड़े खाए-बदबू छोड़ते शरीर की तरह है. श्री कृष्ण जो अगर साक्षात् उतर आये तो अपने कुटुंब का नाश देखकर जो आत्मग्लानि उन्हें हुई होगी यद्यपि यह तमाशा देखकर उस दृश्य से कमतर भी नहीं होगी, की किस प्रकार मनुष्य स्वार्थी हुआ है और सबसे पहले अपना चक्र मथुरा वृन्दावन पर ही मरेंगे, उनसे जो अपना स्वयं का गृह क्लेश रोक नहीं पाए, पूरा जीवन संघर्ष, युद्ध, विद्रोह और कठिन दुःख भोगकर धर्म को बलिदान दिया आज उनके मानने वाले उन्हें गोपियों के साथ नचवाते, लीलाएं करवाते और मन्नते किया करते हैं.

इसका शरीर और मस्तिष्क सड़-गल गया, क्यूंकि इस समाज ने अपना हिंदूवादी प्रतिनिधित्व, उचित नीतियां और स्वाध्याय अपने वेतन, बच्चो, घर और प्रतिष्ठा में फूंक दिया, धर्म तो कहीं पीछे रह गया, दान ख़तम होने से साधू संतो ने भी कार्य बंद करके अपनी सेवाएँ बेचना शुरू कर दिया और बचे हुए को बॉलीवुड के भांडों ने धर्म को बदनामकरने में कोई पुरुषार्थ की कमी नहीं छोड़ी, (सिनेमा में “बलात्कारी लाला ब्रह्मण ही क्यूँ होता है?” पढ़िए), सन्यासियों तपस्वियों के ख़तम होने से और अधिक दुर्दशा हुई.

जो बचे उन्होंने मिथ्या जातिवाद और आडम्बर का प्रचार कर दिया जिससे और सत्यानाश हुआ. ऐसे समाज में जहाँ नामधारी ही बचे हों और नाम के पीछे बहुरूपिये का कार्य करते हों, इनमे प्रतिष्ठा करने में किस अमृत की प्राप्ति आपको होती है? किसे अभिलाषा होगी? कोई कहता हो की समाज से सम्बन्ध टूट जाए, तो एसा भी नहीं है. कोरोना महामारी में जब लोगो के माता पिता मर गए तो कई दुष्ट लोग अपने माता-पिता के मृत शरीरों से जेवर निकलने और संपत्ति के कागजों पर मृत ही उनके अंगूठे लगाने अवश्य महामारी में सडको पर निकले. यथार्त सत्य यही है मनुष्य स्वार्थी है और आपके संबंधों में भी जब तक स्वार्थ है तब ही तक वे आपके साथ देते हैं. अन जब स्वार्थ न मिले तो निष्क्रियता मस्तिष्क का स्वभाव है. दान देने वाला भी पुण्य सोचता है तब ही

दान करता है. जो बताया जाए जीवन केवल यही है और कोई पाप पुण्य नहीं होता, तो सबसे बड़ा पापी बने. स्वार्थ दान में भी है. बिना स्वार्थ के कुछ नहीं.

अंतिम में,

सत्यवादी तो सत्यवादी ही होता है और जो समय परिस्थिति देखकर सिद्धांतों से समझौता कर ले वह राजनेता कहाता है. अस्तु, सब प्रमाण पिछले खण्डों में दे ही दिये गए है, देख लेवें, तब भी कोई हठ करे तो अंत में वही दिखावा समाज की बात कहते हैं-

राम या बड़ा समाज कृष्ण बड़ी या जात ।

मार्ग को भूला मान, सत्ता को प्रणाम ।।

तृष्णा की भरमार कागज़ अपरम पार।

सत्य बड़ी या साख धर्म को निगला नाग ।।

वर्तमान समाज

-अन्वेषक

वर्तमान समाज

"भारतवर्ष का एक रोग है. वह यह की राजनैतिक प्रभुता प्राप्त व्यक्ति को विद्वान् और ईश्वर भक्त माना जाता है. एक बार हिन्दुओं के शीर्ष धर्मगुरु ब्रह्मचारी प्रभुदत्त ने पंडित जवाहरलाल को भी ईश्वरभक्त लिखकर प्रमाण–पत्र दे दिया था और यही राजनेता बाद में भारतीय विद्या भवन जो अपनी पत्रिका 'वेद एज़' में वेदों का वर्णन "ईसा से 1500 वर्ष पूर्व" मानते हैं, उन्हें लाखों रुपए का दान देकर ऐसे मिथ्यावादी संगठनो को सशक्त करते है जो ऑक्सफ़ोर्ड के कथित संस्कृत महापंडित मैक्स्मुलर और उसके चेले-चाटियों के लेखों के आधार पर अपना शोध छपवाता है जो वेद को 'बचकाना, दुरूह और गंवारपने का गट्ठर' कहते हैं."

-गुरुदत्त

नेताओं को अपना नायक(इश्वर-भक्त) मानने का इतिहास इस हिन्दू समाज का नया नहीं है. अपने धर्म को हिन्दू समाज के पुरोधाओं शीर्ष धर्मगुरुओं ने ही नहीं समझा, एक प्रसिद्ध शंकराचार्य ने अयोध्या मंदिर के लिए न्यायलय में जीत के लिए वेद में अयोध्या शब्द दिखाया. न्यायालय में, इन्होने अधिक नही तो वेदों को इतिहास का ग्रन्थ सिद्ध कर दिया, अर्थ इश्वर की सृष्टि के प्रथम में दिया जाने वाला ज्ञान नहीं रहा वह तो श्री राम के समय लिखा गया या बादमे जुडाव हुआ. जिससे वह ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं माना जा सकता, यह वेद के पंडित न न व्याकरण का ज्ञान है न शब्दों के गूढ़ अर्थों का.

सामान्यतः हिन्दू तो अपने ग्रंथों के नाम छोड़िये, वे जो शास्त्र के नाम जानते भी है वो शास्त्र भी कभी नहीं पढ़ते हैं.. अगर कोई वेद का पहला मंत्र पूछने

भारतवर्ष में निकले तो 5 से अधिक गाँव निकल जायेगे एक भी व्यक्ति नहीं बता पायेगा. यही मुसलमानों से पूछिए कुरान की पहली आयत क्या है, bible पढने वाले ईसाइयों से bible की पहली वर्स पूछिये शायद ही कोई मुस्लिम या इसाई मिलेगा जो न बता पाए. जो न बता पायेगा उसे मुसलमान खुद मुसलमान नहीं कहेंगे, उल्टा उसे मार-कूटकर जातिबाह्या ही कर देंगे.

यद्यपि मेरा हाथ धर्म और तर्क में कहीं अधिक पक्का है, समाजिक विज्ञान में नहीं परन्तु वर्तमान समाज को अच्छे-से-अच्छा समझाने का प्रयास अवश्य करूँगा.

स्वतंत्रता के बाद भारत का आज का आधुनिक समाज भले ही शरीर से भारतीय हो पर आत्मा से अँगरेज़ ही है और यह स्वाभाविक नहीं कृत्रिम प्रयासों का प्रभाव है. समाज का वास्तविक स्वरुप क्या है. समाज परिवर्तनशील है. किसी भी समाज की आत्मा उसके अन्तर्निहित अनुभवों द्वारा जनित शिक्षा का औसत है. वही पीढी डर पीढी पूर्वजों का ज्ञान ही व्यक्ति का कोष होता है. मुग़लों के सामने भी ऋषियों की शिक्षा से कुछ इतर हुए तो भी इसी अनुभव ने हमें संघर्ष द्वारा उनके अत्याचारों से बचाया, पर अपने अस्तित्व के लिए अपनी आत्मा इस समाज ने उस समय नहीं बेचीं. अपनी उत्तरजीविता(survival) के लिए संघर्ष करना एक चीज़ है और अपने उस ज्ञान के मूल्यवान कोष की रक्षा अलग. मनुष्य अपनी शिक्षाओं का यदि औसत है, तो क्या अगर शिक्षा बदल जाए तो क्या मनुष्य भी बदल जाता हैं? जी बिलकुल. जब जब मनुष्य को विद्या मिलती है उसका व्यवहार अवश्य बदल जाता है. ज्ञान विनम्रता देता है, जाति उसका हेतु नहीं है. एवं इश्वर की भी सबको सामान अधिकार मिले इस प्रकार की वेद में अनेक प्रतिज्ञाएँ हैं

इस समाज में गुरु तेघबहादुर, सतिदास, मतिदास जैसे वीर भी हुए जिन्हें मुग़लों ने इस्लाम कबूल न करने के लिए क्रूर अत्याचार किया पर उनके आत्मसम्मान और इश्वर के प्रति आस्था को झुका न पाए. यह उनका ज्ञान का ही प्रभाव मानना चाहिए, एसा अपने धर्म पर बलिदान देने वाला समाज जो

दुश्मन की तोपों को गीला करने के लिए अपना सर को तोप के मूह सामने रख दिया करता था(खानवा का युद्ध १५२७) यह समाज आज कैसे एक-एक रुपए के लिए जौंक बन गया? 'मै', 'मेरा परिवार', 'मेरी जात', इतना स्वार्थी क्यूँ और कैसे हो गया? इसका कारण इतिहास के गर्भ में है मऔर अगर उसे खोजे तो ही हम आज की परिस्थिति को अच्छी प्रकार से समझ सकेंगे.

भारत इतिहास में विवधता, विज्ञान, गणित, कला का केंद्र रहा है. यहाँ अनेक्विद ज्ञानी- विज्ञानी ऋषि मनीषी हुए. हम अपना आरम्भ मुग़ल काल के आखिरी प्रभावशाली शासक औरंगजेब से करेंगे. औरंगजेब का उत्तराधिकारी वैसे तो आज़म शाह था पर १७०७ के मार्च से जून तक ही उसका राज्य रह पाया इसके बाद बहादुर शाह प्रथम ने राज्य किया. इसका और इसके आगे के शासकों का राज्य भी इसी प्रकार १-२ वर्ष हुआ करता था. एसा ढीलापन मुग़ल शासकों का देखकर स्थानीय जागीरदारों और सूबेदारों ने अपनी रियासतों और राज्यधिकारों जैसे दक्खन के निज़ाम, बंगाल के नवाब, पन्जाब की १२ सिख मिस्लें, अवध का नवाब, पहाड़ी रोहिलों ने अपने को मुग़ल गद्दी से पृथक कर लिया. बहुत से महत्वपूर्ण क्षेत्र जैसे दक्खन, बंगाल गंगा-जमुना दोआब ये ऐसे

क्षेत्र थे जहाँ की ज़मीन अत्यधिक उपजाऊ थी परन्तु अब इन सब मे मुग़ल शासन से अलग सत्ता के केंद्र उदय होने से दिल्ली के हाथ पैर मानो जैसे काट दिए गए.

दक्षिण में मराठाओं ने आज के मध्य प्रदेश, राजस्थान, ओडिशा झारखण्ड पर अपने सूबेदार बैठा दिए थे. वहां से भी दिल्ली का शासन नष्ट हो गया. यह सब कथा १७६४ की जानिए. अंग्रेजों के आगमन से पूर्व.

सामान्यतः इस्लामिक शासक अपने प्रशासन में समाज के शीर्ष वर्गों जो नीतिज्ञ या स्थानीय स्तर पर सबसे ऊँची समझ रखता था उनसे अपने राज्यकीय खाते और प्रबंधन की देख रेख का कार्य दिया करते. अधिक से अधिक कोई इस्लाम के प्रचार के लिए इस्लामिक विद्वानों के प्रचार के धन दिया करते. परन्तु उनका मुख्यतः प्रचार का काम बलात ही होता था. बुद्धि लगाना इस्लाम में हराम है. जब इस प्रकार बलात आक्रमण होते भी थे तो हिन्दू वीरों ने उन्हें बहुत भयानक रूप से प्रतिकार कर जवाब भी दिए. उदाहरण के रूप में मेवाड़ के महाराजा राज सिंह ने औरंगजेब को कैद किया, इसका शायद ही किसी को पता हो.

एक समाज है जिसे हम मलाई चाट समाज कह सकते हैं. यह मलाई चाट समाज प्रत्यक्ष या चाहे अप्रत्यक्ष रूप से अगर स्वस्वार्थ सिद्धि होती हो तो पराये को कष्ट देने में संकोच नहीं करता है. इसका उदय समाज के उन **'शीर्ष'(ब्राह्मण)** वर्गों से होता है जो अकबर की सभा में जाकर घोषणा करते है **"दिल्ली स्वरोवा, जगदीश स्वरोवा"** वे इस हिन्दू समाज के शीर्ष अपनी जाति के हितार्थ(हित के लिए) एसा करते हैं, जिससे दिल्ली सम्राट प्रसन्न होकर उनके कुटुंब, पुत्र और जाति को पद दे दें. यह उदाहरण से मलाई चाट समाज का मोनोविज्ञान समझें.

इस सबकी जड़ यही मलाई चाट समाज है, अब देखिये

मलाई चाट समाज की उत्पत्ति के विषय में

इस मलाई-चाट समाज को हवा देने का कार्य सत्य बोलने से डरने के कारण होता है, जिसे हम नाम दे देते हैं **'मौनी-समाज'**. यह समाज सत्य कहने और सत्य का प्रतिनिधित्व करने से बहुत घबराता है. क्यों? क्यूंकि इसका जो

स्वार्थके अवसर हैं, वह सत्य का साथ करने से इनको त्याग देगा. धर्म के मर्म को न समझने वाला यह अपनी और अपने जाति कुटुंब की चिंता में समाज में जब अधर्म होता है तो उसे अनदेखा करता हैं. यह अनदेखा करना सत्य उपदेश छोड़ देने का परिणाम है की इसी मौन-समाज की पीढ़ियों में से कहीं एक पीढी में मलाई चाटने वाले समाज का उदय होना है. जो अपने धर्म से पृथक केवल अपने स्वार्थ का सोचा करते हैं. आपने विदेश गए हुए बेटों के बारे में सुना होगा जो अपने माता पिता का अंत्येष्टि भी विडियो कॉल पर संपन्न करते हैं और पंडित और कहारों को नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (एनईएफटी), रियल-टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (आर.टी.जी.एस), तत्काल भुगतान सेवा (आई.एम.पी.एस), डिजिटल वॉलेट, यू.पी.आई-आधारित आदि से मरण से दाह स्थान और उससे फिर अस्थिविसर्जन तक का कोई नौकर लगाकर खर्च देकर बादमे तर्पण करते रहते हैं. इन्हें मलाई चाट समाज का ही हिस्सा माने और इन पुत्रों के जनने वाले के पिता को मौनी समाज का.

इस सबका विघटन जातिबद्ध होने से योग्य पुरुषों की उपेक्षा और अयोग्य पुरुषों के सम्मान केवल जन्म के आधार पर बद्धिकरण के कारण है. हमारे **'शीर्ष'** वर्ग ने जातियों को जो बद्धिकृत किया उसके कारण जो राजनीति में बुद्धि की कमी आयी उसके कारण समाज विदेशी नीतियों का गुलाम हुआ.(देखें समाज की ऐतिहासिक भूलें)

ब्राह्मण वर्ग ने शिक्षा राजाओं से भी छीन ली और अनपढ़ राजा प्रशासन तो क्या संभालता ब्राह्मण पुत्रों को ही पद दिया करता. इस बारे में खिन्न होकर कईं कथित नीची जातियों ने कवितायेँ लिखीं जिनमे आपके अवतारी ईश्वर और हिन्दू मान्यत्ताओं से असंतोष वे कथित जातियां आपके पूज्य पूर्वजों को सिर्फ ब्राह्मणों का हितैषी मानते थे. उदाहरण लीजिये ज्योतिराव फुले. इनकी गुलामगिरी में सरस्वती-ब्रह्मा के प्रसंग में आपत्तिजनक पंक्तियाँ लिख दी. यह सब हमारे ब्राह्मण वर्ग की अदुर्दर्शिता के कारण हुआ.

राजा जब अविद्वान हुआ तो ब्राह्मण-पुत्रों से सही विदेश नीति न पा सका जिन्होंने भी जतिबद्धता से प्रतिस्पर्धा अब न होने से परिश्रम को त्याग दिया. और उलटी नीतियों से आर्य वैदिक राजे युद्धनीति के अनुभवी विदेशियों से भी हार गया(राजा दाहिर)

मुग़लों के बाद जब देश विभिन्न रियासतों में टूट गया तब अंग्रजों ने प्रथम बंगाल पर सैन्य आक्रमण किया और ९३ वर्षों के अंतराल में युद्ध की विभिन्न नीतियों से बर्मा से अफ्गानिस्तान और कश्मीर से लंका पुरे भारत पर अपना झंडा गाढ़ दिया.(१७५७-१८५० के समकालीन).

१८५७(1857 क्रांति) से पूर्व:

जो संघर्ष राज्य सत्ता के लिए पूर्व हुआ था वही सभी अलग अलग सूबेदारों और राजाओं की अंग्रेजो के अधीन रियासतों में हुआ. प्रशासन स्थानीय प्रतिष्ठा के व्यक्ति को नहीं अपितु जो उनका हितैषी हो, उन्हें गरीब ग्रामीणों के शोषण के बदले अधिक से अधिक कर का प्रबंध करदे उसे ही राज्यकीय कर का ठेका दिया करते.

यहाँ पर भारतीय मानस कैसे विदेशी नीतियों के अनुकूल हो? अपना हित भारतियों से कैसे निकलवाया जाए? इसका उत्तर था **'अंग्रेजी शिक्षा अधिनियम 1835'(**The English Education Act **1835)** जो भारत में निर्मित विदेशी-परिषद का एक विधायी अधिनियम था जिसकी अध्यक्षता और रूरेखा **थॉमस बेबिंगटन मैकाले** ने की. 1835 में **ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी** के तत्कालीन गवर्नर-जनरल **लॉर्ड विलियम बेंटिक** द्वारा भारत में शिक्षा और साहित्य पर खर्च करने के लिए आवश्यक धन को फिर से आवंटित करने के निर्णय को प्रभावी बनाया।

इसके पीछे के शिक्षा देने से कहीं अधिक मनसूबे थे. इसका तार इसके सूत्रधार **थॉमस बेबिंगटन मैकाले** के हाथ में थे. 1834 में मैकाले भारत आये, जहां उन्होंने 1834 और 1838 के बीच सुप्रीम कौंसिल में सेवा दी। फरवरी 1835 का

भारतीय शिक्षा पर उनका लेख **'मिनट'** मुख्य रूप से भारत में पश्चिमी शिक्षा की योजनाबद्ध शुरुआत के लिए जिम्मेदार था।

उनके 'मिनट' लेख से उद्धृत -

> "*मुझे **संस्कृत या अरबी का कोई ज्ञान नहीं** है। लेकिन मैंने उनके मूल्य का सही अनुमान लगाने के लिए हर संभव प्रयास किया है। मैंने सबसे प्रसिद्ध अरबी और संस्कृत कार्यों के **अनुवाद पढ़े हैं**। मैंने यहां और घर दोनों जगह पूर्वी भाषाओं में प्रवीणता के कारण प्रतिष्ठित लोगों से बातचीत की है। मैं स्वयं भारत में भारतीय भाषा से पढ़ने के पक्ष लेने वाले परिषद् के सदस्यों के मूल्यांकन पर प्राच्य शिक्षा लेने के लिए पूरी तरह तैयार हूं। परन्तु मुझे **उनमें से एक भी ऐसा नहीं मिला जो इस बात से इनकार कर सके कि एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की एक दराज़ भारत और अरब के संपूर्ण देशी साहित्य के बराबर थी।***" [19]
>
> "Minute by the Hon'ble T. B. Macaulay, 2nd February 1835"

प्राच्यविद या प्रच्यावादी का अर्थ है वे अँगरेज़ जो भारतियों को अंग्रेजी शिक्षा भारतीय भाषाओं में देना चाहते थे एवं जो पाश्चात्यवादी है- वे पाश्चात्य भाषा में ही शिक्षा देना चाहते थे, मैकाले साहब पाश्चात्यवादी थे तो उनके विरोधी का अपने लेख में ज़िक्र करते हैं.

उन्होंने आगे तर्क दिया:

> *"मेरा मानना है कि इसमें शायद ही कोई विवाद होगा कि साहित्य का वह विभाग जिसमें पूर्वी(भारतीय) लेखक सर्वोच्च स्थान पर हैं, कविता है। और मैं निश्चित रूप से कभी किसी प्राच्यविद्या से नहीं मिला जिसने यह कहने का साहस किया हो कि अरबी और संस्कृत कविता की तुलना*

महान यूरोपीय देशों की कविता से की जा सकती है। लेकिन जब हम कल्पना के कार्यों से ऐसे कार्यों की ओर बढ़ते हैं जिनमें तथ्य दर्ज किए जाते हैं और सामान्य सिद्धांतों की जांच की जाती है, तो यूरोपीय लोगों की श्रेष्ठता बिल्कुल अथाह हो जाती है। मेरा मानना है कि यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि ***संस्कृत भाषा में लिखी गई सभी पुस्तकों से जो भी ऐतिहासिक जानकारी एकत्र की गई है, वह इंग्लैंड के प्रारंभिक विद्यालयों में उपयोग किए जाने वाले सबसे तुच्छ संक्षिप्तीकरणों में पाई जाने वाली जानकारी से कम मूल्यवान है।*** *भौतिक या नैतिक दर्शन की प्रत्येक शाखा में, दोनों देशों की सापेक्ष स्थिति लगभग समान है।*

“इसलिए, स्कूली शिक्षा के छठे वर्ष से, शिक्षा यूरोपीय शिक्षा में होनी चाहिए, जिसमें शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना चाहिए। इससे अंग्रेज़ीकृत भारतीयों का एक वर्ग तैयार होगा जो ब्रिटिश और भारतीयों के बीच सांस्कृतिक मध्यस्थ के रूप में काम करेगा; स्थानीय शिक्षा में किसी भी सुधार से पहले ऐसे वर्ग का निर्माण आवश्यक था:”*[18][19]*

Evans, Stephen (2002). "Macaulay's minute revisited: Colonial language policy in nineteenth-century India"

आपको याद है मलाई चाट समाज ? मुग़लों के समय में जो देल्ही तक थे अब वे मलाई चाट मद्रास, कलकत्ता, बॉम्बे, पुणे, हैदरबाद आदि सभी महानगरों के कान्वेंट में जन्म लेने लगे. आगे मैकाले महाशय कहते हैं-

“मुझे लगता है...कि हमारे लिए, अपने सीमित साधनों के साथ, लोगों को शिक्षित करने का प्रयास करना असंभव है। वर्तमान में हमें समाज का एक ऐसा वर्ग बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए जो हमारे और भारत के लाखों लोगों के बीच व्याख्याकार हो सके जिन पर

*हम शासन करते हैं - **ऐसे व्यक्तियों का एक वर्ग जो रक्त और रंग में भारतीय हैं, लेकिन स्वाद, राय, नैतिकता और बुद्धि में अंग्रेजी हैं।** हम उस वर्ग पर देश की स्थानीय बोलियों को परिष्कृत करने, पश्चिमी नामकरण से उधार ली गई विज्ञान की शर्तों के साथ उन बोलियों को समृद्ध करने और उन्हें आबादी के विशाल जनसमूह तक ज्ञान पहुंचाने के लिए कुछ हद तक उपयुक्त साधन प्रदान करने का काम छोड़ सकते हैं।"*

"Minute by the Hon'ble T. B. Macaulay, 2nd February 1835"

सोचिये इसका निरूपण क्या रहा होगा? जर्मनी के मुलर साहब के पत्रों से जानिये जिन्हें अंग्रेजी सरकार ने वेदों के भाष्य का कार्यभार देकर आयोग इनके निरीक्षण में गठित किया. देखिये-

एंगलो भाषा में

(हिंदी अनुवाद इसके नीचे)
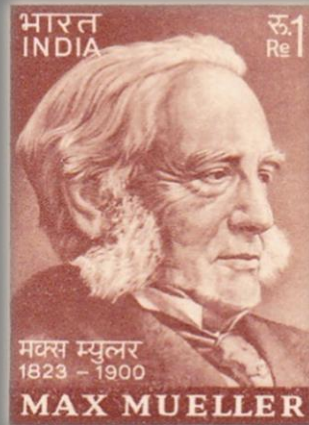
Muller wrote on 16th December 1868:

"The ancient religion of India is totally doomed and if Christianity doesn't step in whose fault will it be?"

Müller 1869: XI,

In a letter addressed to his wife in 1868, muller wrote:

> *“I hope I shall finish that work and feel convinced that though I shall not live to see it, yet this edition of mine and translation of Vedas will hereafter tell to a great extent on the fate of India and on the growth of millions of the souls in this country”*

In the same letter he further observed:

> *‘[The Veda] is the root of their religion and to show them what the root is. I feel sure, [is] the only way of uprooting all that has been sprung from it during the last three thousand years’*[22]

Müller, Georgina (1902). *The Life and Letters of Right Honourable Friedrich Max Müller*. Vol. 1. London: Longman.

(हिन्दी अनुवाद)

मुलर ने १६ दिसंबर १८६८ को लिखा:

> "*भारत का प्राचीन धर्म पूरी तरह से नष्ट हो गया है और यदि ईसाई धर्म इसमें हस्तक्षेप नहीं करता है तो यह किसकी गलती होगी?*"

‘मुलर' १८६९: XI,
इंट्रोडकशन टू दी साइंस ऑफ़ रिलीजियन

१८६८ में अपनी पत्नी को संबोधित एक पत्र में मुलर ने लिखा:

> "*मुझे उम्मीद है कि मैं वह काम पूरा कर लूंगा और आश्वस्त हो जाऊंगा कि यद्यपि मैं इसे देखने के लिए भले जीवित नहीं रहूंगा, फिर भी मेरा यह संस्करण और वेदों का अनुवाद इसके बाद भारत के भाग्य और इस*

देश के लाखों लोगों के आत्माओं के विकास के बारे में काफी हद तक बताएगा "

उसी पत्र में उन्होंने आगे कहा:

"[वेद] उनके धर्म का मूल है और उन्हें यह दिखाने के लिए कि मूल क्या है। मुझे यकीन है, पिछले तीन हजार वर्षों के दौरान इसमें से जो कुछ भी निकला है, उसे उखाड़ने का एकमात्र तरीका [है] "

म्युलर, जोर्जीना (१९०२) '***द लाइफ एंड लेटर्स ऑफ़ राईट ऑनरेबल फ्रेड्रिक मैक्स म्युलर. वॉल्यूम. १.'***
लन्दन: लोंग्मन

अक्सर लोग कहा करते हैं "गढ़े-मुर्दे क्यूँ उखाड़ते हों?" यह प्रश्न उन महापुरुषों से पूछना चाहिए जिन्होंने धर्म के लिए अपनी पीढ़ियों की पीढियां वीरगति को प्राप्त करवा दीं, जिन्होंने संघर्ष का प्रण अपने बच्चो से मरणावस्था में लिया, अब जिन्हें तर्पण करने वाला भी कोई नहीं बचा, जिन्होंने पूरी आयु संघर्ष कर अपनी बलि का दान किया, अपनी संस्कृति, और अपनी पहचान बचाने हेतु अपने सर कटवा दिए, अपने 4-4 वर्ष के बच्चों*, परिवारों को भी बलिदान किया, जो पिछले २००० वर्षों से अपने **'शीर्ष* बौधिक वर्ग', मौनी-समाज और मलाई-चाट समाज** की गलत नीतियों का फल और विदेशियों द्वारा पद्दलित हुए है, एवं वह संस्कृति जिसके लिए उन्होंने प्राण न्योछावर किये, आज स्वतंत्रता के बाद उसी संस्कृति के प्राण ICU की सी स्थिति में पड़े हैं.

कारण?

एक सरल सिद्धांत है- जहाँ दुष्ट अधिक मात्र में होंगे वहां सज्जन पुरुषों को दुःख मिलेगा ही. इसलिए सज्जन पुरुषों को आवश्यक है शिक्षा का प्रसार करता रहे, सत्य भाषण करे, जिससे जिस समाज में वह रहता है उसे वह सही रास्ता दे, क्यूंकि वह इसी समाज का भाग है: भले वह राजनीति करे न करे, उससे दुर रहने का निर्णय अवश्य ले सकता हैं पर वर्तमान में स्थित राजनीति के

प्रभावों से नहीं बच सकता क्यूंकि जहाँ मत और स्वतंत्रता है वहां राजनीति अवश्य है यह प्लेटो का भी सिद्धांत है.

जब व्यक्ति संसार को अपना न मानकर 'मेरा कुटुंब', 'मेरा परिवार', 'मेरा पुत्र' की मानसिकता में आ जाता है. तब वह उस मौनी-समाज का भाग बन जाता है. जिसमे वह सत्य और धर्म के मूल को भूल अपने और अपनों के हितार्थ ही पुरुषार्थ और अर्थ-व्यय करना उचित समझता है. इससे विकृति और बढती है. इन्ही मौनी-समाजियों में से उन मलाई चाट जाति का जन्म होता है, जो पहले यह मौनी अपने हितार्थ कर्म किया करते थे, अब उनकी यह उत्तरपीढ अपने हित-स्वार्थ दूसरों को कष्ट देने को भी उद्यत रहते है. जिस प्रकार अत्याचार करने वाले से अधिक दोषी सहने वाला माना जाता है उसी प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से अत्याचारी समाज का निर्माण करने वाला यह मौनी समाज ही सर्वाधिक दोषी है.

पर समझाए किसे?

उस समाज को जिस समाज में हर व्यक्ति गाँधीवादी है. गांधीवाद का मतलब यहाँ गांधी के समर्थक से न लें. यहाँ पृथक ही अर्थ मै लेता हूँ. गांधी को मरे भले ७५ वर्ष हो गए हों. पर हिन्दू समाज के मन-आत्मा और व्यवहार में गांधी बहुत अन्दर तक आज भी जीवित है, संभवतः आपके अन्दर भी हो? इसका अर्थ? बिना ज्ञान के नेता बनना और उस ज्ञान को अध्यात्म का चोला पहनाना, संक्षेप में ज्ञान का पाखण्ड करना. गांधी के वक्तव्य देखें तो अवश्य समझ जायेंगे बात क्या है. (नोआखली लेख देख लेवें)

हिन्दू समाज में सौभाग्य से सभी चतुर ही जन्म लेते हैं, जिसके कारण इस समाज में हर क्षेत्र में बटवारा होने का दुर्भाग्य है. पहले सारा संसार बंधू था, फिर जात अपनी बंधू मानी, इसके पश्चात अपने पिता का परिवार अर्थात अपने भाई-बहन अपना परिवार माना जिसे संयुक्त परिवार कहा जात था और अब तो

आधुनिक काल में अपने सगे भाई भी शत्रुवत व्यवहार किया करते हैं, सो परिवार अब और छोटा एकल-परिवार आज का सत्य बन गया है.

मस्लोव का graph पहले भाग में देखकर ढूंढें मनुष्य की महत्वपूर्ण आवश्यकता प्रेम और अपनापण अवश्य है, पर केवल विचार-मतों से अप्रत्यक्ष रूप से कितने निर्दोष प्राणों के मूल्य पर?

यह हिन्दू समाज जागृत होता तो अपने शारीरिक और बौधिक योद्धाओं की सहायता करता. बहुत से जो मुग़लों-अंग्रेजों के समय समर्थ नहीं थे पर अब है वे भी पैसे कमाने संसार की चकाचौंध में सब बलिदान भूल गए.

अपने समाज की कटु समीक्षा

1. बिना ढक्कन का बर्तन जिसमे कभी मिर्च, कभी धनिया, कभी ज़हर कभी मांस और मीन भी इसमें डाल दिया जाता है वह हिन्दू समाज.
2. जो ‘मै’, ‘मेरा परिवार’, ‘मेरे बच्चे डॉक्टर इंजीनियर बन जाए’ यही जिनके जीवन का एकमेव लक्ष्य है, वह यह हिन्दू समाज है.
3. जो नीच जाति के उत्तम व्यक्ति को मद्य मीन धुम्रपान करने वाले ऊँची जात वाले से जन्म-आधार पर नीचा माने वह हिन्दू समाज.
4. जो एकमेव अपने गुटबाजी-समूह और दिखावे में जीये, जो न विश्वमानव है और न जिसमे विश्वकल्याण की प्रत्युत अपने कुटुंब में भी जिसके स्वार्थ-रंजिश हो वो यह हिन्दू समाज
5. जो गाय को अपना अराध्य तो अवश्य मानता है पर अपनी और दुश्मन की गौवों में भी जो भेद कर जाए वह यह हिन्दू समाज
6. जिनकी महिलाओं में संघर्ष से डरने वाली हों, और जिसके कारण आप को ही विधर्मी मार दे वह यह डरपोक हिन्दू समाज. (रिंकू शर्मा, मंगोलपुरी)
7. जो अपने स्वजनों के मलेच्छो द्वारा मारे जाने पर मुआवजा लेकर संतुष्ट होने वाला वो यह हिन्दू समाज. (रिंकू शर्मा, मंगोलपुरी)

8. जो अपने सौ रुपए के लालच के लिए रोहिंग्या मुसलमान को अपने घर में बाई रखे, जो पोछे की बाल्टी में पेशाब करके पोछा लगाये वह यह हिन्दू समाज. (सबीना खातून, ग्रेटर नोएडा, अजनारा सोसाइटी)
9. बचाव करने को कहे तो 'हम कानून हाथ में थोड़ी लेंगे?' कहने वाले अपने प्रमाद से विवश निरुत्साही यह हिन्दू समाज तब ही समझता है जब इसके घर में आफत गिरती है

तेलंगाना: शादाब ने हैदराबाद के एक अस्पताल में लड़की से दो बार बलात्कार किया, भागने में सफल होने के बाद गिरफ्तार

OpIndia POLITICS OPINIONS FACT-CHECK MEDIA VARIETY SPECIALS MORE... SUPPORT US हिन्दी में ગુજરાતીમાં

Home › News Reports › Telangana: Shadab rapes girl twice at a hospital in Hyderabad, arrested after he manages... Updated: 18 September, 2023

Crime | Editor's picks | News Reports

Telangana: Shadab rapes girl twice at a hospital in Hyderabad, arrested after he manages to escape

सौजन्य: '**ओपिन्डिया**'

क्या इसके बाद भी कोई कहेगा 'हम कानून हाथ में थोड़ी लेंगे?' जो समाज अपनी लड़कियों के सम्मान से समझौता कर लेता है वह पौरुषहीन समाज की बहुत बुरी दुर्गति होती है (आगे ऐतिहासिक भूलों में '**नोआखली**' देख लेंवें) पर ये बताये भी तो किसे? अपने ज्ञान को कम मानने वाला ही सीखता है पर जिस समाज में हर व्यक्ति ही प्रत्यक्ष सर्वज्ञ ब्रह्मा हो तो क्या संगठन हो. दुर्घटना घर देखकर नहीं आती.

"हिन्दुओं का यह बुद्धिजीवी बनने का व्यवहार और हर क्षेत्र में राजनीति घुसाना ही हिन्दुओं के मर्दन का सबसे बड़ा कारण है. सामान्य हिन्दू, नेता पहले है हिन्दू बाद में, इनके पंडालों में कोई अली मौला करता है तो भी मौन हैं और कोई इनकी बेटी को उठा ले जाए और उसके साथ दुराचार करे तो पौरुषहीन समाज कानून के भरोसे बैठ जाता है जो भी इनका नहीं, उन्ही

विधर्मियों का साथ देता है. पहले हिन्दुओं के 10-12 बच्चे होते थे, एक भाई मर जाए या जेल चला जाए तो बाकी बुआ-भाई उसके घर की देख-रेख कर दिया करते थे, पर हिन्दुओं ने स्वयं अपना, अपने माता-पिता और अपने खून से द्रोह किया है. उसपर भी इनकी सारी नेतागिरी मलेच्छों के गठित समूह के सामने फीकी पड जाती है. वो सोचते हैं योगी जी, मोदी जी उन्हें समय आने पर बचा लेंगे पर इस प्रकार जब एक विशेष समुदाय बिना अपने नेताओं के अपने धर्म का प्रचार बढ़-चढ़कर बहुत योजानाबद्ध तरीके से कर रहा है और जिनका लक्ष्य ही धर्म के लिए मरकर जन्नत पाना है, इससे उलट दूसरी तरफ एक पौरुषहीन समाज जो अपने स्वजनों के लिए ही जीता है और उन्ही स्वजनों की रक्षा के लिए और जब कोई हत्या कर दे तो कानून और नेताओं के भरोसे बैठ जाता है. जिस समाज की लड़कियाँ लवजिहाद प्रतिदिन इतना प्रचार होने के बाद भी फंस जाती हैं. और कोई यह न सोचे की यह रोग शहरों का है, हिन्दुओं के पारम्परिक गाँव के संयुक्त परिवार भी अब इस रोग से ग्रस्त हैं. हिन्दुओं का इस असंगठित प्रकार से जीना इस जाति को एक दिन बहुत भयंकर धोखा देगा जिसका प्रतिकार करने का सामर्थ्य भारत की सेना के पास भी नहीं होगा. ”

(अज्ञात स्वामी)

10.जिनकी जाति शोशेबाजी धर्म से भी बड़ी हो जाए वह हिन्दू समाज.

यह हिन्दू समाज को इसलिए ही सबसे शिथिल प्राणी कहा जाता है. अप्रत्यक्ष रूप से जब गांधी ने हिन्दूओं को बकरा और मुसलमान को बैल कहा तो इसमें कुछ सत्यता भी दीखती है, वे हर समय आपके और हिन्दू समाज के खात्मे में प्रयासरत्त रहते है. नेता उनकी आगे से सहायता करते हैं. वे हिन्दू समाज की तरह नेताओं के भरोसे नहीं बैठते, संगठित होते हैं तो स्वयं नेता उनके ढोक लगाने जाते हैं. संगठन ही शक्ति है. इसका तो कोई विकल्प ही नहीं है.

आगे इतिहास में हिन्दुओं की भूलें भी देखें. धर्मनिरपेक्षता का विरोध केवल राजनैतिक जुमले देना नहीं होता, प्रत्युत सर्व प्रकार से इस मलेच्छ समूह का आर्थिक बहिष्कार और त्याग होता है.

बहिर्विवाह का उदाहरण और उसके राजनैतिक लाभ

प्राचीन यूनान

प्राचीन यूनान में नगर जितनी सीमा के राज्य हुआ करते थे. इनमे परस्पर बहुत संघर्ष भी होता था. पर जब बड़ा राज्य पारस इनमे से किसी भी राज्य हमला करता तो ये संगठित हो जाया करते थे. उसका कारण था की सभी नगर-राज्य एक-दूसरे के साथ विवाह संबंध बनाते थे. इस परस्पर एकता का कारण अक्सर अलग-अलग नगर-राज्यों के दो व्यक्तियों के बीच विवाह का होना था। इससे दोनों समुदायों के बीच मजबूत राजनीतिक संबंध बनाने में मदद मिलती थी और यह सुनिश्चित होता था कि वे जरूरत के समय समर्थन के लिए एक-दूसरे पर भरोसा कर सकें

Exogamy - The Practice of Marrying Outside of One's Social Group (anthropologyreview.org)

एक कथा आती है की- शाहजहां का दरबार लगा हुआ था। बादशाह के दाहिनी ओर वजीर दिलावर खां की गद्दी थी और बाईं ओर सलाबत खां (प्रधान सेनापति) की गद्दी थी। महाराजा अमरसिंह ने दरबार में आकर बादशाह को तो सलाम किया और किसी को नहीं। इससे प्रधान सेनापति बहुत बिगड़ा। उस ने अमरसिंह को सात दिन बाहर रहने के कारण सात लाख जुर्माना कर दिया। वजीर के सान्त्वना देने पर भी सेनापति का क्रोध बढ़ता ही गया और वह

महाराजा अमरसिंह को काफिर कह बैठा। यह शब्द सुनते ही अमरसिंह ने एक ही हाथ से सेनापति का सिर काट दिया। जो मुसलमान दरबारी अमरसिंह को पकड़ने के लिए बढ़े, उस ने सब को तलवार के घाट उतार दिया। शाहजहाँ अमरसिंह की वीरता से बहुत प्रभावित हुआ। बादशाह ने कहा कि जो अमरसिंह को वापस लाएगा उसे एक लाख रुपये पुरस्कार के रूप में दिये जाएंगे।

इसी बीच शाहजहां ने अपने मन्त्री से पूछा, "जब हिन्दू राजा इतने वीर होते हैं तो उन का हिन्दू राज्य कैसे चला गया?" मन्त्री ने कहा, "इस का उत्तर आप को शीघ्र मिल जाएगा।" यह बात सुनकर उस का सगा साला अर्जुनसिंह बाहर गया और समझा कर चाचा अमरसिंह को साथ ले आया। किले का बड़ा फाटक बन्द था। इसलिए दोनों को खिड़की से आना था। पहले अर्जुनसिंह अन्दर आ गया और जैसे ही अमरसिंह ने खिड़की में होकर अपना सिर अन्दर किया वैसे ही अर्जुन ने तलवार से उसका सिर काट दिया। कटे हुए सिर को देखकर बादशाह अर्जुनसिंह पर बहुत नाराज हुआ। उसने कहा कि तू बहुत नालायक है। मैंने उसे मारने को कब कहा था? मैंने तो उसे बुला लाने को कहा था। मैं उसे सलाबत खां के स्थान पर प्रधान सेनापति बनाता। बादशाह ने उस को गधे पर सवार करके नगर में घुमाने का दण्ड दिया। मन्त्री ने बादशाह से कहा-" आप ने देख लिया। इन्हीं विश्वासघाती जातिद्रोहियों के कारण हिन्दुओं का राज्य जाता रहा ।'

-आर्य हिन्दू जाति के पतन के कारण प्रो. रामविचार

यह सजातीय विवाह से संभवतः सच में इस हिन्दू समाज के मस्तिष्क पर असर हुआ होगा, तभी एसा निक्कमा हुआ की अपने पराये का फर्क भूल इतना स्वार्थी हुआ। यह केवल इसी समाज में पाया जाता है। मुसलमान भी अपने भाइयों में अवश्य लड़ जाते हैं पर इस्लाम को नहीं जाने देते, यहाँ हिन्दू ही हिन्दू से लड़ने के लिए मुसलमान का साथी हो जाते हैं, सबसे अधिक आज्ञाकारी बन जाते हैं.

एक वारी सोचिये जब महमूद घोरी ने जयचंद की सहायता से पृथ्वीराज चौहान पार आक्रमण किया. उस समय जयचंद के मन में तो चौहानों के राज्य मिलेगा रहा होगा, पर घोरी के मन में शुद्ध रूप से इस्लाम का प्रचार था.

अपने स्वार्थ के लिए धर्म त्यागने वाले समाज की रक्षा ईश्वर भी क्यूँ करे? सोमनाथ मंदिर के इतिहास से पूछिए ईश्वर की रक्षा के विषय में.
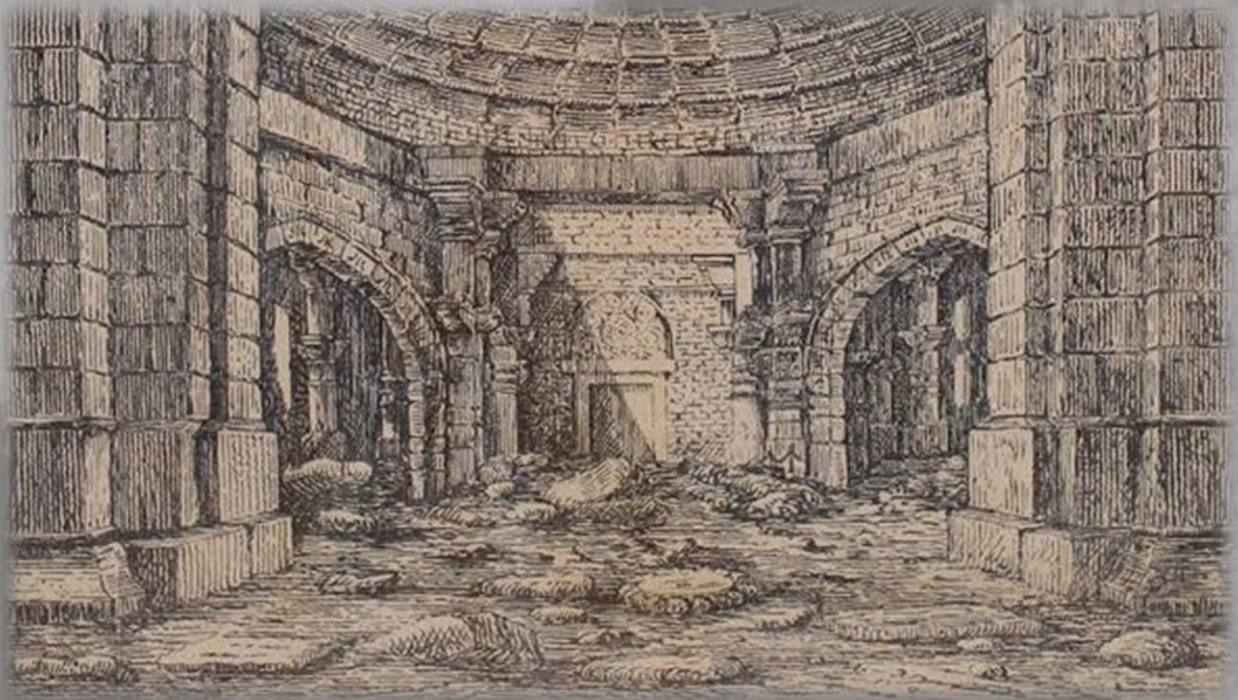
सोमनाथ के नष्ट भवन(चित्र)

अस्तु, इस विषय का उपसंहार करते हैं-

जाति पूर्णतया राजनैतिक है एवं बद्ध-समूह का यह सजातीय विवाह की परंपरा सामाज की मानसिक क्षमता की विभ्रमता, और उसके सामाजिक एकता के स्खलन का सबसे उत्तम उदाहरण है।

प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लाटो कहता है “आप राजनीति में दिलचस्पी नहीं लेने का विकल्प चुन सकते हैं, लेकिन आप इससे अप्रभावित रहने का विकल्प नहीं चुन सकते” जिनके परस्पर रिश्ते–सम्बन्ध ही नहीं रहे वे तो असंवेदनशील-उदासीन होकर स्वतः ही खंड खंड बट गए, इसका फायदा बड़ा समूह उठता है. पर जब अंतरसमूह में विवाह होता है तो भावनाएं संवेदनाएं जुडती है समाज में

एकता आती है. विवाह केवल संतानप्राप्ति हेतु बीजारोपण नहीं होता इसके प्रभाव इससे बहुत अधिक दूरगामी होते हैं,

पूर्व में राजा इसे राजनैतिक हितों के लिए प्रयोग किया करते थे, और दूरस्थ विवाह करने की परंपरा भी थी, निरुक्तकार स्त्रियों के लिए 'दुहिता' प्रयोग करता है अर्थात 'दूर को रहने वाली'. विवाह कोई सामान्य बात नहीं है. आत्मा का शरीर उसका साथी है और कर्म जिसके बिना वह कोई कर्म नहीं कर सकता. इस आत्म-गृह को बनाने वाला यह विवाह, धर्म का बहुत महत्वपूर्ण स्तम्भ है.

विवाह की इस महत्ता को न समझने के कारण परिणाम यह हुआ की हिन्दू समाज खंड-खंड बटा, एकता स्थापित कभी हो ही नहीं पायी जिससे राष्ट्र विदेशियों का घुलाम हुआ, किन विदेशियों का जिन्हें ये मलेच्छ कहता था अपने से नीचा मानता था और जो अंतर्समुह ही नहीं दुसरे धर्मो की स्तियों में जात नहीं ढूंढते थे, सबमे विवाह किया करते थे इसे नीच मलेच्छों से ये उत्तम कुल के हार गए. अपनी ऐतिहासिक भारी नीतिगत भूलो को सुधार करने की इस समाज को अत्यंत आवश्यकता है.

यूनान, मिस्र, रोमा आर्य संस्कृति के ही साथी आर्य संस्कृति से पहले मिट गए क्यूंकि वहां आर्य सिद्धांतो का अभाव हुआ था और वे अपने सामाजिक व्यवहार और सिद्धांतो के प्रचार में शिथिल,

ईश्वर जाने, आज यह समाज भी संभवतः उसी ओरे को है.....

अंत में लुइस जैकालिओट का भारत विवरण अगले पृष्ठ पर

THE

BIBLE IN INDIA

M. LOUIS JACOLLIOT.

Soil of Ancient India, cradle of humanity, hail! Hail, venerable and efficient nurse whom centuries of brutal invasions have not yet buried under the dust of oblivion! hail, father land of faith, of love, of poetry and of science! May we hail a revival of thy past in our Western future!

Pg.10

'To live is to be useful, to live is to be just, and we learn to be useful and just in studying this book of the Vedas,

which is the word of eternal wisdom, the principle of principles as revealed to our fathers.'

I have heard the songs of poets—and love, beauty, perfumes and flowers, they too have afforded their divine instruction.

Pg.11

अनुवाद:

"प्राचीन भारत की मिट्टी, मानवता के उद्गम स्थल की जय हो! जय हो, आदरणीय और कुशल रक्षक जिसे सदियों के क्रूर आक्रमणों ने अभी तक विस्मृति की धूल के नीचे दफन नहीं हुआ! जय हो, आस्था, प्रेम, कविता और विज्ञान की जन्मभूमि! ***ईश्वर करे, हम अपने पश्चिमी भविष्य में आपके अतीत की कीर्ति का पुनरुद्धार करें!'*** (Pg.10)

"जीने का अर्थ उपयोगी होना है, जीने का अर्थ न्यायपूर्ण होना है, और वेदों की इस पुस्तक का अध्ययन करके हम उपयोगी और न्यायपूर्ण होना सीखते हैं,

जो शाश्वत ज्ञान का शब्द है, सिद्धांतों का सिद्धांत है जैसा हमारे पूर्वजों को बताया गया था।"

"मैंने कवियों के गीत सुने हैं-और प्रेम, सौन्दर्य, इत्र और फूल, उन्होंने भी अपना दिव्य उपदेश का श्रय इन्ही वेदों को दिया है।"(Pg.11)

(अंत)

इतिसमाजतृतीयविषयांत

****

शंका-समाधान

इस खंड में मेरी त्रुटियाँ और आपकी शंका समाधान का प्रयास है-

प्रेम प्रकरण में

1. प्रेम प्रसंग में आपस में ही बात कर लेना और न बताना.

व्यक्तिगत जीवन में

1. शिक्षा में त्रुटी होना
2. शिक्षा में अधिक समय के कारण रोजगार का न होना
3. अपने कार्य में त्रुटियाँ करना
4. गृह कार्य न करना

सामान्य कुछ शंकाएं

प्रश्न: इन लोगो का मूल क्या है? कुल क्या है? हमें तो अब पता चल रहा है. यह है कौन? कहाँ मिले?

उत्तर: जैसा पूर्व विदित है की वैष्णव हैं, मुझे भले सद्यस्क(online) मिली पर गुण कर्म स्वभाव का ज्ञान आत्मा को स्वभाव से हुआ करता है, जिसमे उचित अनुचित बातों को जानना समझने में वेद और शास्त्र पढ़कर मेरा मस्तिष्क अच्छा भी है. उसके पिता पहले सरकारी सर्वयानप्राजक (बस चालक) थे अब शायद सरकारी क्लर्क हैं, संपन्न हैं, पर थोड़े जिद्दी स्वभाव के है, उनके पुरे ग्राम में जाति कुछ मध्यम स्तर तक जड़ो में है, विचार करके बात करना पड़ेगा, अस्तु उसमे आप कुशल है और वो आप कर लेंगे.

वहां पर जल्दी विवाह करने का रिवाज है - जिस लिए शीघ्र यह पत्र लिखना आवश्यक हुआ. वह कुछ मध्यम कट्टर जाति का ग्राम है, दक्षिणी देल्ही अंग्रेजो की बनायीं है वहां पाश्चात्य संस्कृति के समर्थक हैं, इनका ग्राम उत्तरी ओर को है जहाँ पूर्ण उलट व्यवहार है. वहां की स्थानीय संस्कृति पितृसत्तात्मक है. मुख्य बिंदु यह है की उसके पिता वर ढूंढ रहे हैं, इसका अर्थ है त्वरित कार्यवाही करना आवश्यक है.

प्रश्न: *विवाह करने से पहले क्या विवाह के मायने भी आपको पता है या नही?*

उत्तर: हां, मुझे पता है, शास्त्र में प्रजा उत्पत्ति यह विषय विस्तृत है. सो उसी में मायने भी आ जाते हैं, उत्तम प्रजा संगठित होकर समाज से दुष्ट स्वभाव को नष्ट करते हैं, प्रजनन क्रिया पशु भी करते है, अतः केवल मनुष्य ही कल्याण करने का सामर्थ्य रखता है.

प्रश्न: *यह तुमने अपने हित के लिए शास्त्रों का सहारा लिया है*

उत्तर: समाज अगर स्वयं सत्य विद्या पाता तो मुझे यह सब कोई नयी बात नहीं थी न मुझे यह सब सिखाने बताने की आवश्यकता? मेरे घर की कथा तो मैंने सुनाई नहीं है. शास्त्रों की दृष्टि से यह उचित है, इतिहास ग्रंथों रामायण महाभारत में इसे स्वीकार किया है, विज्ञानिक रूप से हर मनुष्य के वन्शाणुओं की संहिता (DNA) में ०.१% का अंतर है अतिरिक्त ९९.९ प्रतिशत सब मनुष्य की ही है. इसका फर्क जानना हो तो एक हाथ में 1 किलो वजन दुसरे में कलम का ढक्कन रखिये, अगर dna का पूर्ण भाग वह 1 किलो माने तो उसका ०.१ प्रतिशत अर्थात १००० ग्राम का ०.१ प्रतिशत = 1ग्राम = कलम के ढक्कन या मिर्च के बराबर ही रहा करता है. उस एक किलो में से केवल कलम के ढक्कन जितना भाग का परिवर्तन हुआ करता है. दूसरा सामाजिक पक्ष, समाज टूटा ही समूहों की आपस की उदासीनता और असहानुभुती के कारण है. एक मान्यता / धर्म के लोग जो आपस में खंड खंड है वे उस मान्यता के लिए संघर्ष कर भी नहीं पाते हैं. और इसे खंड खंड क्षेत्र में बने नायक ही अक्सर स्वसत्ता के लिए देश तोडा करते हैं जो पूर्णतया राजनैतिक है. अगर मेरा मंतव्य सिद्ध हो भी रहा हो तो मैंने तो यह लिखकर सत्य ही का प्रकाश किया है जैसे चाहे जांच ले और जो जांचकर भी न माने तो उसका दोष.

प्रश्न: *आप खुदके कपडे नहीं धोते हैं(अपने स्वयं के कार्य नहीं करते), आप किस विश्वास से विवाह के लायक हैं?*

उत्तर: आपने स्वयं मुझे कहा था की मुझमे बहुत परिवर्तन हुआ है, वह इसी कन्या के संस्कारों की संगत के कारण है. लक्ष्य वैसे तो यही था की रोज़गार के पश्चात ही विवाह करना है, वर्तमान में नहीं पर उसके घर वाले आपसे मिलने के पश्चात उस पर क्रूर न हो, उसके लिए उनसे प्रत्यक्ष-ही-प्रत्यक्ष उनकी भावना पुछवा लेना उचित है. आपसे अनुरोध यह है की उसके पिता से वार्ता कर राजी ख़ुशी हाँ हो तो हाँ करा दें, उनकी इच्छा न हो तो उनसे ही उनकी

आत्मजा(बेटी) से पुछ्वाके की वह क्या चाहती है, पश्चात उससे खुदसे स्वम आप पूछकर हाँ करे तो स्वयं ही उसे घर को ले आये और हम दोनों का विवाह करवा दें.

प्रश्न: मगर तुम्हारा तो कोई रोज़गार भी नहीं है? किसके भरोसे लायेंगे उसे तुम तो घर बैठोगे?

उत्तर: यह तो आप भी जानते है किसके भरोसे लाऊँगा, आपसे ही करबद्ध प्रार्थना है, अंत में आप ही मेरे पिता, यह लिखने का मेरा अभिप्राय आपको अपना सेवक कर, अपना फायदे के लिए अच्छा कहकर काम करवाना नहीं है अपितु अभी भी आपका सम्मान करता हूँ, आपका ही पुत्र हूँ और आपसे सहायता की भिक्षा चाहता हूँ ,प्रत्युत असहाय अवश्य महसूस करता हु, पर मेरा सत्यकाम है कोई अधर्म मैंने नहीं किया है, इश्वर ने दो हाथ एक दिमाग दिया है वह किसी कार्य के लिए ही तो दिया है कोई बात नहीं अगर मेरा काम होगा या न हो, क्या पता घर वाले न माने? क्या पता घर से ही विस्थापित होना पड़े. इस सब में जो जैसा होगा मै इश्वर की शक्ति लेकर सब सहने को भी तैयार हूँ पर अब पीछे जाने का मेरा उद्देश्य नही है, वर्तमान में अपने पक्ष पर अतिदृढ़ हूँ.

रही रोज़गार की बात तो मुझे संस्कृत में ही प्रोफेसोस्र बनना है, यही अंतिम है. इसमें अर्थ शीघ्र तो वैसे भी नहीं आता तो कुछ लोग मास्टर कोर्स करके रोज़गार करने लगते हैं बाद मे उसे छोड़कर फिर अपनी PhD पूर्ण करते है. जब रोज़गार छोड़कर लोग पढाई कर सकते हैं, तो इतनी काबिलियत तो मुझमे भी है की बहुत अच्छा काम न मिले तो भी कुछ न कुछ तो जिम्मेदारी से कर ही लूँगा. पर उससे अच्छा पढना है, जिम्मेदारी से औपचारिक व्यवहार की तरह पढ़ूंगा और प्रथम में PhD कर प्रोफेसर बन जाऊँगा

इस प्रोफेसर के कार्य की लाइन में प्रथम में रोज़गार मास्टर्स के बाद दो प्रकार से मिल सकता है पहला JRF(Junior Research Fellowship) की स्कालरशिप और दूसरा, असिस्टंट प्रोफेसर

1. NET(National Eligibility Test) में अच्छी रैंक लाने वालों को JRF की स्कालरशिप मिलती है
2. सरकार ने 1 जुलाई 2023 से PSC(Public Service Commission) में नए प्रावधान किये जिससे मास्टर डिग्री के बाद ही असिस्टंट प्रोफेसर की परीक्षा देकर नौकरी लग सकती है.

ये दो रोजगार के अवसर सबसे जल्दी मिल जाते है. दोनों अच्छे है पर मास्टर डिग्री के बाद ही स्वरुप में आयेगे जिसमे 4 वर्ष लगेंगे

और तब भी कोई कहे तुममे कोई योग्यता नहीं तो इतना विषय पढना ढूँढना भी क्या सामान्य बात है? काम तो अभी भी प्रोफेसर का, अनुसंधान ही किया. इसमें भी मुझे रिसर्च तो करना ही पड़ा कुछ प्रतिभा तो होगी ही? मुझमे धैर्य है या नहीं, मै विवाह के योग्य हु या नहीं, आप स्वयं अपने विवेक से सोचें और अनुकूल प्रतीत हो तो कृपया मेरी सहायता करें. द्वेष भाव त्यागकर सबको प्रिय होने वाला काम करे.

धर्म की परिभाषा और सत्य का विवेचन

-अन्वेषक
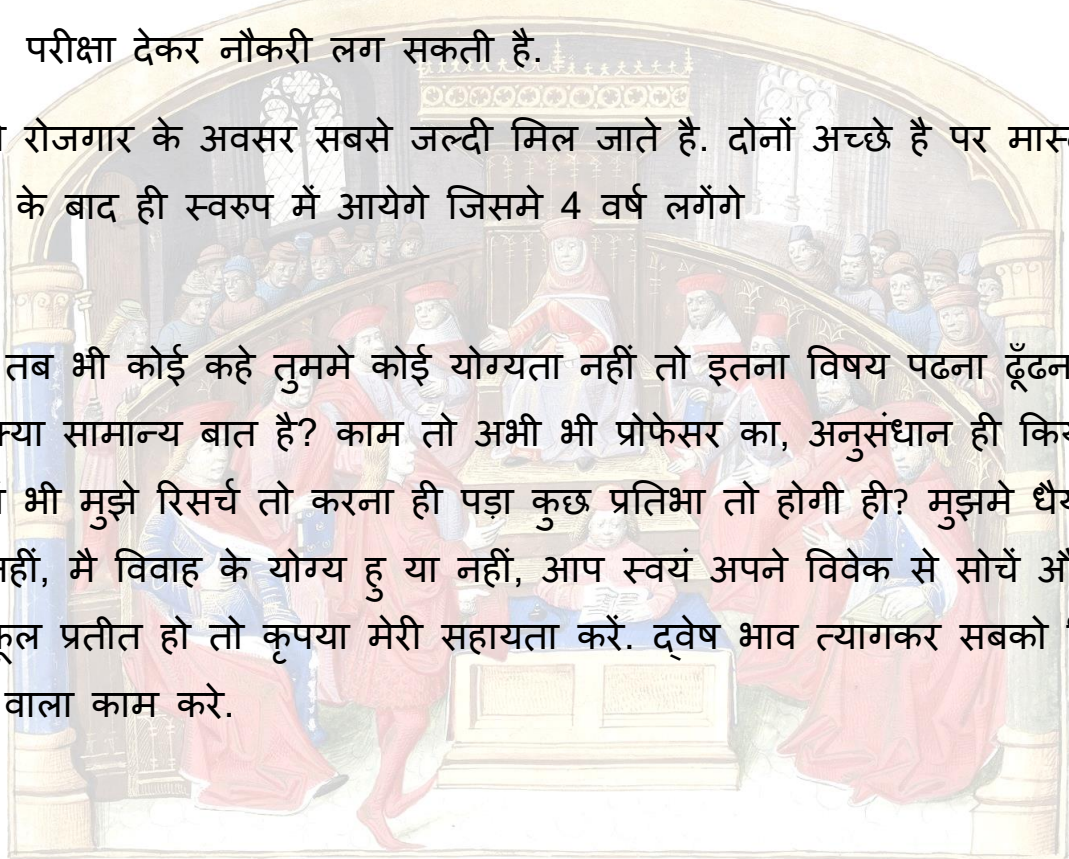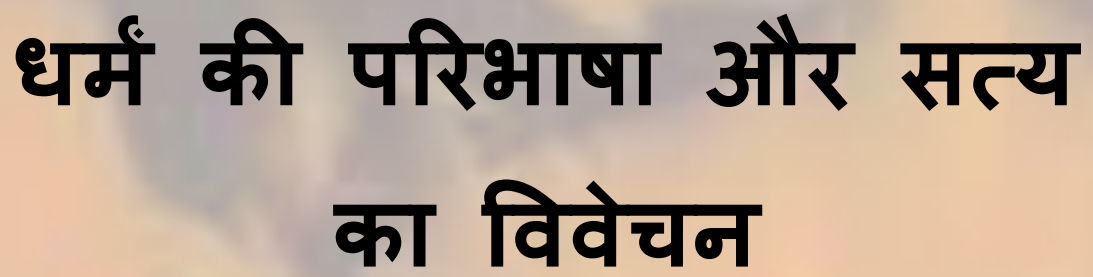
धर्म की परिभाषा और सत्य का विवेचन

धृति: क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह:।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

(मनुस्मृति ६.९२)

धैर्य , क्षमा (अपना अपकार करने वाले का भी उपकार करना), दम (हमेशा संयम से धर्म में लगे रहना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (भीतर और बाहर की पवित्रता), इन्द्रिय निग्रह (इन्द्रियों को हमेशा धर्माचरण में लगाना), धी (सत्कर्मों से बुद्धि को बढ़ाना), विद्या (यथार्थ ज्ञान लेना). सत्यम (हमेशा सत्य का आचरण करना) और अक्रोध (क्रोध को छोड़कर हमेशा शांत रहना)। यही धर्म के दस लक्षण है।

य: स्यात् प्रभवसंयुक्त: स धर्म इति निश्चय:।

(महाभारत शांतिपर्व १०९.१०)

जिसमें कल्याण करने का सामर्थ्य है वही धर्म है

नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति।

(महाभारत उद्योगपर्व ३५.५८)

जिसमें सत्य नहीं वह धर्म, धर्म ही नहीं है।

आरम्भो न्याययुक्तो य: स हि धर्म इति स्मृत:।

(महाभारत वनपर्व २०७.७७)

जो उपक्रम या योजना न्यायसंगत हो वही धर्म कहा गया है।

बुद्धिसंजननो धर्म आचारश्च सतां सदा ।।

(महाभारत शांतिपर्व १४२.५)

धर्म और सज्जनों का आचार व्यवहार दोनों बुद्धि से ही प्रकट होते हैं।

यतोअभयुद्य निश्रेयस सिद्धि: स धर्म: ।।

(महामुनि कणाद - वैशेषिक दर्शन)

अर्थात जिससे अभ्युदय(लोकोन्नति) और निश्रेयस (मोक्ष) की सिद्धि होती हैं, वह धर्म है

सदाचार: स्मृतिर्वेदास्त्रिविधं धर्मलक्षणम्।

(महाभारत शांतिपर्व २५९.३)

वेद, स्मृति और सदाचार ये तीन धर्म के लक्षण हैं।

उदार मेव विद्वांसो धर्म प्राहुर्मनीषिण:।

(महाभारत वनपर्व ५३.५६)

मनीषी जन उदारता को ही धर्म कहते है।

धारणाद धर्ममित्याहु:,धर्मो धार्यते प्रजा: ।

(महाभारत कर्णपर्व ६९.५८)

अर्थात जो धारण किया जाये और जिससे प्रजाएँ धारण की हुई है। वह धर्म है।

XIV

अंतिम शब्द में आपसे अनुरोध केवल यही है की आप स्वपरिवार में सम्मानजनक धैर्य से और बुद्धिपूर्वक, पक्षपात द्वेष रहित - धर्मं और सत्य का विचार कर शेष इश्वर पर छोड़कर - सभी के आत्माओ को सुख देने वाला हो, वह निर्णय दें।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

(ऋग्वेद - मण्डल » 10; सूक्त » 191; मन्त्र » 2)

मनुष्यों में अलग-अलग दल न होने चाहिए, किन्तु सब मिलकर एक सूत्र में बँधें, मिलकर रहें, इसलिए मिलें कि परस्पर संवाद कर सकें, एक-दूसरे के सुख-दुःख और अभिप्राय को सुन सकें और इसलिए संवाद करें कि मन सब का एक बने-एक ही लक्ष्य बने और एक लक्ष्य इसलिये बनना चाहिये कि जैसे श्रेष्ठ विद्वान् एक मन बनाकर मानव का सच्चा सुख प्राप्त करते रहे, ऐसे तुम भी करते रहो ॥२॥

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. विकिपीडिया
2. भारतवर्ष का इतिहास पं. भग्वद्दत्त रिसर्चस्कॉलर
3. महाभारत स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
4. सांख्यदर्शन, न्याय दर्शन, ब्रह्मसूत्र, योगदर्शन, वैशेषिकदर्शन स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
5. वाल्मीकीय रामायण स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
6. अध्यात्म रामायणम
7. मुन्स्मृति डॉ. सुरेन्द्र कुमार
8. शुक्रनीति
9. चाणक्य नीति
10. संस्कृतविकिस्रोत
11. वायुपुराण
12. स्कंद पुराण
13. महापुराण
14. विष्णुपुराण
15. पद्मपुराण
16. ब्रह्मवैवर्तपुराण
17. देवीभागवतपुराणम्
18. नारदपुराणम्
19. Vedicscriptures.com से वेद
20. Shahnameh by Ferdowsi
21. वज्रसूचिका उपनिषद् (वज्रसूचिका उपनिषद् - TransLiteral Foundation)
22. निरुक्तशास्त्रम पं. भग्वद्दत्त रिसर्चस्कॉलर

23. निरालम्ब उप्निषद

24. बृहदारण्यक उपनिषद्

25. श्वेताश्वतर उपनिषद्

26. भगवद गीता

27. कुलार्णव तंत्र

28. सत्यार्थ प्रकाश

29. नस्लवाद का मनोविज्ञान एक संज्ञानात्मक-ऐतिहासिक दृष्टिकोण

30. Ars Technica | The caste system has left its mark on Indians' genomes, ANNALEE NEWITZ

31. Oxford English Dictionary

32. Pitt-Rivers, Julian (1971), "On the word 'caste

33. "Genetic study suggests caste began to dictate marriage from Gupta reign" | The Indian Express | 16 February 2016 |

34. Kalyan, Ray (27 January 2016) | "Caste originated during Gupta dynasty: Study"

35. "Even with a Harvard pedigree, caste follows 'like a shadow'" | The World from PRX |

36. Nicholas Dirks (2001) | Castes of Mind: Colonialism and the Making of New India

37. गार्डियन आंगल पत्रिका, विविध वंश के माता-पिता के जीन से बच्चे लंबे-चौडे, होशियार होते हैं। प्रकाशित: 2 जुलाई 2015

38. द कंसर्वेशन - अकादमिक रिगौर, जर्नलिस्टिक फ्लेयर प्रकाशित : जुलाई 4, 2013, चचेरे भाई-बहन की शादी से बच्चों में जन्म दोष का खतरा दोगुना हो जाता है

39. कक्षा 11वीं - 12वीं जीव विज्ञान NCERT

40. Why Is Everyone's DNA Different? Let's Know! (onlyzoology.com)

41. Cell size - Cell structure - AQA - GCSE Biology (Single Science) Revision - AQA - BBC Bitesize
42. Shawn Manaher - The Content Authority, Endogamy vs Exogamy: Which One Is The Correct One?
43. Exogamy and endogamy - New World Encyclopedia
44. Endogamy and Exogamy - Types, Benefits, Drawbacks & Examples (testbook.com)
45. Cell size - Cell structure - AQA - GCSE Biology (Single Science) Revision - AQA - BBC Bitesize
46. कुरान
47. Infographics व्हाई एलेग्जेंडर इस थे मोस्ट इम्पोर्टेन्ट परसन इन हिस्ट्री
48. तुघलक समाचार पत्र
49. Opindia, नोआखली
50. Bengal man who witnessed the Direct Action Day remembers the brutality inflicted on Hindu women by Islamists (opindia.com)
51. वेद और वैदिक काल, गुरुदत्त
52. Exogamy - The Practice of Marrying Outside of One's Social Group (anthropologyreview.org)
53. आर्य हिन्दू जाति के पतन के कारण प्रो. रामविचार
54. Legacy of Jihaad, M.A. Khan

“ईश्वर रचित व्यवस्था में अंत सबका होता है और सबके कर्म संचित भी होते हैं. कोई सोचे इस समाज में अपना नाम बना लेवें तो लोग हमको जानेंगे हमें पूछेंगे हमारा सम्मान और यश मिल ही जाए बचा यह किस मध्यम से प्राप्त होगा वह आगे-की-आगे देखी जायेगी तो यह उसे उस व्यक्ति को समझ लेना चाहिए एसा नहीं हुआ करता. कोई इश्वर की व्यवस्था में सोचे की भक्ति से, योग से, चढ़ावे से, या अर्जी लगाकर पाप मुआफ करदिया करेगा? एसा नहीं होता. हर पाप या पुण्य का प्रतिफल अवश्य मिलता है, यह उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर का प्राणीमात्र को दृढ संकल्प है.”

“एक सरल सिद्धांत है- जहाँ दुष्ट अधिक मात्र में होंगे वहां सज्जन पुरुषों को दुःख मिलेगा ही. इसलिए सज्जन पुरुषों को आवश्यक है शिक्षा का प्रसार करता रहे, सत्य भाषण करे, जिससे जिस समाज में वह रहता है उसे वह सही रास्ता दे, क्यूंकि वह इसी समाज का भाग है: भले वह राजनीति करे न करे, उससे दुर रहने का निर्णय अवश्य ले सकता हैं पर वर्तमान में स्थित राजनीति के प्रभावों से नहीं बच सकता क्यूंकि जहाँ मत और स्वतंत्रता है वहां राजनीति अवश्य है यह प्लेटो का भी सिद्धांत है”

धर्म सबके पास है, धार्मिक कौन है ?

अक्षत शर्मा ‘अन्वेषक’